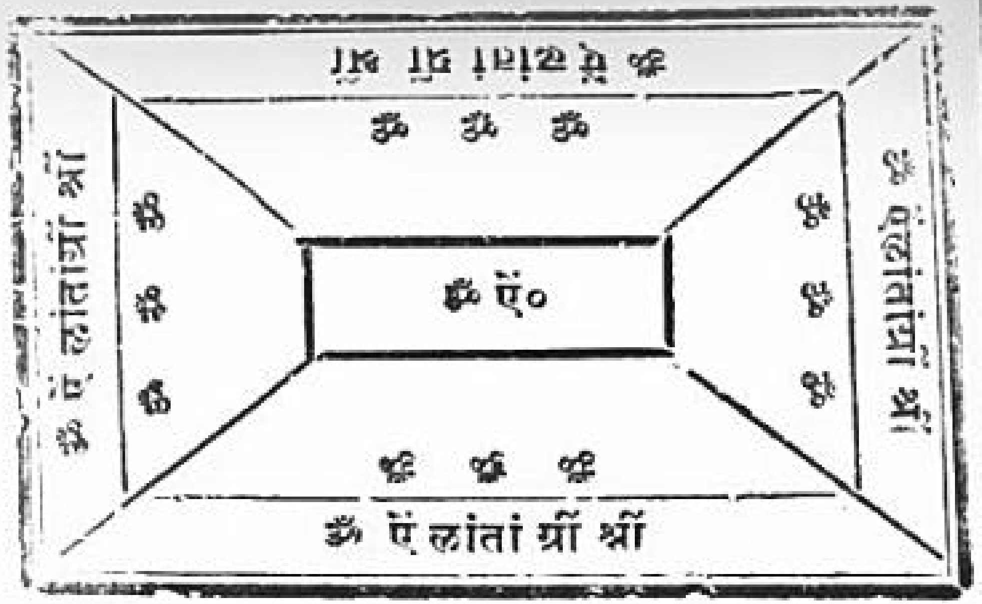
होवे न संदेह। इति नवमश्लोकविधानम् ॥ ९ ॥ मनोहर है रूप जिसका--महास्वरूप ॐकारके कणसे युक्त पार्श्वनाथ तेईसवां तीर्थंकर प्रगट उसको हम भक्तजन सदा ही ध्यान करते हैं। इतनी जगह रक्षा करो--जिह्वाके अग्रभागादिमें सर्व शरीरको सांगोपांग महाआनंदमें शुद्ध अतिशय करके हे मात! रक्षा करो। 'जिह्वाग्रे, इस दशमें श्लोकका नित्य ही ध्यान करे तो ॐकारशब्द निराकाररूप निरंजन पद देवे। इस मंत्रसे झाडा देवे तो सर्व दोष मिटैं। इस मंत्रसे अपनी रक्षा करनी चाहे तो मंत्रपढ कर शिखामें गांठ लगावे--यह मंत्र सदैव पाठ करनेसे शुभगतीको देती है-इति दशमश्लोकविधानम् ॥१०॥हे माता! भक्तजनोंकी रक्षा करो-वीसभुजाधारी दुष्टजनोंको विदीर्ण करो, काहेसे करो, तरवार धनुष कांड मुसल हल अंकुश अग्नि नाराचनामा बाण चक्र बिजली बरछी त्रिशूल बडा बडा गोफिया मुद्गर मुष्टि फांसी पाषाणोंकी वर्षा वृक्ष पर्वत गदा फरसी इन शस्त्रोंसे दुष्टजनोंको विदीर्ण करो-इन अस्त्रोंको धार कर हमारी रक्षा करो। 'खड्गैः' इस ग्यारहवें श्लोकके पठनसे ईश्वरी अनंत भुज धार कर भक्तजनोंके शत्रुओंका नाश करे। इत्येकादशश्लोकविधानम् ॥ ११ ॥ हे माता! चतुरक्षरी मन्त्रसे क्षणमात्रमें शत्रुओंके समूहके विषे हमारी रक्षा करो। हे माता! आप कैसी हो-सावित्री गायत्री कालरात्रि सरस्वती चंडी चामुंडा गांधारी गौरी धृति मति विजया कीर्ति-ह्रींकारसे वंदनीय है चरणारविंद जिसका-हे माता! आप कैसी कैसी जगह रक्षा करो हो-संग्राममें जयकी दाता हो-अग्निमें जलकी दाता हो-दुर्जनके विषे शस्त्ररूप हो-ऐसी हे माता! हमारी रक्षा करो। 'ब्रह्माणी' इस बारहवें श्लोकके



चतुर्मुखयन्त्रम्.

	ह्रीं		श्रीं	
ॐ	१	५	४	पद्र ॐ
रणे	८	६	५	व ह्रीं
निवा	१०	८	६	नी ह्रीं
दोष	६	१०	९	वर ह्रीं
	सर्व		दा	

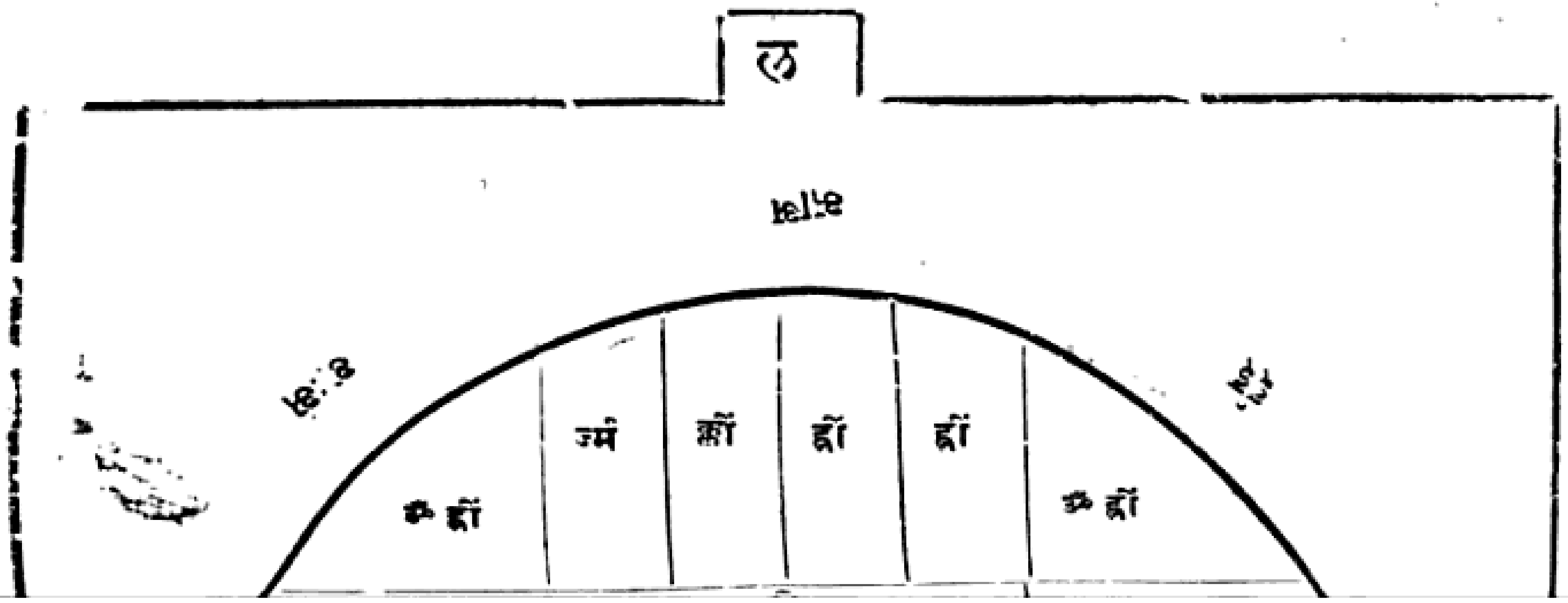
पाठसे अनन्त उपसर्गोंसे रक्षा करे । मन्त्रोद्धारः–ॐ क्षां ॐ क्षीं ॐ क्षूं ॐ क्षः स्वाहा–इस मन्त्रको पढ वैरियोंके समूहमें जावे तो मित्रके समान दीखे–न सन्देह । इति द्वादशश्लोकाविधानम् ॥ १२ ॥ हे लक्ष्मी ! भला भला लक्षणयुक्त सरस्वती ! इस प्रमाण मन्त्रयुक्त हे देवी! गुरुमुखात् मुखसे प्रकाश करो ।'भूविश्वे'इस तेरहवें श्लोकके पठनसे साक्षात् दर्शन होवे । मन्त्रोद्धार–चतुर्मुख यन्त्रको कटिमें बांधे तो भगंदर, प्लीहा, गोला, कठोदर, शोफोदर, जलोदर, वायशूल, सर्वशूल, पक्षाघात, चतुरशीति वातरोग दूर हो–इस श्लोकद्वारा नीमकी छालसे झाडा देवे तो इतना दोष मिटे। जीवमें सुख होवे । अथवा चतुर्मुखयन्त्रको गूगलके रससे भोजपत्रपर अथवा जळभांगराके रससे शिला या पीपलके पत्रऊपर लिख बांधे तो और श्लोकसे झाडा देवे तो सर्पादिविष दूर होवे। इसमें संदेह नहीं । अगर पद्मावती स्थापन यंत्रको दीपमालिकाकी पहिली रात्रिको अष्टगंधसे सुवर्णपत्रपर लिख इसके ऊपर पद्मावतीजीकी स्थापना करे। 'ब्रह्माणी कालरात्रि' इस मन्त्रका रात्रिभर जप करे, सोवे नहीं । पीछे दीपमालिकाकी रात्रिको पूजन कर मन्त्र जपे तो आकाशवाणी हो । पीछे यन्त्रको मस्तक भुजामें धारण करे तो अनेक कार्य सिद्ध हों । 'नान्यथा गुरुमुखात्' । इति त्रयोदशश्लोकविधानम ॥ १३ ॥ हे अंबिका ! हे देवी ! हे पद्मावती ! हे कालिका ! उत्कृष्ट हमारे सुखको प्रगट करो–हमारी रक्षा करो–हे माता ! आप कैसी हो–देवता राजा

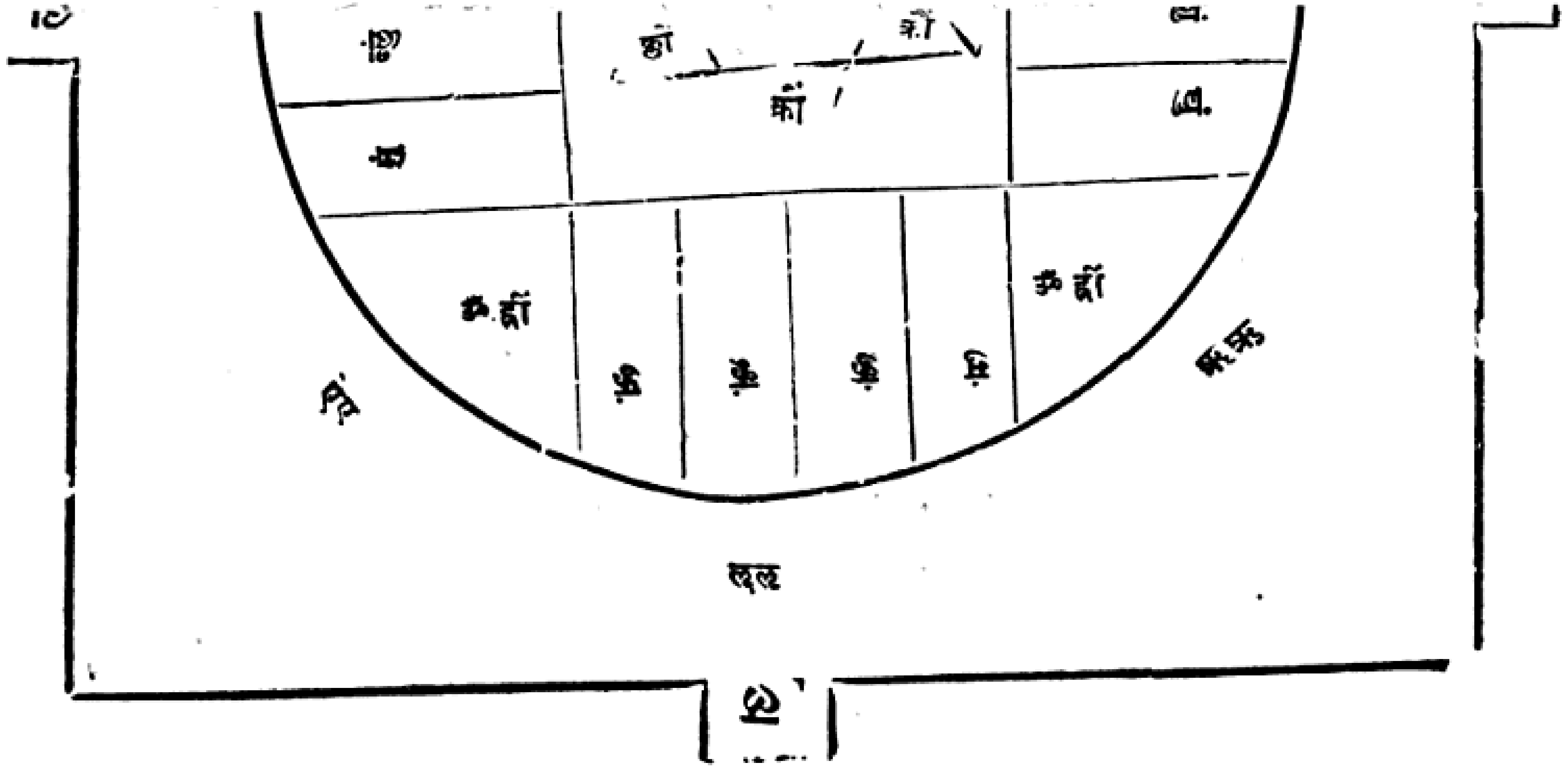
पद्मावतीस्थापनयन्त्रम्.

	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	
[illegible]	भू	एक	चन्द्र	भू	एक	विंव	पृथ्वी	एक	[illegible]
[illegible]	ईक्षण	विश्व	युग्म	विश्व	युग्म	एक	युग्म	युग्म	[illegible]
[illegible]	पृथ्वी	विंव	इक्षण	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	चन्द्र	विश्व	[illegible]
[illegible]	भू	विश्व	ईशाण	चन्द्र	विंव	पृथ्वी	युग्म	एक	[illegible]
[illegible]	एक	युग्म	पृथ्वी	विंव	चन्द्र	ईक्षण	विश्व	भू	[illegible]
[illegible]	चन्द्र	एक	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	पृथ्वी	ईक्षण	विंव	[illegible]
[illegible]	ईक्षण	विश्व	युग्म	युग्म	विंव	एक	युग्म	युग्म	[illegible]
[illegible]	भू	पृथ्वी	विंव	एक	भू	विश्व	ईक्षण	एक	[illegible]
	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	

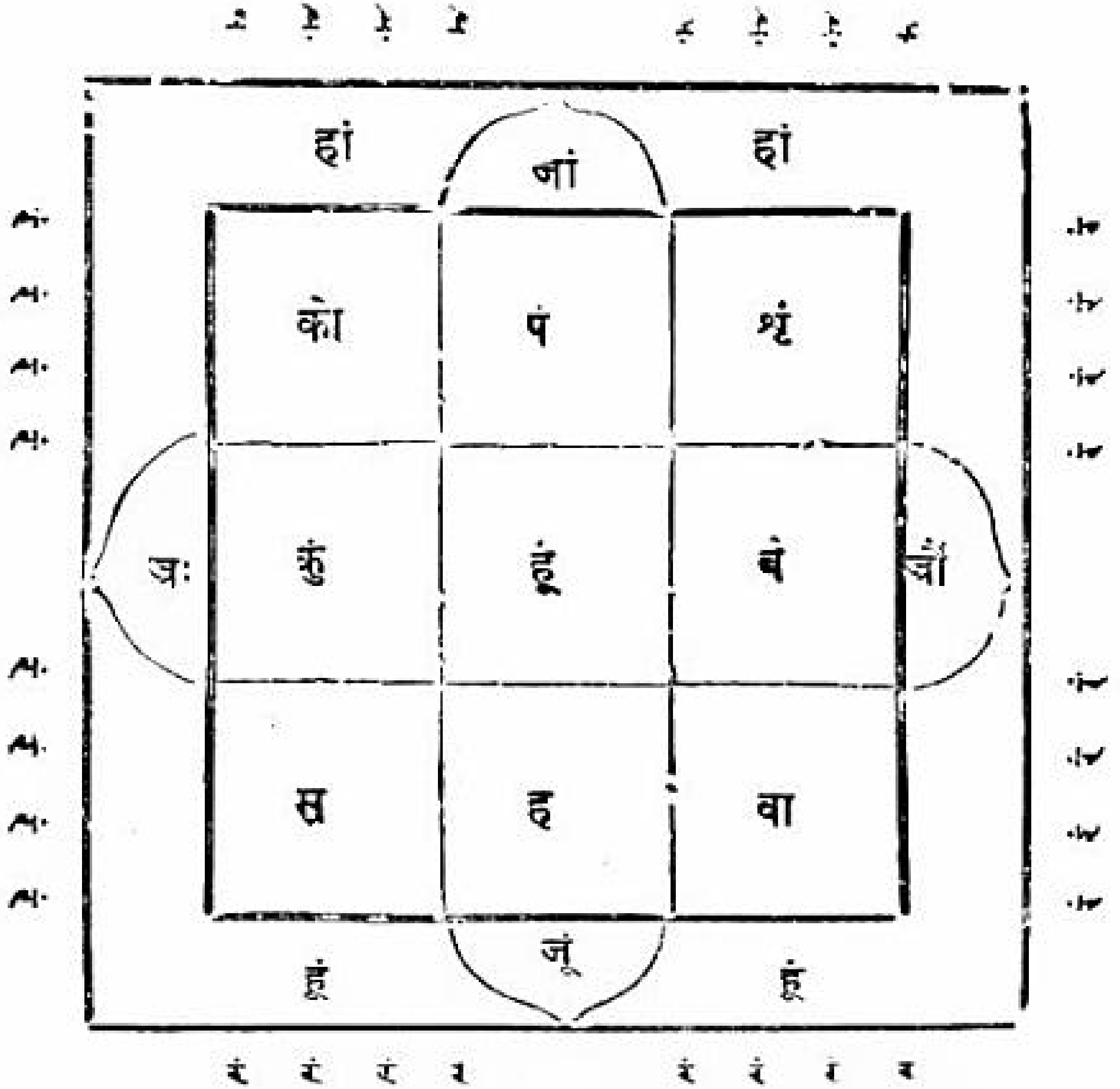
॥ २२ ॥ हे अंबिका ! हे देवी ! हे पद्मावती ! हे कालिका ! तत्कथ हमार

इन्द्रोंका समूह चक्रवर्ती किन्नर दानव दैत्य सिद्ध यक्ष देवता धरणीन्द्र मनुष्यादिकके मुकुटसे घिसगया है चरणारविंद जिसका-फिर माता ! आप कैसी हो सौम्यवंत हो लक्ष्मीवान् हो ऐसी हे माता ! आप मेरी रक्षा करो--इस श्लोकके पाठसे शरीरके अनंत रोग दूर होते हैं॥ इति चतुर्दशश्लोकविधानम् ॥ १४ ॥ हे माता ! हे पद्मावती! हे सरस्वती ! हे वरकी दाता ! हे देवी ! राज्यके अर्थ यह पूजा अंगीकार करो। धूप चंदन अक्षत मनोहर पुष्प भ्रमरयुक्त नानाजातिके फल पुष्प युक्त थालभरा दिव्य मनका हरनेवाला नैवेद्य इस लोकमें पुष्टिदाता ऐसे द्रव्यसे भक्तियुक्त हे माता ! पूजा अंगीकार करो । इस मंत्रसे भावपूजा द्रव्यपूजा अंगीकार करो । 'धूपैश्चंदन' इस श्लोकके पढनेसे राज्यके अर्थ माताकी सेवा अर्चा करे ॥ इति पंचदशश्लोकविधानम् ॥ १५ ॥ हे माता ! हे सरस्वती ! आपकी प्रभुता कहांतक वर्णन करूं- वहां देखो तहां सर्वस्थानोंमें आपही आप व्याप रही हो। हे माता ! आपको बौद्धमती तो तारा कहकर पूजते हैं। हे सरस्वती ! शैव पार्वती कहकर पूजते हैं--जैनी पद्मावती कहकर पूजते हैं-विख्यात वेदांती गायत्री कहकर पूजते हैं. हे कात्यायनी ! सांख्यमतविषे प्रकृति कहकर पूजते हैं--हे माता ! तुम्हारी महिमा कहांतक कहूं । 'तारां त्वां' इस सोलवें श्लोकके पाठसे सर्वत्र ईश्वरी षट्दर्शनमें व्यापरही है ॥ १६ ॥ नाहरके रूपको धरनेवाली हे देवी ! सिद्धरूपसे प्रगट होकर मुझको वचन देकर बोलो–हे पद्मावती देवी ! तत्काल दर्शन दो–किससे दो, इस मंत्रसे साक्षात् दर्शन देवे न संदेह । अस्य विधानम्–'धूपैश्चंदन' इस श्लोकसे पूजा करे। रक्त कनैलका पुष्प, गूगल, घृत, दशजातिकी बसा इनको मिलाकर त्रिकोणकुंडमें 'ॐ भूविश्वेक्षरणर्द्धे' इस मंत्रके आदि अंतमें 'ॐ मौं जें मैं' इन बीजोंको लगाकर इस मंत्रके द्वारा होम करे । दीपमालिका या होली अथवा ग्रहणसे प्रारंभ करके एकांत स्थानमें ३ दिन करे–बलि देवे दर्शन हो जब बलि देवे तो आवाज हो न संदेह ॥ इति सप्तदशश्लोकविधानम् ॥ १७ ॥ यह मंत्र ह्रींकार तत्त्वका स्वरूप प्रथमपदमें कहा श्रीपार्श्वनाथजीको कहा–बीज अक्षर हमारी रक्षा करो–कैसा मंत्र है–ह्रींकारयुक्त--चंद्रमा युक्त–कंकणाकार–सोलह कोठासे युक्त जिसके ऊपर आठकमलकी किरणोंसे यह मंत्रोद्धार त्रैलोक्यका वशीकरण पुरुषका वशी


ल
ह्रीं
ह्रीं

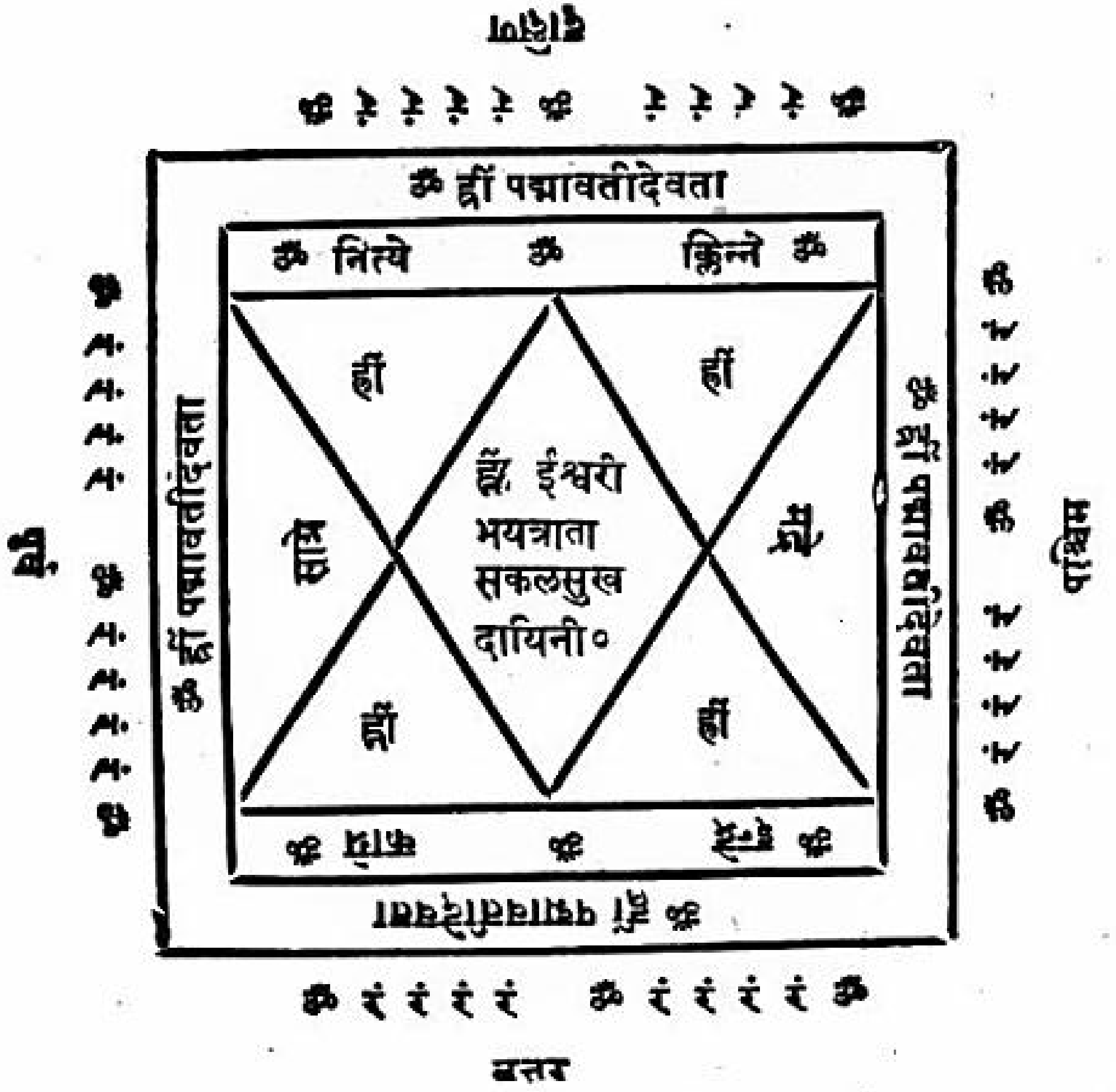


करण–सर्वमंत्रोंका राजा गतिमुक्तिका दाता ऐसा मंत्रोद्धार आठ बार सदैव त्रिकाल जपे तो सर्वजन वशीकरण होवे–'ह्रीं कारे' इस श्लोकके जपसे 'त्रैलोक्यमोहनं ज्ञेयम्' ॥ इत्यष्टादशश्लोकविधानम् ॥ १८ ॥ 'क्षुद्रोपद्रव' इस श्लोकके जपसे खोटा उपसर्ग दूर होवे–दारिद्र्यका विनाश होवे ॥ इत्येकोनविंशश्लोकाविधानम् ॥ १९ ॥ 'भक्तानां देहि सिद्धिं'–इस श्लोकसे ईश्वरी साक्षात् दर्शन देवे–मनमें धारे सो कहे ॥ इति विंशश्लोकाविधानम् ॥ २० ॥



हे माता ! तीन भुवनमें आप ही विचरी हो–तीन भुवनका इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्ती आपको ही पूजता है–पातालमें तो धरणेन्द्रने पद्मावतीका रूप धारण किया पातालमेंसे निकले पीछे सर्पसर्पिणीका रूप धारण किया–उस रूपसे तीन लोक रचे। स्वर्ग लोकके विषे इन्द्र इन्द्राणी रूप आपने ही धारण किया–देव दैत्य सूर्य चन्द्रमासे पूजनीय हो–स्वर्ग लोकके देवतोंसे स्तवने योग्य है चरणारविंद जिसका–देवताओंके मुकुटोंके मोती मणियों करके पूजनीय हो। हे माता ! आप ही तीनों लोकोंमें सद्रूप हो–यह मंत्र रक्षारूप है। इस मंत्रसे शिखामें गांठ देवें तो सर्वत्र रक्षा होवे ॥ इत्येकविंशश्लोकाविधानम् ॥ २१ ॥ 'दिव्यस्तोत्रं पवित्रं' इस बाईसवें श्लोकको पढे तो अनंत ऋद्धि वृद्धि सौभाग्य पुत्र कुटुंब आरोग्य सब ही पावे ॥ इति द्वाविंशश्लोकाविधानम् ॥ २२ ॥ 'मातः सद्म' इस तेईसवें श्लोकसे पद्मद्वारा भवानीकी सेवा करे तो ईश्वरीका कमलरूप दर्शन होवे। इति त्रयोविंशश्लोकविधानम् ॥ २३ ॥ हाथके

विषे कमल है जिसके ऐसी हे देवी पद्मावती ! हमारी रक्षा करो–अष्टाक्षरी विद्यारूपी जो कमल उससे युक्त हो, उत्कट लीलाके प्रबंधसे युक्त हो–'ज्रों ज्रीं ज्रूं ज्रः' इस चतुरक्षरी मंत्रसे पवित्र हो–यह मंत्र कैसा है–चन्द्रकिरणसा उज्ज्वल है-फिर आपका रुधिर दूधके समान है–आपसे ही दूध झिरता है–फिर माता आप कैसी हो–सर्पसे केशोंका जूटा बांधा है जिसने–अनंत जो बल उससे कालकूट विषको दूर करती है-अकालमृत्युको दूर करती है फिर कैसी है अंबिका हाहाहुंकार ऐसे शब्दको धारण किया है--ऐसी हे मातः ! रजोगुण तमोगुण धारे हमारी रक्षा करो । यह यंत्रोद्धार--तांबा सुवर्ण किंवा पीपलके पत्र ऊपर दूधसे मंत्र रोज लिखे-यह श्लोक छः मासतक नित्य पढे-यंत्र बीस वार नित्य लिखचुके तब घोलकर पीजाय । इस प्रकार छः मास एकांतमें करे-- गुप्त राखे, दूध चावल भोजन करे--कुशोंकी शय्यापर सोवे--ब्रह्मचर्य पाले--कठिनता राखे--तो यह मंत्रोद्धार जो इच्छा करै सोही देवै न संदेह ॥ इति चतुर्विंशश्लोकविधानम् ॥ २४ ॥ हे मातः ! ध्यानके विषे आश्चर्यको करने



वाली त्रिभुवनवशीकरणी हे पद्मावती ! तुम हमारी रक्षा करो-हे माता ! आप कैसी हो–षट्कोणमें विराजमान हो, चक्रके मध्य हो-ॐकारसे युक्त हो, सरस्वती आप ही हो, कामनाका राजा आप ही हो-हंसपर सवार हो-मस्तकपर बिंदु धारण किये हो-फूला जो कमल उसकी किरणसे विराजमान हो-नित्य हो–संसारमें लिप्त हो, दो भुजा धारे हो, नागफांसी अंकुश धारे हो--जैसे

विकटरूप मंत्रोद्धारसे युक्त साक्षाच्चिदानंद ईश्वरी मंत्ररूप सर्व जीवोंकी सहायकर्त्ता ऐसी हे माता ! तुम ही जगत्में रक्षक हो—यंत्र यंत्रोद्धार अष्टगंधसे दीपमालिकाकी रात्रिको लिखिये, भुजामें धारण करिये तथा मस्तकमें धारण करिये । सकल लोको वश्यो भवति न संदेहः॥ इति पंचाविंशश्लोकविधानम् ॥ २५ ॥ हे देवी ! हे मनुष्योंकी हितकर्ता ! तत्काल हमारीउपसर्गमें रक्षा करो—आप कैसी हो, मंत्ररूप हो, आकार क्रौंकार ह्रींकार शब्दयुक्त षट्कोठासे विराजमान हो—त्रिकोणचक्र क्लीं सहित नीचले कोठाके विषे १४ स्वरोंसे युक्त हो—कंडीरकालका पुष्प वा अगथियाका जो पुष्प उससे २१००० प्रयोग करे, मंत्र जपे छः मासतक तो साक्षात्कार दर्शन होवे । कैसे रूपसे दर्शन होवे । त्रैलोक्यको कंपायमान करती, ऐश्वर्य करती, विकराल रूप धरण करके दर्शन देवे । तमोगुण धरके भक्तजनोंको समृद्धि देती ऐसी पद्मावतीका ध्यान करे । इस यंत्रको अष्टगंधसे लिख इस मंत्रको जपे 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं क्लीं प्लूं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रौं ह्रौं ह्रों ह्रः ऋद्धिवृद्धि कुरु कुरु स्वाहा' इस मंत्रको २१०००० जप करे तो सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो ॥ २६ ॥ इति षड्विंशश्लोकविधानम् ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीमंमहार्णवे मध्यखण्डे मिश्रतन्त्रे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥ इति मध्यखण्डं समाप्तम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथोत्तरखण्डप्रारंभः ॥ तत्रादौ स्वप्नसिद्धितंत्रप्रारंभः ॥ तत्र स्वप्नवाराहीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा मंत्र महोदधौ–ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य स्वप्नवाराहीमंत्रस्य ईश्वर ऋषिः । जगती छंदः । स्वप्नवाराही देवता । ॐबीजम् । ह्रीं शक्तिः । ठःठः कीलकम् । ममाभीष्टस्वप्नकथनार्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि १ । जगतीच्छंदसे नमो मुखे २ । वाराहीदेवतायै नमो हृदि ३ । ॐ बीजाय नमो गुह्ये ४ । ह्रींशक्तये नमः पादयोः ५ । ठःठः कीलकाय नमो नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । नमो वाराहि तर्जनीभ्यां नमः २ । घोरे मध्यमाभ्यां नमः ३ । स्वप्नम् अनामिकाभ्यां नमः ४ । ठःठः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १ । नमो वाराहि शिरसे स्वाहा २ । घोरे शिखायै वषट् ३ । स्वप्नं कवचायं हुं ४ । ठःठः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमो दक्षिण पादे १ । ॐ ह्रीं नमो वामपादे २ । ॐ नं नमः लिंगे ३ । ॐ मों नमो दक्षिणकटयाम् ४ । ॐ वां नमो वामकटयाम् ५ । ॐ रां नमः कण्ठे ६ । ॐ हिं नमो दक्षगंडे ७ । ॐ घों नमः वामगंडे ८ । ॐ रें नमो दक्षनेत्रे ९ । ॐ स्वं नमो वामनेत्रे १० । ॐ प्नं नमो दक्षकर्णे ११ । ॐ ठं नमो वामकर्णे १२ । ॐ ठं नमो दक्षनासापुटे १३ । ॐ स्वां नमो वामनासापुटे १४ । ॐ हां नमो मूर्ध्नि १५ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्–ॐ मेघश्यामरुचिं मनोहरकुचां नेत्रत्रयोद्भासितां कोलास्यां शशिशेखरामचलया दंष्ट्रातले शोभिताम् ॥ बिभ्राणां स्वकराम्बुजैरसिलतां चर्मासि पाशं सृणिं वाराहीमनुचिंतयेद्धयवरारूढां शुभालंकृतिम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपर

---

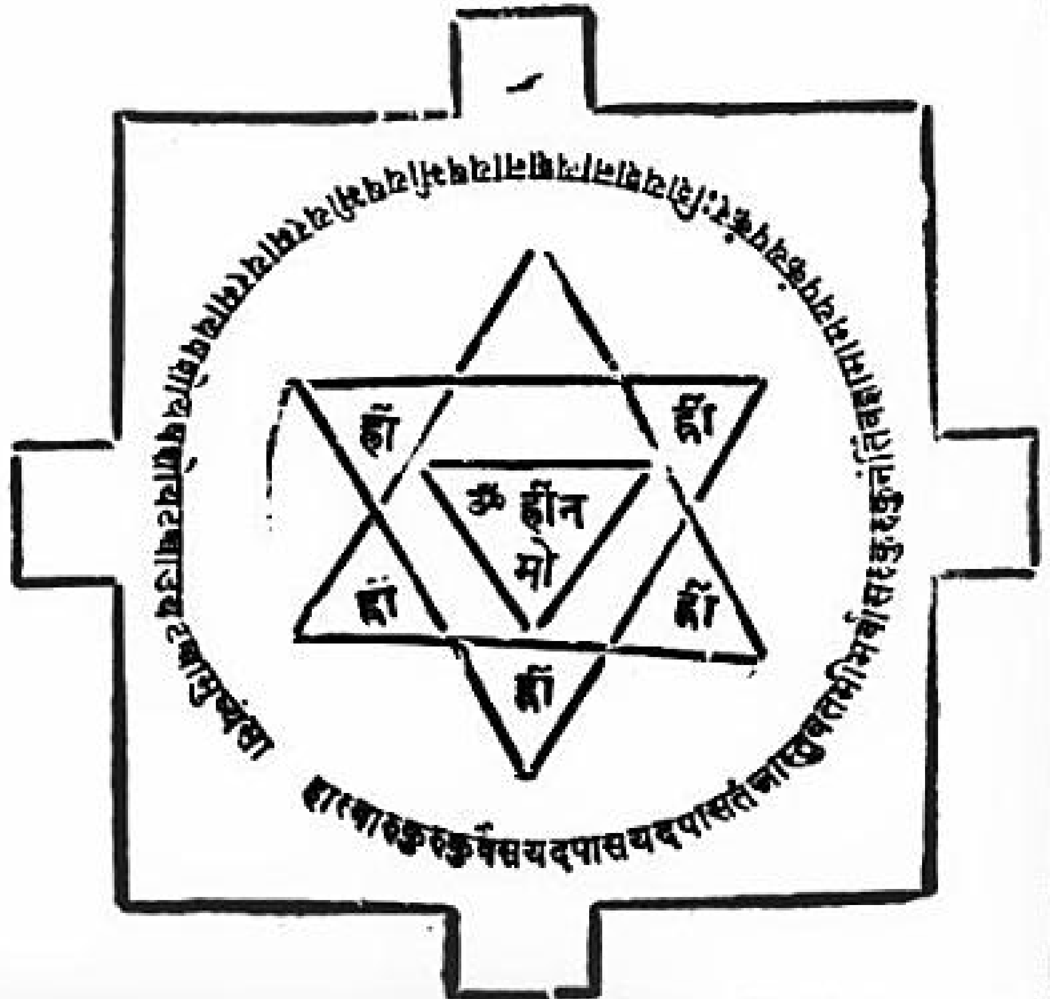
१ तंत्रांतरेऽपि–ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्नं दर्शय ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः प्रसिद्धः ॥ इसको खाटपर ही ग्यारहसौ जप कर सोनेसे ग्यरह दिनके भीतर ही प्रश्नका उत्तर अवश्य मिलता है इसमें संदेह नहीं जानना ।

तत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८ ।मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९। इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य' ॐ ह्रीं वाराहीयोगपीठायै नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा त्रिकोणमध्ये मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि वाराहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथाच षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादि चतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ नमो वाराहि शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। घोरे शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३ ।स्वप्नं कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ४। ठःठः नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य– ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः षोडशदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ उच्चाटिन्यै नमः। उच्चाटिनीश्रीपा० १ । ॐ उच्चाटिनीश्वर्य्यै नमः । उच्चाटिनीश्वरीश्रीपा० २ । ॐ शोषिण्यै नमः। शोषिणीश्रीपा० ३ । ॐ शोषिणीश्वर्य्यै नमः। शोषिणीश्वरीश्रीपा० ४। ॐ मारिण्यै नमः। मारिणीश्रीपा० ५। ॐ मारिणीश्वर्य्यै नमः। मारिणीश्वरीश्रीपा० ६। ॐ भीषण्यै नमः। भीषणीश्रीपा० ७। ॐ भीषणीश्वर्य्यै नमः । भीषणीश्वरीपा० ८। ॐ त्रासिन्यै नमः। त्रासिनीश्रीपा० ९। ॐ त्रासिनीश्वर्य्यै नमः त्रासिनीश्वरीश्रीपा० १०। ॐ कंपिन्यै नमः। कंपिनीश्रीपा०

११ । ॐ कंपिनीश्वर्य्यै नमः । कंपिनीश्वरीश्रीपा० १२ । ॐ आज्ञाविवर्तिन्यै नमः । आज्ञाविवर्तिनीश्रीपा० १३ । ॐ आज्ञाविवर्तिनी
श्वर्य्यै नमः । आज्ञाविवर्तिनीश्वरीश्रीपा० १४ । ॐ वस्तुजातेश्वर्य्यै नमः । वस्तुजातेश्वरीश्रीपा० १५ । ॐ सर्वसंपादिन्यै नमः । सर्व
संपादिनीश्रीपा० १६॥ इति षोडशशक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततोऽष्टदले प्राचक्रिमेण वामावर्तेन च
ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै
नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै
नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८॥ इत्यष्टौ देवताः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृती
यावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदलाग्रेषु प्राचीक्रमेण दक्षिणावर्तेन च ॐ असितांगभैरवाय नमः । असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ रुरुभैर
वाय नमः । रुरुभैरवश्रीपादुकां० २ । ॐ चंडभैरवाय नमः । चंडभैरवश्रीपा० ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ ।
ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ कपालभैरवाय नमः । कपालभैरवश्रीपा० ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः । भीषण
भैरवश्रीपा० ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः । संहारभैरवश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ भैरवान् पजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति चतुर्थावर
णम् ॥ ४ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ । ॐ रं अग्नये नमः २ । ॐ मं यमाय नमः ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः
४ । ॐ वं वरुणाय नमः ५ । ॐ यं वायवे नमः ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः ७ । ॐ हं ईशानाय नमः ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ
आं ब्रह्मणे नमः ९ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति
पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ तद्बाह्ये इन्द्रादिसमीपे ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय
नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं
पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि संपज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ इत्याव

रणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तिलमिश्रितनीलपद्मेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षं जपेद्दशांशेन नीलपद्मैस्तिलैः शुभैः ॥ जुहुयात्पूर्वसंप्रोक्ते पीठे संपूजयेदिमाम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनुं मंत्री काम्यकर्मणि योजयेत् ॥ तर्पयेन्नारिकेलोत्थैर्जलैस्तीर्थोद्भवैरपि ॥ २ ॥ मानयेत्तरुणीवर्गान् सर्वकामार्थसिद्धये ॥ कृष्णपक्षेऽष्टमीघस्रे भूताहे वा कृतव्रतः ॥ ३ ॥ चतुष्पथान्नदीकूलद्द्यात्कौलालवेश्मनः ॥ मृदमानीय धत्तूररससंयुक्तया तया ॥ ४ ॥ रचयेत्पुत्तलीं रम्यामध्यास्य स्थापनान्विताम् ॥ ततः प्रोक्ताम्बरे यंत्रं नृकाकाजासृजा लिखेत् ॥ ५ ॥ चितांगारयुतां योनिं षट्कोणं भूपुरान्वितम् ॥ तदंते मंत्रमालिख्य वेष्टयेन्मनुनाऽमुना ॥ वेष्टनमंत्रो यथा—साध्यमुच्चाटय २ शोषय २ मारय २ भीषय २ नाशय २ शिरः कंपय २ ममाज्ञावर्तिनं कुरु २ सर्वाभिमतवस्तुजातं संपादय २ सर्वं कुरु २ स्वाहा ॥ अनेन वेष्टितं कृत्वा कृतं देवीप्रतिष्ठितम् ॥ ६ ॥ पुत्तल्या हृदि विन्यस्य यजेत्तामुक्तमार्गतः ॥ तदग्रे प्रजपेन्मंत्रं रात्रावेकांतमाश्रितः ॥ ७ ॥ सहस्रं साष्टकं भूयः पूजयेत्तां समाहितः ॥ एवं कृते नरा नार्यो राजानो राजवल्लभाः ॥ ८ ॥ सिंहा गजा मृगाः क्रूरा भवेयुर्वशगा ध्रुवम् ॥ ९ ॥ अन्यः प्रयोगः—चित्ते ध्यात्वा निजं कार्यं शयीत विजने व्रती ॥ यथा

वाराहीवशीकरणयंत्रम् ।

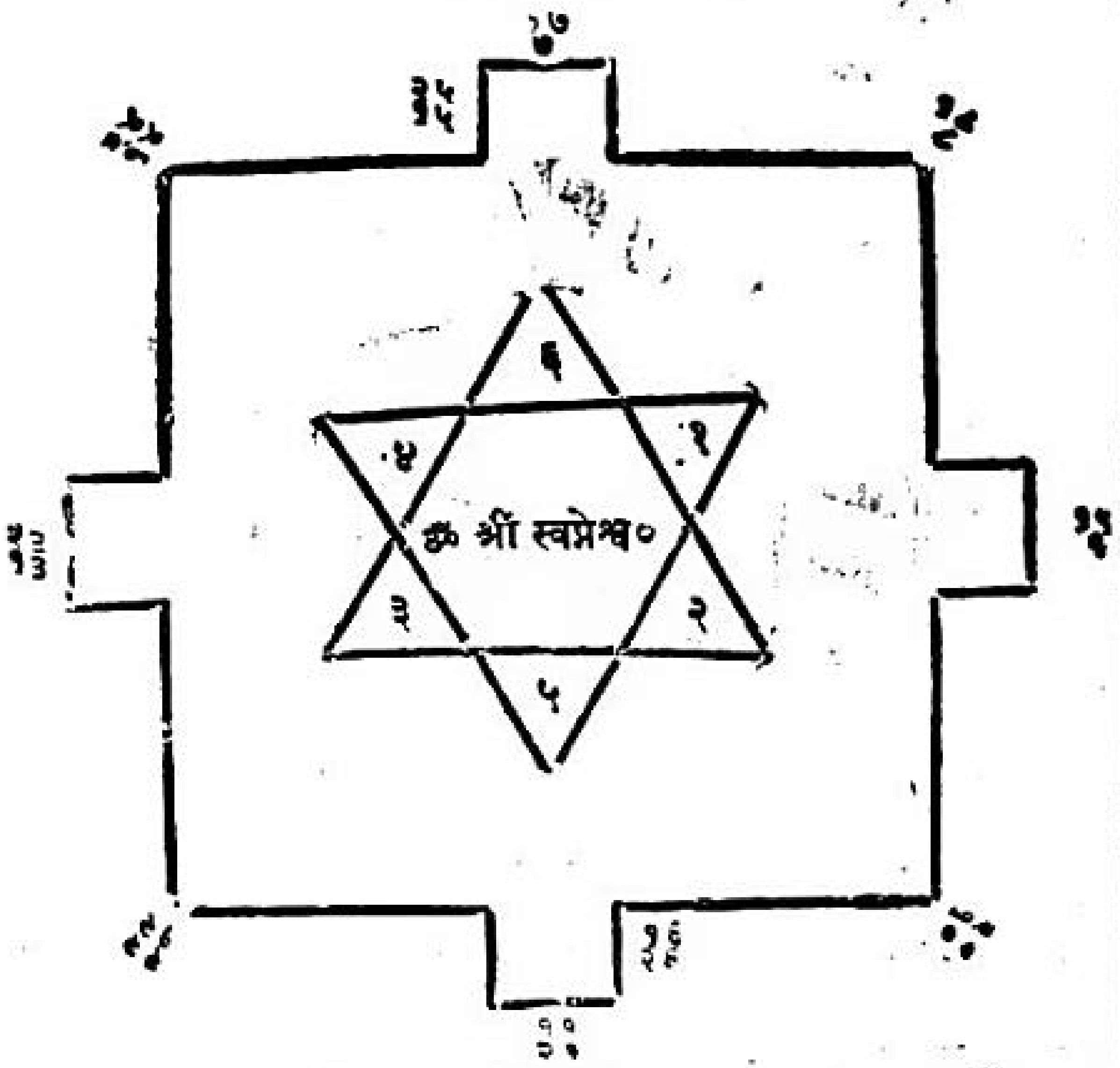


१ कृष्णपक्ष इत्यारभ्य वशगा ध्रुवमित्यंत एको वश्यार्थ प्रयोगः ॥ १ नृकाकाजानां-नरवायसमेषाणामसृजा रुधिरेण ॥ २ उक्तमार्गतः पूर्वोक्तविधिना ॥

भाति तथा देवी स्वप्ने वदाति मंत्रिणे ॥ बहुना किमिहोक्तेन वाराहीष्टं प्रयच्छति ॥ १० ॥ इति पंचदशाक्षरवाराहीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥
॥ अथ स्वप्नेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा मंत्रमहोदधौ—ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य स्वप्नेश्वरीमंत्रस्य उपमन्युर्ऋषिः । बृहती छंदः । स्वप्नेश्वरी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि १ । बृहतीच्छंदसे नमो मुखे २ । स्वप्नेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । स्वप्नेश्वरि तर्जनीभ्यां नमः २ । कार्यं मध्यमाभ्यां नमः ३ । मे अनामिकाभ्यां नमः ४ । वद कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रीं हृदयाय नमः १ । स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा २ । कार्यं शिखायै वषट् ३ । मे कवचाय हुम् ४ । वद नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ वराभये पद्मयुगं दधानां करैश्चतुर्भिः कनकासनस्थाम् ॥ सितांबरां शारदचन्द्रकांतिं स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण—ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ स्वप्नेश्वरीयोगपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ श्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । कार्यं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा०

३ । मे कवचायै हुम् । कवचश्रीपा० ४ । वद नेत्रत्रयाय वौषट्[1] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य--ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य रात्रौ लक्षं जपेत् ॥ जपदशांशेन बिल्वपत्रैर्होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–लक्षं जपेद्बिल्वपत्रैर्जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ रात्रौ संपूज्य देवेशीमयुतं पुरतो जपेत् ॥ १ ॥ शयीत ब्रह्मचर्येण भूमौ दर्भोत्तराजिने ॥ देव्यै निवेद्य स्वं हार्दं सा स्वप्ने वदति ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति त्रयोदशाक्षरस्वप्नेश्वरीमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ तंत्रांतरेऽपि–ॐ ह्रीं

स्वप्नेश्वरीपूजनयन्त्रम् ।



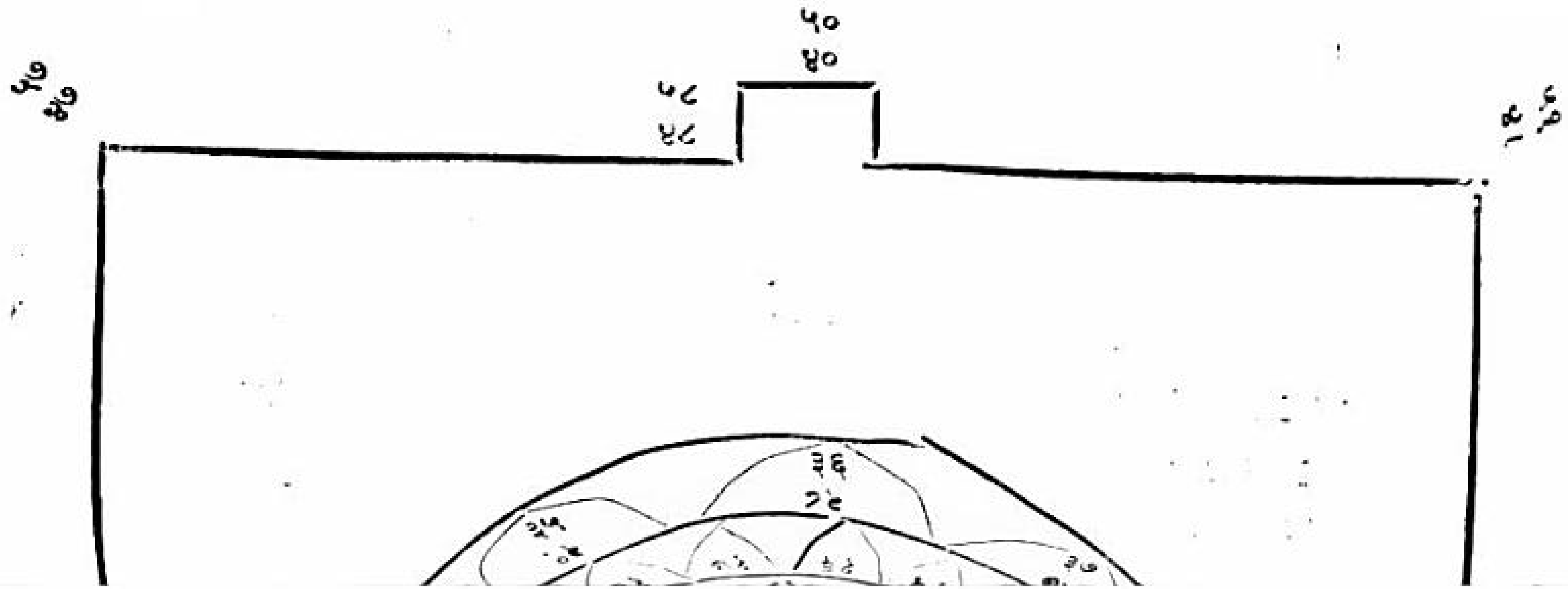
मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वद वद स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्त्वायुतं जपेत् ॥ संध्याकाले पूजां कुर्यात् । स्वप्ने त्रैकालिकं शुभाशुभं तस्मै देवी कथयति वर्तमानं स जानाति ॥ इति विंशत्यक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥

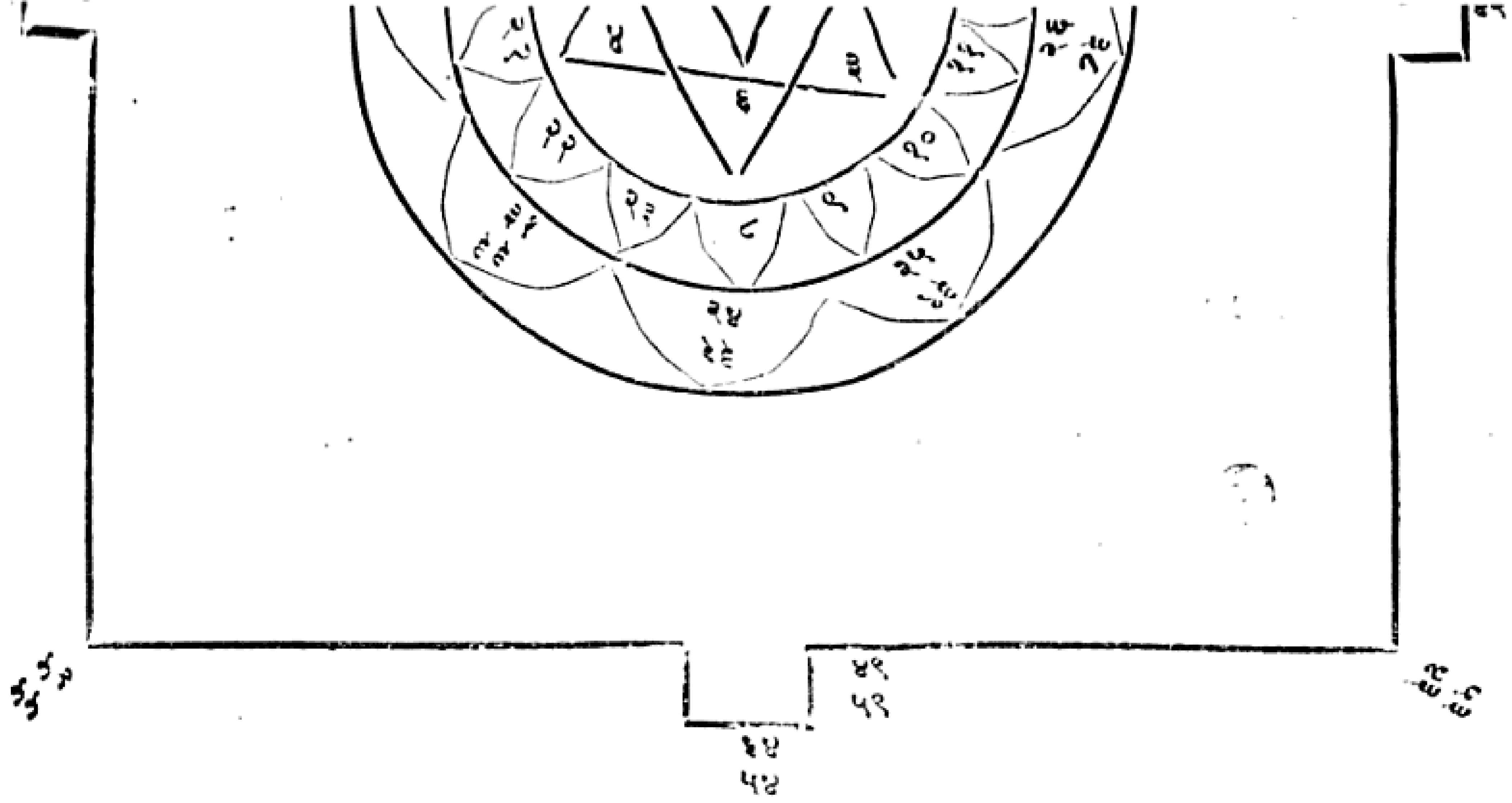
१ तंत्रांतरेऽपि वषट् इति पाठः ।

अन्यः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चौका दे दीपक बतासा धरे । भोग कुमारी कन्याको बांट देवे तो इक्कीस हजार जप करनेसे स्वप्नमें प्रश्नका उत्तर देती हैं। एकलाख जप करनसे स्त्रीरूप प्रत्यक्ष आकर वर देती है इसमें संदेह नहीं । यह बडा चमत्कारी मंत्र एक महात्माका उपदेश कियाहुआ है ॥ ३ ॥

॥ अथ हनूमन्मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा--ॐ नमो हनुमंताय आवेशय आवेशय स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पवित्र हो रक्त वस्त्र धारणकर रक्त आसनके ऊपर बैठ हनुमानजीकी रक्तचन्दनकी प्रतिमा स्थापन करके, उस मूर्तिकी प्राणप्रतिष्ठा करके पंचोपचार पूजन करे, सिंदूर चढावे, गुडके चूरमेका नैवेद्य लगावे। उस नैवेद्यको आठ पहर मूर्तिके सामने धरा रहने दे। जब दूसरे दिन नैवेद्य लगावे, उस समय पहले दिनके नैवेद्यको उठाकर किसी पात्रमें इकट्ठा करता जावे । अनुष्ठान पूरा होनेके पीछे किसी गरीव ब्राह्मणको देदेवे, अथवा पृथ्वीमें गाड देवे । घृतका दीपक बाले, निर्जनस्थानमें रात्रिके समय ग्यारहसौ ११०० मंत्र जपे, पीछे किसीसे बोले नहीं। उसी पूजनके स्थानमें रक्त वस्त्रके ऊपर सोजावे । ऐसा करनेसे ग्यारह ११ दिनके भीतर श्रीहनुमानजी महाराज रात्रिके समय ब्रह्मचारीका स्वरूप हो स्वप्नमें साधकको दर्शन देते हैं और साधकके प्रश्नका यथोचित उत्तर देते हैं और साधकको अभिलषित वार्ता वताते हैं इसमें संदेह नहीं । यह हमारा कईवार अनुभव कियाहुआ सिद्ध प्रयोग एक महात्मासे मिला था । यह दुष्ट पुरुषोंको देना योग्य नहीं है ॥ इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मंत्रप्रयोगः ॥ ४ ॥ अथ योजनगंध योगिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—जोजनगंधा जोगिनी । ऋद्धसिद्धमें भरपूर ॥ मैं आयो तोय जाचणे । करजो कारज जरूर ॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो दोहारूपमंत्रः ॥ अस्य विधानम्—गेहूंका आटा सवासेर १। घृत अढाई पाव, चीनी अढाई पाव, इन्होंका कसार भूनकर तैयार कर ले। पीछे शनिवारको सूर्य्योदयसे पहले जंगलमें जाकर कीडीनगरा अर्थात् चींटा चींटीके बिलोंमें थोडा थोडा कसार गेरता जावे और मंत्र बोलताजावे । जंगलमें खूब फिरे; जब थक जावे किसी वृक्षके नीचे विश्राम

स्वप्नवाराहीपूजनयन्त्रम् ।





ले। उसी समय निद्रावस्था प्राप्त होनेसे एकाकी पुरुष वा स्त्री आकर सामने खडा होजावैगा और साधकके मनोप्सित कार्यको अच्छे स्पष्ट वचनोंसे बतावेगा।उसकी बात सब साधकको अच्छीतरह सुनाई पडेगी। यह ४ पहरका प्रयोग निराहार व्रत करके करना योग्य है। यह पहले ही दिन प्रश्नका उत्तर देदेता है इसमें कुछ संदेह नहीं। कईदिनोंतक करनेसे तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। रात्रिको घरमें आकर भोजन करना चाहिये। यह भी हमारा अनुभव करा सिद्ध प्रयोग है॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरयोजनगंधायोगिनीमंत्रप्रयोगः ॥५॥ ॥ अथ चंद्रयोगिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा शिवार्चनचन्द्रिकायाम्--ॐ ह्रीं श्रीं सः नमः श्मशानवासिनि चंडयोगिनि स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः ॥ घृताक्तै रक्तपुष्पैश्च पूर्णांते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपादांतं लिपेद्गात्रं रात्रौ मंत्रं समुच्चरेत् ॥ यावन्निद्रावशं याति स्वप्नं दत्ते च सागता ॥ वांछितं यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्ध्यति ॥ २ ॥ इति चंडयोगिनीमंत्रप्रयोगः ॥ ६ ॥ अथ मणिभद्रमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वकार्यसिद्धये मम स्वप्नदर्शनानि कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-रात्रिके समय तेलका दीपक बाले, उस दीपकमें फूटी कौडी गेरे, उसके सम्मुख ग्यारहसौ ११०० मंत्र जपे, जप करनेके पीछे लाल कनेरके फूलोंको १०८ वार मंत्रद्वारा अभिमंत्रित करके उन पुष्पोंको ताम्रकी डब्बीमें बंद कर शिरके नीचे देकर सो जावे। एक वखत भोजन करे।ऐसा करनेसे ग्यारह११दिनके भीतर शुभाशुभ या जैसा होनेवाला हो स्वप्नद्वारा अवश्य कहता है इसमें संदेह नहीं ॥ इति मणिभद्रमंत्रप्रयोगः ॥ ७ ॥ अथ स्वप्नमातङ्गीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः स्वप्नमातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—दिनमें निर्जल व्रत करके रात्रिके समय १०८ वार मंत्रको जपकर भूखा ही सोजावे तो पहिली ही रात्रिमें स्वप्न हो जाता है। कई दिनोंतक करनेकी आवश्यकता नहीं पडती ॥ इति स्वप्नमातङ्गीमंत्रप्रयोगः ॥ ८ ॥ अथ यक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रींश्रींवालीलंबाहुलीक्षांक्षींक्षंक्षेंक्षः स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पूर्वमुखोऽयुतं

जपेत् । एकभुक्तव्रतं कुर्यात् । जपांते कुशशय्यायां सुप्तः तदा शुभाशुभं स्वप्ने पश्येत् ॥ इति यक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥ ९ ॥ ॥ अथ घंटाकर्णीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ यक्षिणि आकर्षिणि घंटाकर्णे घंटाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रात्रौ सहस्रं जपेत् ॥ एकादशदिनांतरे स्वप्ने वदति न संदेहः ॥ १० ॥ अथ कर्णपिशाचिनीमंत्र प्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—ॐ नमः कर्णपिशाचिनि अमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनि स्वाहा॥इति पंचाधिकषष्ट्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—त्रिशूलका पूजन कर दिनमें घृतका दीपक बाल ग्यारहसौ मंत्र जपे । पीछे रात्रिमें इसीतरह त्रिशूलका पूजन कर घृत तेल दोनोंका दीपक बाल ग्याहरसौ ११०० मंत्र जपे । ऐसा करनेसे ग्यारह ११ दिनके भीतर प्रश्नका उत्तर स्वप्नद्वारा अवश्य देती है इसमें संदेह नहीं ॥ इति पंचषष्ट्यक्षरकर्णपिशाचिनी मंत्रप्रयोगः ॥ ११ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा—ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकारिणि प्रवेषे अतीतानागतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वहा॥ इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको आम्रके पट्टेपर गुलाल बिछा अनारकी कलमसे रात्रिके समय एकसौ आठ मंत्र लिखकर मिटाता जावे लिखते समय मंत्रका उच्चारण भी करता जावे ॥ अंतवाले मंत्रका पंचोपचार पूजन करके ग्यारह सौ ११०० मंत्रका जप करे । पीछे उस मंत्र लिखे हुए पट्टेको सिरहाने देकर सोजावे। ऐसा करनेसे इक्कीस २१ दिनके भीतर साधकके प्रश्नका उत्तर यथोचित ठीक ठीक स्पष्ट वचनोंसे स्वप्नमें देती है,इसमें कुछ संदेह नहीं। यह हमारा कई बार अनुभव किया हुआ सिद्ध प्रयोग है,इसमें संदेह नहीं जानना। अगर इसको होली या दिवाली या ग्रहण.से प्रारंभ करके खट्वाके ऊपर ही पांचसो मंत्र जपकर सोया करे तो अवश्यही साधकके प्रश्नका उत्तर देती है। कई तरहकी बातोंसे सूचित करती है,परीक्षा कर देखो॥ इति षट्त्रिंशदक्षरकर्ण पिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १२ ॥ कामरत्नतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ [1]ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा

१ तत्रांतरेऽपि—ॐ क्रीं सनामशक्तिभगवति कर्णपिशाचिनि चंडरोपिणि वद वद स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥

इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृष्णकन्याभिमंत्रितः ॥ हस्तपादप्रलेपेन सुप्तौ वक्ति शुभाशुभम् ॥ त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ इति षड्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १३ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ हंसोहंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कुष्ठकल्काभिमंत्रितम् ॥ हस्तपादप्रलेपेन स्वप्ने वक्ति शुभाशुभम् ॥ त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ १ ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १४ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ भगवति चंडकर्णपिशाचिनि स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः ॥ घृताक्तै रक्तकुष्ठैश्च पूर्णांते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपादांतं लिपेद्गात्रं रात्रौ मंत्रं समुच्चरेत् ॥ यावन्निद्रावशं याति स्वप्ने दत्ते च सा गता ॥ वांछितं यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्ध्यति ॥ २ ॥ इति सप्तदशाक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १५ ॥ अथ चिंचिनीपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं चीं चिंचिनि पिशाचिनि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–पूर्वसेवायुतं जप्त्वा होमं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ १ ॥ रोचनाकुंकुमक्षीरैः पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥ विरजस्के भूर्जपत्रे मायाबीजं दले दले ॥ २ ॥ लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं मंत्रायुतं जपेत् ॥ अतीतानागतं सर्वं स्वप्ने वदति देवता ॥ ३ ॥ इति द्वादशाक्षरचिंचिनीपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १६ ॥

॥ अथ चामुंडामंत्रप्रयोगः ॥ ॐ ह्रीं[2] आगच्छागच्छ चामुंडे श्रीं स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत् ॥ पंचोपचारनैवेद्यैर्देवदेवीं प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ साक्षसूत्रे करे धृत्वा पूर्वं सेवायुतं जपेत् ॥ सूर्यकोटिसमां

१प्रथम दश हजार जप करे, पीछे कृष्णकन्या अर्थात् कालेग्वारपाठेको अभिमन्त्रित कर हाथ पावोंमें लेप करके सोवे तो त्रैलोक्यकी शुभाशुभ वार्ता कहै ॥ २ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ चामुण्डे ह्रीं स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ ३ मट्टी और गौके गोबरसे पृथ्वी लीपकर बहुतसे कुश बिछावे–पंचोपचारसे देवदेवीका पूजन करे–रुद्राक्षकी मालासे प्रथम दश हजार जप करे–कोटिसूर्यके समान प्रकाशवालीका ध्यान करे–पीछे रात्रिको जप करके सोवे तो आधी रातको देवी आकर स्वप्नद्वारा शुभाशुभ कहती है ॥

ध्यात्वा रात्रौ पाणितलं जपेत् ॥ २॥ अर्द्धरात्रे गते देवी वार्तां वक्ति शुभाशुभाम् ॥ ३ ॥ इति त्रयोदशाक्षरचामुंडामंत्रप्रयोगः ॥ १७ ॥ ॥ अथ रुद्रमंत्रः ॥ मंत्रो यथा–ॐ नमो भगवते रुद्राय श्मशानवासिने चंडयोगिने स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–करंजवृक्षमारुह्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥ तत्तं चांगेर्घृताक्तैश्च दशांशं होममाचरेत् ॥ १ ॥ तत्तं चांगेन कल्केन आपादांतं विलेपयेत् ॥ जपांते पूर्ववत्स्वप्ने कथयेत्सा शुभाशुभम् ॥ २ ॥ इति त्रिंशदक्षररुद्रप्रयोगः ॥ १८ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अलाबुमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम् ॥ संप्राह्य मंत्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ मंत्रेण मूर्ध्नि बध्नीयाद्वदत्येव शुभाशुभम् ॥ १ ॥ इत्यष्टादशाक्षररुद्रमंत्रप्रयोगः ॥ १९ ॥ तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वते ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति श्लोकत्रयात्मको मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा मंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं संप्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् ॥ ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥ अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ २० ॥ अथ मुसलमानीमंत्रः ॥ बिसमिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम–अल्लाहोरवीमहम्मदरसूलरठ्त्ताजेकीतस्वीरकुल्लाआलमहुजूरभेजेंगेमवक्कलल्यावैंगेजरूर ॥ इत्यैकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–प्रथम अमलमें करनेके वास्ते सवालाख

१ लिंगचन्द्रार्कयोर्बिंबं भारतीं जान्हवीं गुरुम् । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयनेत्रमर्चनम् ।शिखिदं सरथां गाढये रथे स्थानं च मोहनम्–आरोहणं खारखस्य धराळाभश्च निम्नगाम् । प्रासादः स्यंदनः पद्म छत्रं कन्या द्रुमः फली ॥ नागो दीपो हयः पुष्पं वृषभोऽश्वश्च पर्वतः–सुराघटं ग्रहास्तारा नारी सूर्योदयोऽप्सराः–हर्म्यशैल विमानानामारोहो गगने गमः–मद्यमांसदनं विष्ठालेपो रुधिरसेचनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः । सिंहं सिंहासनं शंखानादितं रोचनादिभिः चंदनं तर्पणश्चर्षा स्वप्ने दर्शनं शुभम् तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्गो नग्नो,नार्द्रवायसौ–शुष्कं कंटकिवृक्षश्च चांडाळी दीर्घकंधरः–प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः–इति स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ×

१२५००० जपे, बृहस्पतिवारसे प्रारंभ करे, पश्चिम मुख बैठे। इस प्रकार करनेसे मंत्र अमलमें आजाता है। पीछे ग्यारहसै मंत्रसे लेकर ग्याराहजार मंत्र तक जितना होसके नित्य जपे तो इक्कीस दिनके भीतर स्वप्नद्वारा प्रश्नका उत्तर अवश्य मिल जायगा इसमें कुछ संदेह नहीं परंतु पेशाब करनेके पीछे इस्तिजा करे अर्थात् इन्द्रीको मट्टीसे पोंछ डाला करे और बृहस्पतिवारके दिन कबरपर जाकर रकाबी फूल अतर चढावे, मिठाई चढावे, धूप लोहबानकी देवे, फकीरोंको जिमावे। इन सब कामोंके करनेसे मुसलमानी मंत्र जल्दी ही फलीभूत होते हैं और सम्पूर्ण मुसलमानी मंत्रोंमें उलटी माला फेरनी पडती है, इस मंत्रके द्वारा और भी प्रयोजन सिद्ध होजाता है ॥ २१ ॥ अन्यः—बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम् शमशैरतवरैलशलैआदमहजरतमहबूबसुभानीहाजर ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रको दशहजार नित्य जपे तो इक्कीस दिनके भीतर होनहार स्वप्नद्वारा कहे। इस्तिजादि करना योग्य है ॥ २२ ॥ अन्यः—याबासितो ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पश्चिममुख हो चौमुखा दीपक बालके उलटी माला ३३० तीनसो तसि अर्थात् तेतीस हजार मंत्र नित्य जपे तो ४१ दिनमें सिद्ध हो। पीछे नित्य दशहजार पढकर सोया करे तो साधकके प्रश्नका उत्तर ठीक ठीक देता रहेगा। बहुतसी बातें बतावेगा। यह बडा चमत्कारी अनुभव किया हुआ मंत्र है॥२३॥अथ नीलामके वास्ते पीरका कलमा॥ मंत्रो यथा—याजरव्वाजखिज्रमैतेराइलियास—लिल्लामकादिलचित्तमेरेपास ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कूपेके ढाणेपर रात्रिके समय एकांतस्थानमें लोहबानकी धूप देता हुआ १०८ वार उलटी मालाद्वारा पढे तो २१ दिनके भीतर प्रत्यक्ष आकर उत्तर देता है इसमें संदेह नहीं॥२४॥अथानेकमंत्राः ॥ ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा॥ इति वागीश्वरी मंत्रः॥ २५ ॥ क्लीं वद वद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा ॥ इति चित्रेश्वरीमंत्रः ॥ २६ ॥ सें कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा ॥ इति कुलजामंत्रः ॥ २७॥ ऐं ह्रीं श्रीं वद २ कीर्तीश्वरि स्वाहा ॥ इति कीर्तीश्वरीमंत्रः ॥ २८ ॥ ऐं ह्रीं अंतरिक्षसरस्वति स्वाहा ॥ इत्यंतरिक्षसरस्वतीमंत्रः ॥ २९ ॥

ब्लू वें वद २ त्रीं हुंफट् ॥ इति नीलामंत्रः ॥ ३० ॥ ऐं हें हीं किणि किणि विच्चे ॥ इति किणीमंत्रः ॥ ३१ ॥ ह्सफ्रें ह्सौः ष्फ्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः घटसरस्वति घटे वद २ तर २ रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरु २ स्वाहा ॥ इति घटसरस्वतीमंत्रः ॥ ३२ ॥ इत्यष्टौ मंत्रान् स्वप्नार्थं जपेत् ॥ ततः स्वप्नं दत्त्वा कार्यं कथयति ॥ इति सरस्वत्यष्टकम् ॥ स्वप्नसिद्धितंत्रे प्राकृतग्रंथे--वनमें कहीं वृक्षपै, [1]रूपारेल जु होय। ताके भांवरसातले लकडी लावे सोय ॥ लकडी लाय धूप देताको दीजे आग लगाई। धरासिरहानेको लाताके कर विचार सोजाई ॥ जैसी हो होतव्यता तैसी, दीखै आय। जो जो सांची होय सो, सुपनेमें दरसाय ॥ ३३ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तर खण्डे स्वप्नसिद्धितंत्रे प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

१ अमरवेल।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ यक्षिण्यादितंत्रप्रारंभः ॥ देव्युवाच ॥ श्रुतं च साधनं सर्वं यक्षिणीनां सुखप्रदम् ॥ कस्मिन्काले प्रकर्तव्यं विधिना केन वा प्रभो ॥ १ ॥ अत्राधिकारिणः के वा समासेन वदस्व मे ॥ ईश्वर उवाच ॥ वसंते साधयेद्धीमान् हविष्याशी जितेंद्रियः ॥ २ ॥ सदा ध्यानपरो भूत्वा तद्दर्शनमहोत्सवः ॥ उज्जटे प्रांतरे वापि कामरूपे विशेषतः ॥ ३ ॥ स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साधयेत्सुसमाहितः ॥ अनेन विधिना साक्षाद्भवत्येव न संशयः ॥ ४ ॥ देव्यास्तु सेवकाः सर्वे परं चात्राधिकारिणः ॥ तारकब्रह्मणो भृत्यं विना ह्यत्राधिकारिणः ॥ ५ ॥ अग्निहोत्री विशेषेण साधयेद्यक्षिणीः शुभाः ॥ सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ॥ भगिनी मातृपुत्रीस्त्रीरूपतुल्या यथेप्सिताः ॥ ६ ॥ तत्रादौ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि किंकिणीतंत्रे ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ॥ यस्मिन्सिद्धे मनुष्याणां सर्वे सिध्यंति ह्यच्छयाः ॥ ७ ॥ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनां तु नामानि प्रवदाम्यथ ॥ विचित्रा विभ्रमा हंसी भिक्षिणी जनरंजिका ॥ ८ ॥ विशाला मदना घंटा कालकर्णी महाभया ॥ माहेन्द्री शंखिनी चांद्री श्मशानी वटयक्षिणी ॥ ९ ॥ मेखला विकला लक्ष्मी कामिनी शतपत्रिका ॥ सुलोचना सुशोभाढथा कपाली च विलासिनी ॥ १० ॥ नटी कामेश्वरी चैव स्वर्णरेखा सुसुंदरी ॥ मनोहरा प्रमोदा तु रागिणी नखकेशिका ॥ ११ ॥ नेमिनी पद्मिनी स्वर्णवती देवी रतिप्रिया ॥ इमाः षट्त्रिंशदाख्याता यक्षिण्यश्च सुसिद्धिदाः ॥ १२ ॥ किंकिणीनाम्नि तंत्रेऽस्मिञ्छंभुना वै सुभाषिताः ॥ १३ ॥ षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने सूचनामाह ॥ यदि षट्त्रिंशद्यक्षिणी समये न तिष्ठति तदा क्रोधमंत्रं पठित्वा क्रोधमुद्रयाऽऽकर्षयेत् । तदा शीघ्रमागच्छति । यदि नागच्छति अक्षिण मूर्ध्नि वा स्फुटति ॥ तत्क्षणान्म्रियते महानरके पतति ॥ क्रोधमंत्रो यथा—ॐ जूँ कट्टकट्ट अमुकयक्षिणि ह्रीं यः यः हुँ फट् ॥ अनेन क्रोधमंत्रेण सहस्रमेकं जपेत् ॥ १ ॥ क्रोधमुद्रा यथा—मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् । तर्जनीं प्रसार्याकुंचयेत् ॥ एषा प्रतिहतक्रोधांकुशमुद्रा क्षणेन त्रैलोक्यमप्याकर्षयेत् ॥ अथ षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने मुद्रादयः ॥ समकरतलपाणिं कृत्वा मध्यमांगुल्यौ विपरीते अनामिका निर्गते बाह्यतः संस्थाप्य तर्जन्याभिनिविष्टकनिष्ठागर्भसंस्थिता सर्वयक्षिणीनां परममुद्रा । अनया बद्धमात्रया सर्वयक्षिण्य आगच्छंति ॥

अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठेनावाहनम् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ह्रीं आगच्छ अमुकयक्षिणि स्वाहा ॥ १ ॥ अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठं विसर्जयेत् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ह्रीं गच्छामुकयक्षिणि शीघ्रं पुनरागमनाय स्वाहा ॥ २ ॥ मुष्टिं तर्जनीं मध्यमांगुलिं प्रसारयेत् । सर्वयक्षिण्यभिमुखीकरणमुद्रा ॥ तत्र मंत्रः—ॐ महायक्षिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ ३ ॥ मुष्टिं कृत्वा प्रसार्याकुंचयेत् । सर्वयक्षिणीसान्निध्यकरणमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ॐ कामेश्वरि स्वाहा ॥ ४ ॥ हस्तं घटाकारेण संस्थाप्य सर्वयक्षिणीहृदयमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ह्रीं ॥ ५ ॥ मुष्टिं कृत्वा तर्जनीं मध्यमां प्रसारयेत् ॥ सर्वयक्षिणीगंधपुष्पधूपदीपमुद्रा ॥ तत्र मन्त्रः—ॐ सर्वमनोहारिणि स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ज्ञात्वा यक्षिणीं साधयेत् ॥ तत्रादौ विचित्रासाधनम् ॥ मंत्रो यथा शिवार्चनचन्द्रिकोक्तः—ॐ विचित्रे चित्ररूपिणि सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः ॥ किंकिणीतन्त्रे—ॐ विचित्ररूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षमेकं जपेन्मंत्रं वटवृक्षतले शुचिः ॥ बंधूककुसुमैश्चैव मध्वाज्यक्षीरमिश्रितैः ॥ दशांशं योनिकुंडे तु हुत्वा देवी प्रसीदति ॥ विचित्रा साधकस्याथ प्रयच्छति समीहितम् ॥ इति विचित्रायक्षिणीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ विभ्रमासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम् ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा ॥ इति त्र्यधिकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—जपेल्लक्षद्वयं मंत्री श्मशाने निर्भयो मनुम् ॥ दशांशं जुहुयात्साज्यं हुत्वा तुष्यति विभ्रमा ॥ पञ्चाशन्मानुषाणां च दत्ते सा भोजनं सदा ॥ किंकिणीतंत्रोक्तविधानं यथा—घृताक्तगुग्गुलैर्होमे दशांशेन कृते सति ॥ विभ्रमा तोषमायाति पंचाशन्मानुषैः सह ॥ ददाति भोजनं दिव्यं प्रत्यहं शंकरोऽब्रवीत् ॥ इति विभ्रमासाधनम् ॥ २ ॥ अथ हंसीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—हंसीहंसहांनेंह्रींस्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रवेशे नग्नगः स्थास्नुर्लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः ॥ पद्मपत्रघृतोपेतमंते होमं दशांशतः ॥ प्रयच्छत्यंजनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ॥ शुद्धश्चेत्तं च गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ इति हंसीसाधनम् ॥ ३ ॥ अथ [1]भिक्षिणीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि

१ मतांतरे—ॐ ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं हूं स्वाहा इति मंत्रः ।

हाँ ह्रीं स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—त्रिपथस्थो जपेन्मंत्रं लक्षसंख्यं दशांशतः ॥ घृतांक्तगुग्गुलैर्होमो भिक्षिणी चिंतितप्रदा ॥ शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः—ऐं महामदे भीषणे ह्रां ह्रूँ स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानं पूर्ववत् ॥ इति भिक्षिणीसाधनम् ॥ ४ ॥ अथ जनरंजिनीसाधनम् ॥ किंकिणीतंत्रे मंत्रो यथा—ॐ क्लें जनरंजिनि स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कदंबाधो जपेन्मंत्रं लक्षद्वयं च साधकः ॥ घृतांक्तगुग्गुलैर्होमं देवी सर्वार्थदा भवेत् ॥ इति जनरंजिनीसाधनम् ॥ ५ ॥ अथ विशालासाधनं मंत्रमहोदधौ—ॐ ऐं विशाले ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—चिंचांतरोरधः स्थित्वा शुचिर्लक्षं जपेन्मनुम् ॥ शतपत्रैर्दशांशेन जुहुयात्तोषिता ततः ॥ रसं ददाति येना सौ नीरोगायुरवाप्नुयात् ॥ शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं विशाले द्राँ द्रूँ क्लीं एह्येहि स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—चिंचावृक्षतले मंत्रैर्लक्षमावर्तयेच्छुचिः ॥ विशाला वितरेत्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् ॥ इति विशालासाधनम् ॥ ६ ॥ अथ मदनासाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—ॐ मदने मदने देवि मामालिंगय संगं देहि देहि श्रीः स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षसंख्यं जपेन्मंत्रं राजद्वारे शुचिः स्मृता ॥ सक्षीरमालतीपुष्पैः कृते होमे दशांशतः ॥ मदनायक्षिणी सिद्धा गुटिकां तं प्रयच्छति ॥ तया मुखस्थया दृश्योऽप्यदृश्यः स्याच्चिरं नरः ॥ इति मदनासाधनम् ॥ ७ ॥ अथ घंटायक्षिणीसाधनं किंकिणीतंत्रे—ॐ ऐं पुरं क्षोभय क्षोभय भगवति गंभीरस्वरे क्लें स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—सुघंटां वादयेन्मंत्री जपेन्मंत्रायुतद्वयम् ॥ ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥ इति घंटायक्षिणीसाधनम् ॥ ८ ॥ अथ कालकर्णीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा—ॐ ल्वें कालकर्णिके टः टः स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षसंख्यमनुं जप्त्वा पलाशैर्मरुजैर्घनैः ॥ मधुन्मत्तैः कृतो होमः कालकर्णी प्रसीदति ॥ सौम्यधरास्यवदनभोगस्तंभकरी भवेत् ॥ सततं तां स्मरेद्धियां विविधाश्चर्यकारिणीम् ॥

१ घृतमधुशर्करागुग्गुलैः । २ अमलीवृक्षस्य । ३ पलाशकाष्ठहोमः ।

इति कालकर्णीसाधनम् ॥ ९ ॥ अथ महाभयासाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–नैरास्थिनिर्मितां मालां गले पाणौ च कर्णयोः ॥ धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ॥ लक्षमेकं जपेन्मंत्रं साधयेन्निर्भयः सुधीः ॥ ततो महाभया सिद्धा ददात्येव रसायनम् ॥ तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥ वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरजीवी भवेन्नरः ॥ किंकिणीतंत्रे–अस्थि³मालाधरो लक्षं श्मशाने प्रजपेन्मनुम् ॥ ततो महाभया सिद्धा यच्छत्यस्मै रसायनम् ॥ तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥ वलिभिः पलितैर्मुक्तो नरश्चारोग्यमाप्नुयात् ॥ इति महाभयासाधनम् ॥ १० ॥ अथ माहेन्द्रीसाधनं प्राकृतग्रंथे–ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलुकुलुचुलुचुलु हंसः स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ किंकिणीतंत्रे–ॐ माहेंद्रि कुलुकुलु हंसः स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–⁴शक्रचापोदये लक्षं निर्गुंडीतलमध्यगः ॥ जपेन्मंत्रं ततस्तुष्टा देवी ⁵पातालसिद्धिदा ॥ इति माहेन्द्रीसाधनम् ॥ ११ ॥ अथ शंखिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे ॥ मंत्रो यथा–ॐ शंखधारिणि शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ॥ प्राकृतग्रंथे यथा–ॐ ह्रीं शंख धारिणि शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं आं स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः॥ अस्य विधानम्–मन्त्रायुतं जपेन्मंत्री प्रातः सूर्योदये सति ॥ मासमेकं जपेदेवं पूजां कुर्याद्दिनेदिने ॥ ⁶शुद्धसंलिप्तपट्टे तु ⁷शुभ्रपुष्पैः ⁸सपायसैः ॥ ⁹दशांशं होमयेत्साज्यैरिन्धनैः करवीरकैः ॥ ¹⁰ददाति शंखिनी तुष्टा नित्यं रूप्यकपंचकम् ॥ इति शंखिनीसाधनम् ॥ १२ ॥ अथ चांद्री (चन्द्रिका) यक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे–ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावद्दृश्येत चन्द्रमाः ॥ प्रतिपत्पूर्वपूर्णांतं तावल्लक्षमिमं जपेत् ॥ अमृतं चन्द्रिका दत्ते पीत्वा यदमरो

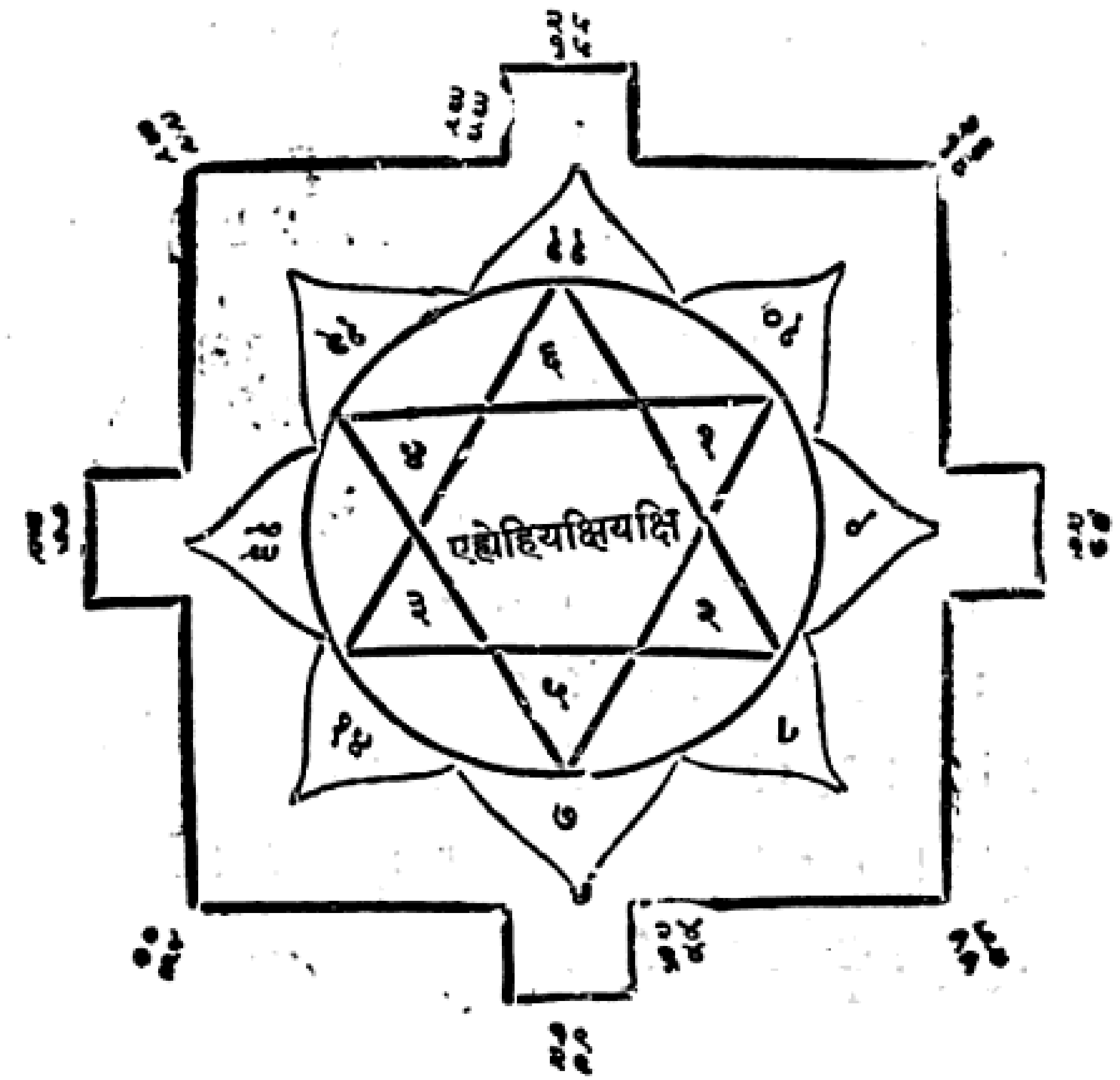
१ मतांतरे क्लीं । २ मनुष्यके गले, कान और हाथके अस्थिकी मालासे । ३ मनुष्यके अस्थिकी मालासे । ४ इन्द्रधनुषके उदयकालमें । ५ पातालसे सिद्धि लाकर देती है । ६ शुद्ध पट्टेपर मूर्ति बनाकर नित्य पूजन करे । ७ सफेद पुष्प । ८ खीर इनसे पूजन करे । ९ कनेरकी लकडी और घृतका दशांश हवन करे । १० तो शंखिनी प्रसन्न होकर नित्य पांच रुपया देती है ।

भवेत्। इति **चन्द्रिकासाधनम्** ॥ १३ ॥ अथ श्मशानीसाधनं किंकिणीतन्त्रे-ॐ हूं ह्रीं स्फूं श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो **मन्त्रः** ॥ **अस्य विधानम्**-चतुर्लक्षमितं मंत्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः ॥ नग्नो[1] यत्तस्तदा तुष्टा पटं[2] यच्छति यक्षिणी ॥ तेनोद्यतो नरो देवि विचरेद्वसुधातले ॥ निश्चयेनानुगृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ इति श्मशानीसाधनम् ॥ १४ ॥ अथ वटयक्षिणीसाधनं मंत्रमहोदधौ ॥ **मंत्रो यथा**-एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः ॥ **अस्य विधानम्**-अस्य यक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः। यक्षिणी देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ विश्रवऋषये नमः शिरसि १ ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ ॥ यक्षिणीदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ एह्येहि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ यक्षि यक्षि तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ वटवृक्षनिवासिनि अनामिकाभ्यां नमः ॥ शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ कुरु कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एह्येहि हृदयाय नमः १ ॥ यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा २ ॥ महायक्षि शिखायै वषट् ३ ॥ वटवृक्षनिवासिनि कवचाय हुम् ४ ॥ शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ कुरु कुरु स्वाहाऽस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ऐं नमः मस्तके १ ॥ ॐ ह्यं नमः दक्षिणनेत्रे २ ॥ ॐ हिं नमः वामनेत्रे ३ ॥ ॐ यं नमः वक्त्रे ४ ॥ ॐ क्षिं नमः दक्षिणनासापुटे ५ ॥ ॐ यं नमः वामनासापुटे ६ ॥ ॐ क्षिं नमः दक्षकर्णे ७ ॥ ॐ मं नमः वामकर्णे ८ ॥ ॐ हां नमः दक्षस्तने ९ ॥ ॐ यं नमः वामस्तने १० ॐ क्षिं नम :वक्षस्थले ११ ॥ ॐ वं नमः दक्षिणपार्श्वे १२ ॥ ॐ टं नमः वामपार्श्वे १३ ॥ ॐ वृं नमः हृदि १४ ॥ ॐ क्षं नम उदरे १५ ॥ ॐ निं नमः नाभौ १६ ॥ ॐ वां नमः ललाटे नमः १७ ॥ ॐ सिं नमः भ्रुवोः १८ ॥ ॐ निं नमः दक्षकट्याम् १९ ॥ ॐ शीं नमः वामकट्याम् २० ॥ ॐ घ्रं नमः दक्षोरौ २१ ॥ ॐ में नमः वामोरौ २२ ॥ ॐ सं नमः नाभौ २३ ॥ ॐ वं नमः

[1] नग्न होकर। [2] मतांतरे-प्रसन्न होकर वस्त्र देती है जिसको धारण करनेसे अदृश्य होता है ॥

दक्षिणजंघायाम् २४ ॥ ॐ सौं नमः वामजंघायाम् २५ ॥ ॐ ख्यं नमः दक्षजानुनि २६ ॥ ॐ कुं नमः वामजानुनि २७ ॥ ॐ रुं नमः दक्षमणिबंधे २८ ॥ ॐ कुं नमः वाममणिबंधे २९ ॥ ॐ रुं नमः दाक्षिणकरे ३० ॥ ॐ स्वां नमः वामकरे ३१ ॥ ॐ हां नमः मूर्ध्नि ३२ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अरुणचंदनवस्त्रविभूषितां सजलतोयदतुल्यतनरुहाम् ॥ स्मरकुरंगदृशं वटयक्षिणीं क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरस्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य पूर्वादि क्रमेण नव पीठशक्तीः पूजयेत्॥ तद्यथा—ॐ कामदायै नमः१॥ ॐ मानदायै नमः२॥ ॐ नक्तायै नमः ३ ॥ ॐ मधुरायै नमः ४ ॥ ॐ मधुराननायै नमः ५ ॥ ॐ नर्मदायै नमः ६ ॥ ॐ भोगदायै नमः ७ ॥ ॐ नंदायै नमः ८ ॥ मध्ये ॐ प्राणदायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ मनोहरायक्षिणीयोगपीठाय नमः'इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिक्रमेण अग्निकोणे एह्येहि हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ निर्ऋति० यक्षियक्षि शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० २ । वायव्ये महायक्षि शिखायै वषट्

वटयक्षिणीपूजनयन्त्रम् ।



शिखाश्रीपा० ३ । ऐं शान्त्ये वटवृक्षनिवासिनिकवचायै हुं कवचश्रीपा० ४ । पश्चिमे शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । पूर्वे कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडङ्गानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ सुनंदायै नमः । सुनंदाश्रीपा० १ । ॐ चन्द्रिकायै नमः । चंद्रिकाश्रीपा० २ । ॐ हासायै नमः । हासाश्रीपा० ३ । ॐ सुलापायै नमः । सुलापाश्रीपा० ४ । ॐ मदविह्वलायै नमः । मदविह्वलाश्रीपा० ५ । ॐ आमोदायै नमः । आमोदाश्रीपा० ६ । ॐ प्रमोदायै नमः प्रमोदा० ७ । ॐ वसुदायै नमः । वसुदाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १ । ॐ रं अग्नये नमः २ । ॐ मं यमाय नमः ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४ । ॐ वं वरुणाय नमः ५ । ॐ यं वायवे नमः ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः ७ । ॐ हं ईशानाय नमः ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९ । वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः ॥ बंधूकपुष्पैर्दशांशतो होमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री वटाधः प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् ॥ तदा सप्तदिनांतरे सिद्धा भवति । मनोवांछितं ददाति ॥ तथा च—लक्षद्वयं जपेन्मंत्रं बंधूकैस्तद्दशांशतः ॥ एवमाराधितो मंत्रः प्रयोगेषु क्षमो भवेत् ॥ निर्मनुष्ये वने गत्वा न्यग्रोधाधस्तले जपेत् ॥ प्रतिघस्रं तमस्विन्यां सहस्रं नियतेंद्रियः ॥ सप्तमे दिवसे प्राप्ते कृत्वा चंदनमंडलम् ॥ तत्राज्यदीपं कृत्वाऽस्मिन् पूजयेद्वटयाक्षिणीम् ॥ तदग्रे प्रजपेन्मंत्रं मनसीत्थं समाहितः ॥ शृणोति नूपुरारावं मंत्री गीतध्वनिं ततः ॥ श्रुत्वैव प्रजपेन्मंत्रं वीतत्रासश्च तां स्मरेत् ॥ ततः प्रत्यक्षतो देवीमीक्षते सुरतार्थिनीम् ॥ तत्कामपूरणात्सा तु ददातीष्टानि मंत्रिणे ॥ किं बहूक्तेन सर्वेष्टपूरणी वटयाक्षिणी ॥ अन्यः

शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—त्रिपथस्थो वटाधःस्थो रात्रौ मंत्रं जपेत्सदा ॥ लक्षत्रयं तदा सिद्धा स्याद्देवी वटयक्षिणी ॥ वस्त्रालंकरणे दिव्ये सिद्धिं रसरसायनम् ॥ दिव्यांजनं च सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ॥ इति वटयक्षिणीसाधनम् ॥१५॥ अथ मेखलासाधनं मंत्रमहोदधौ—ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य पूजादिकं सर्वं वटयक्षिणीवज्ज्ञेयम् ॥ अस्य विधानम्—चतुर्दशाहपर्य्यंतं मधूकाधस्तले[1] शुभे ॥ प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्रं हवनं चरेत् ॥ मधूकपुष्पैर्मध्वक्तैस्तत्काष्ठैश्च हुताशने ॥ संतुष्टैवं कृते देवी प्रयच्छेदंजनं शुभम् ॥ येनाक्तनेत्रो मंत्री वै निधिं पश्येद्धरागतम् ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ हूं मदनमेखले नमः स्वाहा ॥ अस्य विधानम्—मधुवृक्षतले मंत्रं चतुर्दशदिनावधि ॥ प्रजपेन्मेखला तुष्टा ददात्यंजनमुत्तमम् ॥ इति मेखलासाधनम् ॥१६॥ अथ विकलासाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--निजगृहे त्रिमासमध्ये लक्षं जपेत् करवीरपुष्पैर्दशांशतो होमः । अथवा सुराधान्यतो होमः सिद्धिं ददाति ॥ किंकिणीतंत्रे--ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--मासत्रयमध्ये लक्षं जपेत् सिद्धा भवति मनोवांछितं च ददाति ॥ इति विकलासाधनम् ॥ १७ ॥ अथ लक्ष्मीसाधनं दत्तात्रेयतंत्रे-ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--वटवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ महालक्ष्मीर्यक्षिणी च स्थिरा लक्ष्मीश्च जायते ॥ अयुतजपेन सिद्धिः ॥ मतांतरे ॐ ऐं लक्ष्मीं वं श्रीं कमलधारिणि हंसः स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षं जपेत् करवीरपुष्पदशांशतो होमः । तदा प्रसन्ना भवति रसायनं ददाति ॥ इति लक्ष्मीसाधनम् ॥ १८ ॥ अथ मानिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे—ॐ ऐं मानिनि ह्रीं एह्येहि सुन्दरि हसहसमिह संगमहः स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चतुष्पथे स्थितो लक्षं सपादं प्रजपेद्गुणु ॥ उंवाहुकुसुमैरक्तैर्होमयेद्घृतमिश्रितैः[2] ॥

१ महुवाके नीचे। २ रक्तकमल।

मानिनी जायते सिद्धा दिव्यखड्गं प्रयच्छति ॥ तत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन्नखंडं राज्यमाप्नुयात् ॥ इति मानिनीसाधनम् ॥ १९ ॥ ॥ अथ शतपत्रिकासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शतपत्रवनांतस्थो लक्षसंख्यं जपेन्मनुम् ॥ क्षीराज्यं होमयेद्यस्तु रससिद्धिं च भूनिधिम् ॥मतांतरे–कमलवने सेवंतीवने वा लक्षं जपेत् । यवघृतदशांशतो होमेन सिद्धा भवति दिव्यरसायनं च ददाति ॥ इति शतपत्रिकासाधनम् ॥ २० ॥ अथ सुलोचनासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ क्रौं सुलोचनादिदेवि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–नदीतीरे स्थितो लक्षत्रयं मंत्रं जपेदनु ॥ घृतहोमे दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ॥ ददाति पादुकायुग्मं यदारूढो भुवस्तलम् ॥ मनःपवनवेगेन याति चायाति वेगवत्[1] ॥ ॥ इति सुलोचनासाधनम् ॥ २१ ॥ अथ सुशोभनासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने देवि श्रीं क्षः स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रक्तमाल्यांबरो मंत्री चतुर्दशदिनं जपेत् ॥ ततः सिद्धिर्भवेद्देवि शोभना भोगदायिनी ॥ इति शोभनासाधनम् ॥ २२ ॥ अथ कपालिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लें क्लौं हससकल ह्रीं फट् स्वाहा ॥ इत्येकाविंशशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–महाव्रतधरो नित्यं कपालौदनभोजनः ॥ लक्षद्वयजपस्यांते कपालं लभते मुनिः ॥ आकाशगमनं दूराच्छ्रवणं रूपवर्तनम् ॥ दूरदर्शनमित्यादि साधकस्य प्रजायते ॥ मतांतरे–ॐ हूं ह्रां[2] कालि करालिनि ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट् ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने प्रतिदिनमष्टोत्तरशतं जपेत् ॥ अजामांसरक्तपुष्पेण बलिं दद्यात् । एवं कृते सप्तदिनांतरे कपालिनी सिद्धा भवति मनोवांछितपदार्थं च ददाति । अग्निगुरुब्राह्मणेषु व्ययमकृत्वा यदि पृथिव्यां निखनेत् तदा रुष्टा भवति कदापि न ददाति ॥ इति कपालिनीसाधनम् ॥ २३ ॥ अथ विलासिनीसाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ विरूपाक्ष विलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लें स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सर

१ मनोवेगसे गमन कर सकता है । २–मतांतरे ह्रूं ।

स्तीरे जपेन्मंत्रमर्द्धलक्षप्रमाणतः ॥ घृतगुग्गुलुहोमेन देवी सौभाग्यदायिनी ॥ इति विलासिनीसाधनम् ॥ २४ ॥ अथ नटीसाधनं भूतडामरतंत्रे—ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वामित्रेण धीमता ॥ ज्ञाता या साधिता विद्या बला चातिबला प्रिये॥अशोकतलं गत्वा चंदनेन सुमंडलं कृत्वा मध्ये मूलं विलिख्य मूलेन देवीं समभ्यर्च्य धूपं च दत्त्वा ध्यायेत् ॥ ॐ त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं सहस्रं च दिने दिने ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्य्यात्तस्याश्च पूजनम् ॥ अर्द्धरात्रे भयं दत्त्वा किंचित्साधकसत्तमे ॥ सुदृढं साधकं ज्ञात्वा याति सा साधकालयम् ॥ विद्याभिः सकलाभिश्च किंचित्स्मेरमुखी ततः ॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते ॥ तच्छ्रुत्वा साधकश्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया ॥ मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः ॥ कृत्वा संतोषयेद्भक्त्या नटिनी तत्करोत्यलम् ॥ माता स्याद्यदि सा देवी पुत्रवत्पालयेन्मुदा ॥ सिद्धिद्रव्यं स्वर्णशतं सा ददाति दिने दिने ॥ अतीतानागतां वार्तां सर्वां जानाति साधकः ॥ भार्या स्याद्यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् ॥ अन्नाद्यैरुपहारैश्च ददाति कामभोजनन् ॥ सदा स्वर्णशतं तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये ॥ यद्यद्वांछति सर्वं च ददाति नात्र संशयः ॥ अन्यः किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पूर्णाशोकतले गत्वा चन्दनेन सुमंडलम् ॥ कृत्वा देवीं समभ्यर्च्य धूपं दत्त्वा सहस्रकम् ॥ मंत्रमावर्तयेन्मासं निशायां भोजनं ततः ॥ रात्रौ पजा शुभा कार्या जपेन्मंत्रं निशार्द्धके ॥ नटी देवी समागत्य निधानं रसमंजनम् ॥ ददाति मंत्रिणे मंत्रांदिव्ययोगेन निश्चितम् ॥ अन्यो मंत्रः सिद्धभाण्डागारे—ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-कुंकुमेन भूर्जपत्रे मंडलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमंत्रं विलिख्य गंधाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना संपूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत् । ततः पौर्णमास्यां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् सकलरात्रिपर्यंतं जपेत् । प्रभाते नियतसमये

---

१ पूर्णिमाको अशोकके तले चन्दनसे मंडल बनाकर। २ चंदनकी मालासे जप करे। ३ निधिरस अञ्जन देती है।

मं० म० आगच्छति। सुंदरमाभूषणं ददाति नृत्यं करोति॥ इति नटीसाधनम्॥ २५॥ अथ कामेश्वरीसाधनं भूतडामरतंत्रे–'ॐ आगच्छ उ०खं० १
॥६१६॥ कामेश्वरि स्वाहा॥' इति दशाक्षरो मंत्रः॥ अथ ध्यानम्–कामेश्वरीं शशांकास्यां खेलत्खंजनलोचनाम्॥ मदालोलगतिं कांतां कुसु यक्षि० तं०
मास्त्रशिलीमुखाम्॥ एवं ध्यात्वा भूर्जपत्रे गोरोचनया प्रतिमां विलिख्य तां देवीं पूजयेत्। घृतदीपं दत्त्वा शय्यामारुह्य एकाकी सहस्रं तर२
जपेत्॥ मासांते वा पूजयेत्। ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति। आज्ञां देहीति भाषते। साधकस्य भार्या भवति। प्रतिदिनं शयने दिव्या
लंकारं परित्यज्य गच्छति। परस्त्री परिवर्जनीया॥ किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरि स्वाहा॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः॥
अस्य विधानम्–एकासने शुचौ देशे त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम्॥ मासमेकं जपेन्मंत्रं तदंतेऽर्चां समाचरेत्॥ पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः॥
रात्र्यामभ्यर्च्य तं मंत्रं जपेन्मंत्री प्रसन्नधीः॥अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति॥ रसं रसायनं वित्तं वस्त्रालंकरणानि च॥ स्त्रीभावे
च यदा तस्यै दद्यात्पाद्यादिकं ततः॥ सुप्रसन्ना तदा देवी साधकं तोषयेत्सदा॥ अन्नाद्यै रतिभोगेन पतिवत्पालयेत्सदा॥ नीत्वा रात्रिं
सुखैश्वर्य्यै दद्याच्च विपुलं धनम्॥ दत्त्वाऽलंकरणं दिव्यं प्रभाते याति निश्चितम्॥ एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात्कामरूपिणः॥
इति कामेश्वरीसाधनम्॥ २६॥ अथ स्वर्णरेखासाधनम्॥ उड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ वर्कर्शाल्मले सुवर्णरेखे स्वाहा इति त्रयोदशा
क्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–एकलिंगं समभ्यर्च्य खंडकेनातिभाविता॥ पूर्वसंध्यां समारभ्य कृष्णादि सुमतिर्जपेत्॥ सहस्राष्टमितं
मासं तदंते निशि भोजनम्॥ जपन्तं च पुनर्मंत्रमर्द्धरात्रे प्रयच्छति॥ दिव्यालंकरणं देवि निधानं निजमुत्तमम्॥ षण्मासं पूजिता
दिव्यदेहं तस्य करोति सा॥ इति स्वर्णरेखासाधनम्॥ २७॥ अथ सुरसुंदरीसाधनं भूतडामरतंत्रे–उन्मत्तभैरव उवाच॥ अथातः
सप्रवक्ष्यामि यक्षिणीसाधनोत्तमम्॥ सर्वार्थसाधनं नाम्न देहिनां सर्वसिद्धिदम्॥ अतिगुह्यं महाविद्या देवानामपि दुर्लभा॥ मासमभ्य
र्चनं कृत्वा यक्षेशो भूधनाधिपः॥ तामासाद्य प्रवक्ष्यामि सुराणां सुंदरि प्रिये॥ अस्या अभ्यर्चने चैव राजत्वं लभते नरः॥ मंत्रो यथा– ॥ ६१६ ॥

१ एकलिंग महादेवके समीप पूजन करके कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे प्रातःकाल आठ हजार नित्य जपे, रात्रिमें भोजन करे फिर अर्द्धरात्रिमें जपे, मास एक पीछे पुनः दिन पंद्रह आधीरातको जपे तो देवी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रिमें आवेगी, द्रव्य अलंकारादि प्रदान करेगी और छः मास पूजन करनेसे दिव्य देह कर देती है॥

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–प्रातः समुत्थाय स्नानादिकं समाप्य आचम्य 'ॐ सहस्रार हुं फट्' इति दिग्बंधनं कृत्वा मूलमंत्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मंत्रेण षडंगं कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः–ॐ हृदयाय नमः १ ॥ आगच्छ शिरसे स्वाहा २ ॥ सुर शिखायै वषट् ३ ॥ सुंदरि कवचाय हुं ४ ॥ स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ ॐ आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्--पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ॥ इति ध्यात्वा मूलेन पाद्यादिकं शुभं दद्यात्॥ पुनर्धूपं तथा दीपं नैवेद्यं मूलमंत्रतः ॥ गंधचंदन तांबूलं कर्पूररसशोभितम् ॥ यत्नतः पूजयेन्मंत्रं त्रिसंध्यं च दिने दिने ॥ सहस्रैकप्रमाणेन ध्यायेद्देवीं सदा बुधः ॥ मासांते दिवसं प्राप्य बलिपूजां सुशोभनाम् ॥ कृत्वा च प्रजपेन्नित्यं निशीथे याति सुंदरी ॥ सुदृढं साधकं मत्वाऽऽयाति सा साधकालये ॥ सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः ॥ दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥ सचंदनं सुमनसो दत्त्वाभिलषितं वदेत् ॥ मातरं भगिनीं वापि भार्य्यां वा भक्तिभावतः ॥ यदि माता तदा वित्तं द्रव्यं च सुमनोहरम् ॥ भूपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ॥ पुत्रवत्पालितं लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ॥ स्वसा ददाति वित्तं च दिव्यं वस्तु तथैव च ॥ दिव्यकन्यां समानीय नागकन्यां दिने दिने ॥ भ्रातृवत्पालितं लोके नामभिस्तु मनोगतैः ॥ भार्या स्याद्यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥ राजेन्द्रं सर्वराज्ञां तु विदध्यात्साधकोत्तमम् ॥ स्वर्गलोके च पाताले गतिर्भवति नान्यथा ॥ यद्यद्ददाति सा देवि कथितुं नैव शक्यते ॥ तया सार्द्धं च संभोगं यदि दैवात्करोति सः ॥ अन्यस्त्रीगमनं त्याज्यमन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥ अन्यः किंकिणीतंत्रे–ॐ आगच्छागच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः॥ अथ मंत्रसिद्धभाण्डागारोक्तमंत्रः–ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः॥ प्राकृतग्रंथोक्तमन्त्रः–ॐ नमो आगच्छ सुरसुंदरि स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–मूलमंत्रेण न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्रांबरधारिणीम् ॥ पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ॥ इति ध्यात्वा एकलिंगसमीपे पूजनं कृत्वा

१ मतांतरे पवित्रगृहं गत्वा ।

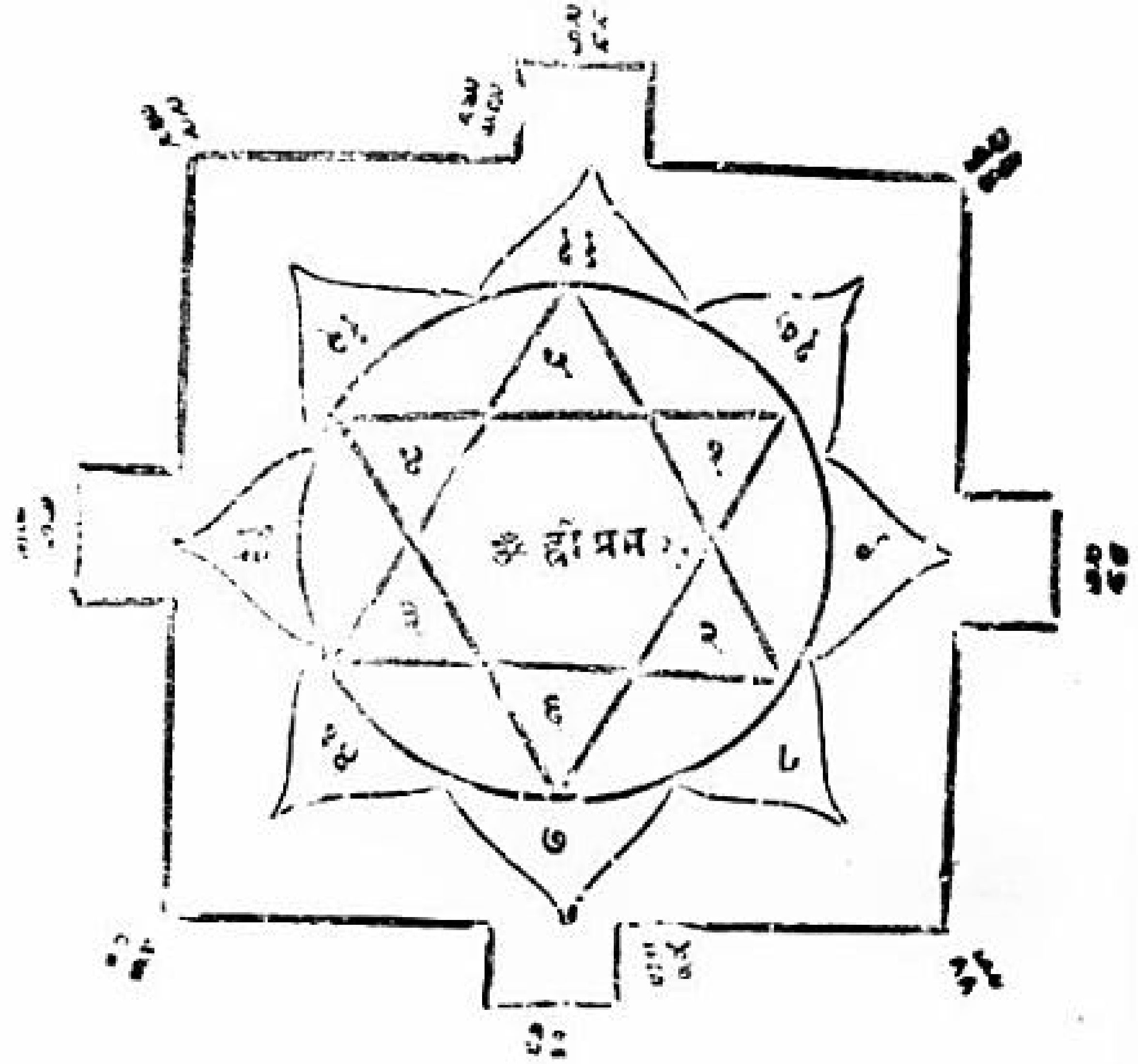
शर्कराज्यगुग्गुलोर्दशांशतो होमः ॥ त्रिसंध्यं पूजयेत् त्रिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् ॥ मासाभ्यंतरे आगतायै चन्दनोदकेनार्घो देयः । मातृ भगिनीभार्य्याकृत्यं करोति यदा माता भवति सिद्धद्रव्यं ददाति यदि भगिनी भवति तदा देवकन्यादिकां भार्यामानीय ददाति यदि भार्य्या भवति तर्हि सर्वैश्वर्य्यं सर्वेषां परिपूरयेत् ॥ वर्जयेदन्यस्त्रिया सह शयनम् अन्यथा विनश्यति ॥ तथा च किंकिणी तंत्रे—एकलिंगं महादेवीमिष्ट्वा गुग्गुलुना घृतम् ॥ जपेन्मंत्रं त्रिसंध्यं च नित्यं च त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं समाख्यातं यक्षिणी सुरसुंदरी ॥ दत्त्वार्घं प्रणतं मंत्री कृते सा त्वं किमिच्छसि ॥ देवि दारिद्र्यदग्धोऽस्मि तन्मे नाशय नाशय ॥ तस्मै ददाति सा तुष्टा निधानं चिरजीवितम् ॥ मंत्रकोशे लक्षजपः पंचामृतदशांशतो होमः। अष्टमीतिथौ कुमारीपूजनं भूशय्या एकान्नं क्षाराम्लादि वर्ज्यं चिंतितार्थं ददाति इति विशेषः ॥ इति सुरसुंदरीसाधनम् ॥ २८ ॥ अथ मनोहरासाधनं भूतडामरतंत्रे—ततोऽन्यसाधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्—नदीतीरं समासाद्य कुर्यात्स्नानादिकं ततः ॥ पूर्ववत्सकलं कार्यं चन्दने मंडलं लिखेत् ॥ स्वमंत्रं तत्र संलिख्यावाह्य ध्यायेन्मनोहराम् ॥ अथ ध्यानम्—कुरंग नेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिंबाधरां चन्दनगंधमाल्याम् ॥ चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां नमामि ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा यजेद्देवीमगरुधूपदीपकैः ॥ गंधपुष्परसैश्चैव तांबूलाद्यैश्च मध्यतः ॥ दत्त्वायुतं प्रतिदिनं जपेन्मंत्रं प्रसन्नधीः ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्य्यात्स जपमुत्तमम् ॥ आनिशीथं जपेन्मंत्रं ज्ञात्वा साधकनिश्चयम् ॥ गत्वा च साधकाभ्याशे सुप्रसन्ना मनोहरा ॥ वरं वरय शीघ्रं त्वं यस्ते मनसि वर्तते ॥ साधकेन्द्रोऽपि तां भक्त्या पाद्याद्यैरुपचारकैः ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं योगिन्या अर्पयेन्मुदा ॥ चन्दनोदकपुष्पेण फलेन च मनोहरा ॥ ततोऽर्चिता प्रसन्ना स्यात्पुष्णाति प्रार्थितं च यत् ॥ स्वर्णभारं साधकाय सा ददाति दिने दिने ॥ सावशेषं व्ययं कुर्य्यात्स्थिते सा तु न दास्यति ॥ अन्यस्त्रीगमनं कृत्वा महापातकवान्भवेत् ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं तवाग्रे सत्यमीरितम् ॥ अन्या

१ मतांतरे गुग्गुलुधूपं दत्त्वा ॥

हतगतिस्तस्य भवतीति न संशयः ॥ इति ते कथिता विद्या सगोप्या या सुरासुरैः ॥ तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽन्यत्परमेश्वरि ॥ ॥ अन्यो भूतडामरतंत्रे मंत्रो यथा–ॐ आगच्छ मनोहरे स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ शिवार्चनचान्द्रिकायाम्– ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ ध्यानम्--कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिंबाधरां चंदनगन्धमाल्याम् ॥ चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां नमामि ॥ १ ॥ अस्य विधानं भूतडामरतंत्रे--नदीसंगमे गत्वा चन्दनेन मंडलं कृत्वा अगरुधूपं दत्वा एकमासोपरि आगतां तदा पूजयेत्। चन्दनेनार्घ्यो देयः। पुष्पफलैरेकचित्तेनार्चनं कर्तव्यम्। अर्धरात्रे नियतमागच्छति। आगतायां सत्यामाज्ञां देहि इति वदति। सुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति॥ तदुक्तं शिवार्चनचान्द्रिकायाम्-नदीतीरे शुभे देशे चन्दनेन सुमंडलम् ॥ विधिना पूजयेद्देवीं ततो मंत्रायुतं जपेत् ॥ त्रिसप्ताहं जपेदेवं प्रसादाद्विरमेत् खलु ॥ दीनाराणां सहस्रैकं व्ययं कुर्य्याद्दिनेदिने ॥ विना व्ययेन सा क्रुद्धा न ददाति कदाचन ॥ किंकिणीतंत्रे -आदौ षट्कोणरत्नेन लेखनीयं श्वेतवस्त्रं परिधेयं श्वेतासनं च ॥ सप्तदिनैः प्रसन्ना भवति शतं दीनाराणां प्रतिदिनं ददाति ॥ इति मनोहरासाधनम् ॥ २९ ॥ अथ प्रमदासाधनं मंत्रमहोदधौ- ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य प्रमदामंत्रस्य मनुर्ऋषिः। गायत्री छंदः। प्रमदा देवता। ह्रीं शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मनुऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। प्रमदादेवतायै नमः हृदि ३। ह्रींशक्तये नमः पादयोः ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं प्रं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं दें अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं स्वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः हां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं नमः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं प्रं नमः शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं मं नमः शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं दें नमः कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं स्वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः हां नमः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ केयूरमख्याभरणाभिरामां वराभये संदधतीं करा

भ्याम् ॥ संक्रंदनाद्यामरसव्यपादां सत्कांचनाभां प्रमदां भजामि ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठे देवताः संस्थाप्य ‘ ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः’ इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये । ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य ‘ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये प्रमदे एह्येहि नमः’ इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथाच षट्कोणसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च–ॐ ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रूं मं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रैं दें कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रौं स्वां नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रः ह्रां अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये

प्रमदायक्षिणीपूजनयन्त्रम् ।



तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ सुनंदायै नमः । सुनंदाश्रीपा० १ । ॐ चन्द्रिकायै नमः । चान्द्रिकाश्रीपा० २ । ॐ हासायै नमः । हासाश्रीपा० ३ । ॐ सुलापायै नमः । सुलापाश्रीपा० ४ । ॐ मदविह्वलायै नमः । मदविह्वलाश्रीपा० ५ । ॐ आमोदायै नमः । आमोदाश्रीपा० ६ । ॐ प्रमोदायै नमः । प्रमोदाश्रीपा० ७ । ॐ वसुदैन्यकायै नमः । वसुदैन्यकाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षट्लक्षजपः ॥ जपदशांशतो घृतहोमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री पुनर्निर्जने कानने रात्रौ प्रतिदिनमयुतं जपेत् ॥ पायसेन प्रतिदिनं दशांशतो होमः ॥ तदा त्रिसप्तदिवसे आगत्येष्टं ददाति ॥ तथाच—रसलक्षं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयाद्धृतैः ॥ निर्जने कानने रात्रावयुतं नियतं जपेत् ॥ सहस्रं पायसान्नेन हुत्वा शयनमाचरेत् ॥ त्रिसप्तदिवसं यावदेवमाचरतो निशि ॥ देवी दृग्गोचरा भूयाद्दद्यादिष्टानि मंत्रिणे ॥ प्रमदाभेदेन प्रमोदासाधनं मंत्रमहोदधौ—ह्रीं प्रमोदे स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—न्यासादिकं सर्वं उपयुक्तं ज्ञेयम् ॥ सरितो निर्जने तीरे मंडले चन्दनैः कृते ॥ जपहोमौ विधायोक्तौ प्रमोदां पश्यति ध्रुवम् ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अर्द्धरात्रे समुत्थाय सहस्रैकं जपेन्मनुम् ॥ मासमेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम् ॥ इति प्रमदासाधनम् ॥ ३० ॥ अथानुरागिणीसाधनं भूतडामरतंत्रे—महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं आगच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे—ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे—ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कुंकु

मेन भूर्जपत्रे देवीप्रतिमां विलिख्य तस्या उदरेऽष्टदलमालिख्य तन्मध्ये मंत्रं विलिख्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशां नानारत्नविभूषिताम् ॥ मंजीरहारकेयूररत्नकुंडलमंडिताम् ॥ एवं ध्यात्वा मूलमंत्रेण त्रिसंध्यमभ्यर्चयेत् ॥ तथाच–कुंकुमेन समालिख्य भूर्जे देवीं सलक्षणाम् ॥ प्रतिपद्दिनमारभ्य पूजयेत्कुसुमादिभिः ॥ धूपदीपविधानैश्च त्रिसंध्यं पूजयेन्मुदा ॥ पूजनांते सहस्राणि त्रिसंध्यं परिवर्तयेत् ॥ पूर्णिमां प्राप्य गंधाद्यैः पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ घृतदीपं ततो धूपं नैवेद्यं च मनोहरम् ॥ रात्रौ च दिवसे जाप्यं कुर्य्याच्च सुसमाहितः ॥ [१]प्रभातसमये याति साधकस्यांतिकं मुदा ॥ प्रसन्नवदनो भूत्वा तोषयेदतिभोजनैः ॥ देवदानवगंधर्वविद्याधृग्यक्षरक्षसाम् ॥ कन्याभी रत्नभूषाभिः साधकेंद्रे मुहुर्मुहुः ॥ चर्व्यचोष्यादिकं द्रव्यं सा ददाति सदा ध्रुवम् ॥ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये ॥ समर्पयति साऽऽनीय साधकाज्ञानुरूपतः ॥ सदा.[२]स्वर्णशतं तस्मै प्रयच्छति दिने दिने ॥ साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निजमंदिरम् ॥ तस्या वरप्रसादेन चिरंजीवी निरामयः ॥ सर्वज्ञः सुंदरः श्रीमान्सर्वेशो भवति ध्रुवम् ॥ सार्द्धमासत्रयाद्देवि साधकेन्द्रो दिने दिने ॥ गुह्याद्गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात्प्रकीर्तिता ॥ इत्यनुरागिणीसाधनम् ॥ ३१ ॥ अथ नखकेशिकासाधनं किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रीं नखकेशिके कनकावति स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–[३]गत्वा यक्षगृहे मंत्री नकाशी प्रजपेन्मनुम् ॥ एकविंशे दिने जाते कुर्यात्पूजां यथाविधि ॥ आवर्तयेत्ततो मंत्रमेकचित्तोऽतिसंयतः ॥ निशार्द्धे वांछितं कामं देवी तस्य प्रयच्छति ॥ इति नखकेशिनीसाधनम् ॥ ३२ ॥ अथ नेमिनी (भामिनी) प्रियासाधनं प्राकृतग्रंथे–ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–दिनत्रयं[४] निराहारः सति सोमग्रहे जपेत् ॥ यावन्मुक्ति ततो जप्त्वा लभेदिच्छितमुत्तमम् ॥ इति नेमिनीसाधनम् ॥ ३३ ॥ अथ पद्मिनीसाधनं भूतडामरतंत्रे–ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि वल्लभे स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे–ॐ आगच्छ पद्मिनि

१ मतांतरे–'अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति' इति पाठः । २ पाठांतरे–'दीनाराणिसहस्राणि प्रत्यहं परितोषिता' इति पाठः । ३ गंधर्वगृहे अथवा अपामार्गसमीपे । ४ प्रथम तीन दिन निराहार व्रत करे । चन्द्रग्रहणे मोक्षपर्यंतं जपेत मनोवांछितं ददाति ।

स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ किंकिणीतंत्रे–ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा॥इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–भूतडामरतंत्रे मंत्रासिद्ध भाण्डागारे वा–कुंकुमेन भूर्जपत्रे प्रतिमां विलिख्य तस्य वक्षस्थले मूलमंत्रं लिखित्वा ध्यायेत् ॥ पद्मांगनां श्यामवर्णां पीनोन्नतपयोधराम् ॥ कोमलांगीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम् ॥१॥ एवं ध्यात्वा गंधाक्षतपुष्पधूपदीपैर्विधिना संपूज्य त्रिसंध्यं त्रिसहस्रं जपेन्मासमेकं यावत् ॥ ततः पूर्णिमायां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् ॥ सकलरात्रिपर्यंतं जपेत् ॥ प्रभाते नियतसमये आगच्छति साधकस्य भार्या भवति॥ तथाच–भूत्वा भार्या साधकं हि तोषयेद्विविधैः सुखैः ॥ भोग्यैर्द्रव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिने दिने ॥ पातिव्रत्यपालितं लोके नित्यं स्वर्गे च सर्वदा ॥ त्यक्त्वा भार्यां भजेत्तां च साधकश्च सदा प्रिये ॥ अथ किंकिणीतंत्रोक्तविधानम्--एकलिंग गृहस्थाने चन्दनेन सुमंडलम्॥ कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेदत्र पद्मिनीम्॥ धूपं च गुग्गुलं कृत्वा जपेन्मंत्रसहस्रकम् ॥ मासमेकं ततः पूजां कृत्वा रात्रौ पुनर्जपेत् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी दत्ते दिव्यांजनं शुभम् ॥ पद्मिनीभेदेन पद्मावतीसाधनं प्राकृतग्रंथे--ॐ पद्मावति स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः ॥ पञ्चमे वा दशांशतो होमः । तदा अष्टमहासिद्धी र्ददाति ॥ मतांतरे–नानाचरणपद्मावति स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--दशलक्षजपः घृतगुग्गुलुयुत सेवंतीपुष्पेण दशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति । अष्टभोगान् प्रतिदिनं ददाति ॥ तंडुलमाषान्नकलशमापूर्य तदग्रे जपं कुर्यात् ॥ यद्दिने कलशेऽन्नं न दृश्यते तदा प्रसन्ना भूत्वा सिद्धिं ददाति ॥ मतांतरे--ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावति आगच्छागच्छ कार्यं कुरु कुरु (जहां भेजूं वहां जावो जो मंगाऊँ सो आन देवो न आन देवो तो श्रीपार्श्वनाथकी आन) सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति त्र्यधिक षष्ट्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–पर्वाग्निकोणे मुखं वा कार्यम् ॥ कार्तिककृष्णत्रयोदशीमारभ्य कार्तिकशुक्ला प्रतिपदा यावत् दिनत्रयं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् तदा सिद्धा भवति मनसेप्सितं पदार्थं समानीय साधकाय ददाति॥इन्द्रजाले–ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति भवति ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–अर्द्धरात्रे मृत्तिकामालया अष्टोत्तरसहस्रं जपेत् । मृत्तिकापात्रे

घृतदीपं प्रज्वाल्य यवोपरि संस्थाप्य तदग्रे जपेत् । एवं कृते एकविंशतितमे दिने दर्शनं ददाति ॥ इति पद्मिनीसाधनम् ॥ ३४ ॥ अथ स्वर्णावती (कनकावती) मंत्रसाधनम् ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे मंत्रो यथा—ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—वटवृक्षतलं गत्वा मद्यं मांसं च दत्त्वा सहस्रं जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्य्यात्।अष्टमरात्रौ सा सर्वालंकारसंयुता आगच्छति साधकस्य भार्य्या भवति । द्वादशजनानां वस्त्रालंकारभोजनानि ददाति ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--बिल्ववृक्षतले कुर्य्याच्चन्दनेन सुमंडलम् ॥ यक्षिणीं पूजयेत्तत्र नैवेद्यमुपकल्पयेत् ॥ शश[1]मांसं ततस्तस्मिन्मंत्रमावर्तयेद् बुधः ॥ सहस्रं प्रजपेन्नित्यं यावत्सप्तदिनं भवेत्॥ अथागत्य ददात्यस्मै मंत्रं चांजनमुत्तमम्॥ तत्प्रभावान्नरः पश्येन्निधानमविशंकितम् ॥ अन्यो भूतडामरतंत्रे--ॐ ह्रीं रक्तवर्मिणि आगच्छ कनकावति स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैकमनाः प्रिये ॥ गत्वा वटतटं देवीं पूजयेत्साधकोत्तमः ॥ प्राणायामं षडंगं च [2]माययाथ समाचरेत् ॥ ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ अथ ध्यानम्--ॐ प्रचंडवदनां गौरीं पद्मबिंबाधरां प्रियाम् ॥ रक्ताम्बरधरां रामां सर्वकामफलप्रदाम् ॥ एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतं साधकोत्तमः ॥ सप्ताहं तु समभ्यर्च्य अष्टमे विधिमाचरेत् ॥ सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः ॥ अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्यै दिने दिने ॥ कायेन मनसा वाचा प्रजपेच्च दिने दिने ॥ आनिशीथं जपेन्मंत्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् ॥ साधकेन्द्रं दृढं ज्ञात्वा याति सा साधकालये ॥ साधकोऽपि च तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः ॥ ततः सपरिवारेण भार्या स्यात्कामभोजनैः ॥ वस्त्रभूषादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमंदिरम् ॥ एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः ॥ आत्मभार्य्यां परित्यज्य स्वीकुर्यात्तां विचक्षणः ॥ मतांतरे अन्यो मंत्रः—ॐ कनकावति करवीरके स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कृष्णपक्षाष्टमीमारभ्य अमावस्यापर्यंत प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत्। निंबसमिदाज्यैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । तदा होमभस्मनाभिमंत्रितेन तिलकं कुर्य्यात् ।

१ शशमांसेन बलिं दद्यात् । २ मायया ह्रीं इति षडंगादिकं कुर्य्यात् ।

अदृश्यो भवति ॥ इति कनकावतीसाधनम् ॥ ३५ ॥ अथ रतिप्रियासाधनं भूतडामरतंत्रे ॥ ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुंदरि स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारोक्तमंत्रः—ॐ आगच्छ रतिकारि स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—श्वेतपटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रसर्वालंकारभूषितामुत्पलहस्तां कुमारीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ सुवर्णवर्णां गौरांगीं सर्वालंकारभूषिताम् ॥ नूपुरांगदहाराढ्यां भजेऽहं पुष्करेक्षणाम् ॥ एवं ध्यात्वा गंधाक्षततांबूलजातीफलैः सह कुमारीं मूलमंत्रेण पूजयेत् ॥ ॥ तथाच—एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रं दद्यान्मूलेन साधकः ॥ घृतदीपं तथा गंधं पुष्पं तांबूलमेव च ॥ मासांते दिवसं प्राप्य कुर्य्यात्पूजादिकं शुभम् ॥ तावन्मंत्रं जपेद्विद्वान् यावदायाति सुंदरी ॥ ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे याति निश्चितम् ॥ साधकाज्ञानुरूपेण सा प्रयाति दिने दिने ॥ निर्जने प्रांतरे देशे सिद्धा स्यान्नात्र संशयः ॥ त्यक्त्वा भार्य्यां भजेत्तां तु अन्यथा च विनश्यति ॥ मंत्रसिद्धभाण्डागारे विशेषः ॥ यदि भगिनी भवति तदा योजनमात्रात्स्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालंकारभोजनानि च ददाति ॥ किंकिणीतंत्रोक्तमंत्रः—ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शंखलिखे पटे देवीं गौरवर्णां धृतोत्पलाम् ॥ सर्वालंकारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेत्पुनः ॥ जातीपुष्पैः सोपचारैः सहस्रं तु ततो जपेत् ॥ सप्ताहं मंत्रवाँस्तस्याः कुर्यादर्चां सुभाषिताम् ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ पंचविंशतिदीनारान् प्रत्यहं सा प्रयच्छति ॥ ३६ ॥ इति षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधनं समाप्तम् ॥

॥ अथ यक्षिणीप्रसंगान्नानारूपयक्षिणीसाधनप्रारंभः ॥ तत्रादौ धनदारतिप्रियायक्षिणीपञ्चाङ्गप्रारंभः ॥ रुद्रयामले—प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम् ॥ येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद्वद ॥ १ ॥ श्रुत्वा गौरीवचः शंभुः स्मितचारुशुभाननः ॥ शृणु त्वं देवदेवेशि दारिद्र्यस्य विनाशकम् ॥ २ ॥ पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने ॥ विद्या दारिद्र्यसंहंत्री यक्षिणी पापखण्डिनी ॥ ॥ ३ ॥ तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुंदरी ॥ ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ॥ ४ ॥ निर्धनो वा महीपो वा

१ श्वेतवस्त्रपर देवीका चित्र लिख सुनहरे वस्त्रालंकारादिसे भूषित करके कमल हाथमें लिये ऐसी कुमारीका ध्यान करे।

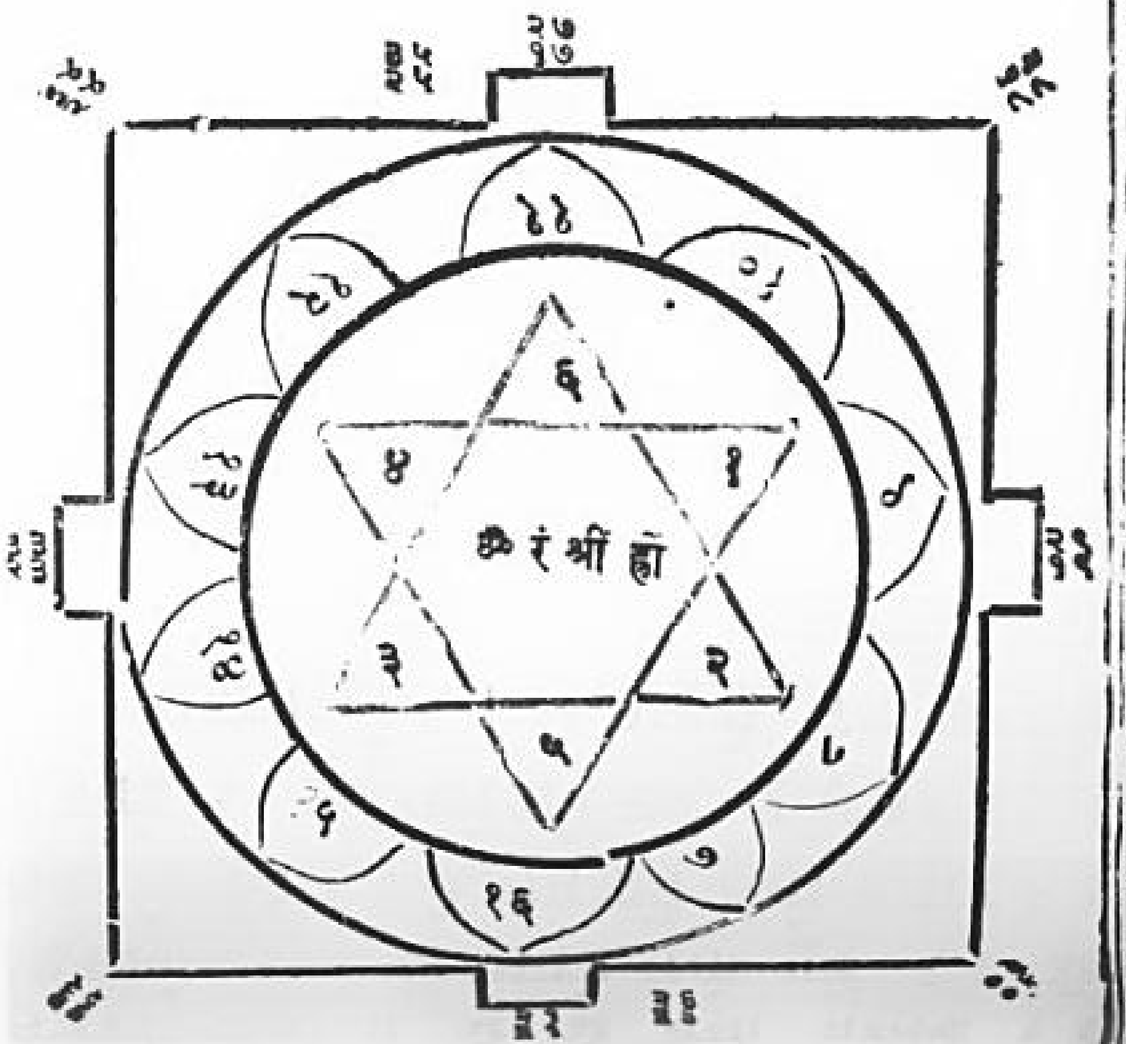
विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात् ॥ श्रुत्वा कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ॥ ५ ॥ तच्छ्रुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति ॥ कृपा ते विद्यते कांत तदा त्वं मां प्रबोधय ॥ ६ ॥ श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्या वाक्यमेवं प्रहस्य च ॥ शंभुः प्राह न जानासि पार्वत्या मूर्तिरेव सा ॥ ७ ॥ यां श्रुत्वा याति रंकोऽपि भूपालत्वं न संशयः ॥ विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ॥ ८ ॥ याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि सर्वदा ॥ वर्षेणापि स्मरन्मंत्रं भवेद्बहुधनो नरः ॥ ९ ॥ नो संस्पृशति दारिद्र्यं तार्क्ष्यं भोगिकुलं यथा ॥ अस्य मंत्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वति ॥ १० ॥ नांगन्यासः करन्यासो न च्छन्दो ऋषिर्दैवतम् ॥ कुबेरस्य मतो नास्याः पूजापि क्रियते तथा ॥ विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसंभवे ॥ ११ ॥ मंत्रो यथा—ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। श्रीधनदेश्वरी देवता। धं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। श्रीं कीलकम्। श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्ये समस्तदारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरीमंत्रजपे विनियोगः॥ ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छंदसे नमो मुखे २। धनदेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३। धंबीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। श्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रां हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुं ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ॐ नमः शिरसि १। ॐ रं नमः मुखे २। ॐ श्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ३। ॐ ह्रीं नमो वामनेत्रे ४। ॐ धं नमो दक्षिणकर्णे ५। ॐ धं नमो वामकर्णे ६। ॐ नं नमो दक्षनासापुटे ७। ॐ दें नमो वामनासापुटे ८। ॐ रं नमो हृदये ९। ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने १०। ॐ प्रि नमो वामस्तने ११।

१ तंत्रांतरेऽपि—ॐ ह्रीं श्रीं मां देहि धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मंत्रः। ॐ धं श्रीं ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः। ॐ रं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः। ॐ श्रीं श्रीं यक्षिणि दं दं दं स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मंत्रः। ॐ ह्रीं ॐ मां मोचय २ स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मंत्रः। इत्यनेकरूपो मंत्रो ज्ञेयः।

ॐ यें नमो नाभौ १२ । ॐ स्वां नमो गुह्ये १३ । ॐ हां नमः पादयोः १३ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ ॐ ॐ नमो मस्तके १ । ॐ रं नमो मुखे २ । ॐ श्रीं नमो हृदये ३ । ॐ ह्रीं नमः कट्याम् ४ । ॐ धं नमो हस्तयोः ५ । ॐ धनदे नमो गुदे ६ । ॐ रतिप्रिये नमो लिंगे ७ । ॐ स्वाहा नमः पादयोः ८ ॥ इति पदन्यासः ॥ ॐ धनदायै नमः शिरसि १ । ॐ मंगलायै नमो ललाटे २ । ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये ३ । ॐ त्रिनेत्रायै नमो दक्षिणनेत्रे ४ । ॐ चंचलाय नमो वामनेत्रे ५ । ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे ६ । ॐ मंजुघोषायै नमो वामकर्णे ७ । ॐ सुगंधायै नमो दक्षिणनासापुटे ८ । ॐ पद्मायै नमो वामनासापुटे ९ । ॐ वाराह्यै नम ऊर्ध्वोष्ठे १० । ॐ महामायायै नमः अधरोष्ठे ११ । ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे १२ । ॐ सुंदर्य्यै नमो दंतजाले १३ । ॐ सरस्वत्यै नमो जिह्वायाम् १४ । ॐ रुद्राण्यै नमश्चिबुके १५ । ॐ चामर्यै नमः कंठजाले १६ । ॐ वज्रायै नमः कंठपृष्ठे १७ । ॐ हरिप्रियायै नमो दक्षस्कन्धे १८ । ॐ कमलायै नमो वामस्कंधे १९ । ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते २० । ॐ अभयदायै नमो वामहस्ते २१ । ॐ सुपद्मिकाय नमो दक्षांगुलीषु २२ । ॐ उमायै नमो वामांगुलीषु २३ । ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये २४ । ॐ कामदायै नमः स्तनयोः २५ । ॐ क्षुधायै नम उदरे २६ । ॐ महाबलायै नमः कट्याम् २७ । ॐ धनुर्धरायै नमः पृष्ठे २८ । ॐ कामप्रियायै नमो लिंगे २९ । ॐ गुह्येश्वर्यै नमो गुदे ३० । ॐ चपलायै नम ऊर्वोः ३१ । ॐ लीलायै नमो जानुनोः ३२ । ॐ सर्वशक्त्यै नमो जंघयोः ३३ । ॐ भ्रामर्य्यै नमः पादयोः ३४ । ॐ सर्वेश्वर्य्यै नमः सर्वांगे ३५ ॥ इति कवचन्यासः ॥ ॐ ब्राह्म्यै नमः पूर्वे १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमो दक्षिणे २ । ॐ कौमार्य्यै नमः पश्चिमे ३ । ॐ वैष्णव्यै नम उत्तरे ४ । ॐ वाराह्यै नम ईशान्याम् ५ । ॐ चामुंडायै नम आग्नेय्याम् ६ । ॐ कौबेर्य्यै नमः नैर्ऋत्याम् ७ । ॐ वारुण्यै नमः वायव्याम् ८ । ॐ ब्राह्म्यै नम ऊर्ध्वम् ९ । ॐ अनंतायै नमः अधः १०॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपीठाधिरूढां ध्यायेत्तां यक्षिणीं वै परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ॥ पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांचीं कराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांग

रागाम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इत्याधारशक्तिं संपूज्य अर्घ्य स्थापनं कृत्वा स्वर्णादिपात्रे चंदनेन यंत्रं विलिख्य 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥

रतिप्रियाधनदायक्षिणीपूजनयन्त्रम्.



तथा च पुष्पांजलिमादाय—ॐसंविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ श्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ श्रूं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ श्रैं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ श्रः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो दशदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० १ । ॐ पद्मायै नमः । पद्मा

श्रीपा० २ । ॐ श्रियै नमः । श्रीश्रीपा० ३ । ॐ हरिप्रियायै नमः । हरिप्रियाश्रीपा० ४ । ॐ हरायै नमः । हराश्रीपा० ५ । ॐ पद्मप्रियायै नमः । पद्मप्रियाश्रीपा० ६ । ॐ कमलायै नमः । कमलाश्रीपा० ७ । ॐ अब्जायै नमः । अब्जाश्रीपा० ८ । ॐ चंचलायै नमः । चंचलाश्रीपा० ९ । ॐ लोलायै नमः । लोलाश्रीपा० १० ॥ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य प्रवालमालामादाय हृदये धारयन् एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच–इति ध्यानं विधातव्यं चंदनेनानुलेपितम् ॥ ताम्रपात्रे विधातव्यं मंडलं सुमनोहरम् ॥ १ ॥ तत्र पूजा विधातव्या दिव्यैव हि मनीषिणा ॥ भुक्ते वाप्यथवा भुक्ते पायसान्नं निवेदयेत् ॥ २ ॥ रक्तप्रवालमाला तु कार्या साधकसत्तमैः ॥ रक्तवस्त्रपरीधानो जपं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ३ ॥ लक्षं जपेन्मंत्रसिद्धिः पुरश्चर्यां समाचरेत् ॥ घृताक्तेनेक्षुदंडेन[1] मधुना च दशांशतः ॥ ४ ॥ होमोऽपि च विधातव्यः क्षणाद्दारिद्र्यशांतये ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ ५ ॥ विनियोगं तथा कुर्यात्साधकः सुमनोरथान् ॥ रात्रौ च जप्यते साष्टसहस्रं सप्तवासरान् ॥ ६ ॥ एतेनापि च सिद्धिः स्यात्पुरश्चर्याधिका प्रिये ॥ किमस्ति दुर्लभं देवि साधयेद्यदि मानवः ॥ ७ ॥ दशकृत्वोऽथवा शौचं कृत्वा वापि कुचैलताम् ॥ यत्स्मरेद्देवि विद्यां तां दारिद्र्येणाभिभूयते ॥ ८ ॥ कामदेवं जपेत्पार्श्वे देव्याः प्रत्यहमादरात् ॥ तेन देव्या महाप्रीतिर्वांछितार्थं ददाति सा ॥ ९ ॥ पूजांते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी ॥ सर्वालंकारमुत्सृज्य दत्त्वा याति निजालये ॥ १० ॥ धनं च विपुलं दत्त्वा साधकस्य मनोरथान् ॥ पूजयित्वा महेशानि चंदनेनावलेपनम् ॥ ११ ॥ दातव्यं सर्वदा तस्यै नित्यं दारिद्र्यशांतये ॥ यक्षिणी स्वयमाहेति यो मां स्मरति नित्यशः ॥ १२ ॥ तस्य दारिद्र्यशमनं

---

१ घृतशब्दोपलक्षिता घृतमधुशर्करा बोध्याः ।

 दासीवच्च करोम्यहम् ॥ कुतो दारिद्र्यशंकास्य स हि कोटीश्वरो नरः ॥ १३ ॥ किंकिणीतंत्रे यथा–बहु किं कथ्यते देवि शिलायां जप्यते
 सदा ॥ शतं वा दशकृत्वो वा सकृद्वापि च किं पुनः ॥ १४ ॥ न भवेत्तस्य दारिद्र्यमिति जानीहि पार्वति ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे वापि जप्यं
दारिद्र्यमुक्तये ॥ १५ ॥ वित्तं दृष्ट्वाऽन्यलोकस्य जपेदष्टशतं मनुम् ॥ तांस्तान् कामान्ददात्येव सदैव यदि जप्यते ॥ १६ ॥ यद्ययं जप्यते
मंत्रस्ततस्तुष्टा तमर्चयेत् ॥ दरिद्राय स्वयं दत्ते गृहमायुश्च हेम च ॥ १७ ॥ येनासौ जप्यते मंत्रः सदा भक्तिपुरःसरम् ॥ तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च प्रपौत्राश्चापि तत्सुताः ॥ दारिद्र्याभिभवं यांति न कदाचिन्निसंशयः ॥ १८ ॥ इति रुद्रयामले पार्वतीश्वरसंवादे रतिप्रियाधनदायक्षिणीपटलं समाप्तम् ॥ अथ धनदारतिप्रियायक्षिणीपद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ पूर्वकृत्यम् ॥ पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतया विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रयणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदान च कुर्यात् ॥ सर्वकर्माशक्तश्चेत्प्रायश्चित्तांगपंचगव्यप्राशनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः–ॐ यत्त्वगस्थिगत पापं देहे तिष्ठति कामके ॥ प्राशनात्पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा–प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासम् अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नं एकभक्तव्रतं वा कुर्यात् ॥ पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् ॥ तद्यथा–देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीधनदेश्वरीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् ॥ ततः ॐ गायत्र्याचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीं छंदस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितारं देवं तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा तस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् ॥ तद्यथा--स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः–ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टे समा
चक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं संप्रार्थ्य

निद्रां कुर्यात् ॥ ततो निशि स्वप्नं दृष्टं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् स्वयं वा विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ ततश्चन्द्रतारादिबलान्वित सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय प्रातःस्मरणं कृत्वा मूलमंत्रादिशौचक्रियादंतधावनादिकं च कृत्वा स्नानं कुर्यात्॥तद्यथा--तात्कालिकोद्धृतोदकमुष्णोदकं वा न तु पर्युषितशीतोदकं ताम्रादिबृहत्पात्रे गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्। तत्र मंत्रः—ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इत्यावाह्य 'ऋत च सत्यं०' इति मंत्रेणाभिमंत्र्य स्नायात्। एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभं कार्पासोत्पन्नरक्तवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् ॥ तत्र मन्त्रः-एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ इत्यर्घ्यं दत्त्वा स्नानार्द्रवस्त्रं परिपीड्य आचम्य पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रक्तप्रवालमालां धारयेत्। जपस्थाने गत्वा अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षान्यतमवितस्तिमात्रान् दश कीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमंत्रयेत् ॥ ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मंत्रेण प्रत्येककीलं संपूज्य तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ इति भूतेभ्यो बलिं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ ततः—ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत् पुंडरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ २ ॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात् ॥ तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा—तत्र 'ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ३ ॥' इति गंधाक्षतपुष्पैः संपूज्य ॥ तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि रक्तवर्णासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः १। 'ॐ विमलासनाय नमः २। ॐ पद्मास

नाय नमः ३।' इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् ॥ एवमासनं संस्थाप्य उदङ्मुख उपविश्य आसनशोधनं कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः—ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। कूर्मो देवता। सुतलं छंदः। आसने विनियोगः॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इतिमंत्रेणासनं प्रोक्ष्य मूलमंत्रेण शिखां बद्ध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीधनदेश्वरीप्रीतये लक्षसंख्यात्मकजपपुरश्चरणमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं विधाय ध्यानं कुर्यात् ॥ अथ ध्यानम्—ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किंचिद्यौवनशालिनीम् ॥ मृणालकोमलभुजां केयूरांगदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदृशं किंचिदुद्यत्कुचविराजिताम् ॥ कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलाधरपल्लवाम् ॥ हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ ३ ॥ ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवीं तां धनदादिकाम् ॥ रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ ४ ॥ अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिसहितां जपेत् ॥ अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ॥ ५ ॥ इति ध्यायेत् ॥ अथ अर्घस्थापनम्—मूलेन फट् इति प्रक्षाल्य मूलेन नमः इत्यापूर्य प्रणवेन गंधपुष्पे निक्षिप्य—ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तदुपरि किंचिन्मूलं जप्त्वा तज्जलं किंचित्प्रोक्षणीयपात्रे संस्थाप्य तेनोदकेनात्मानं जपोपकरणं च मूलेन त्रिवारमभ्युक्ष्य पीठे यंत्रं संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ आचम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीधनेश्वरीनूतनयंत्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य 'अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि च्छंदांसि। क्रियामयं वपुः। प्राणाख्या देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। अस्मिन्नूतनयंत्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ इति जलं निक्षिपेत् ॥ करेणाच्छाद्य ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ पुनः ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य जीव इह स्थितः ॥ पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॥ पुनः ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रं लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य वाङ्

मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥' इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य संस्कारसिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तिं कृत्वा अनेन श्रीधनदेश्वरीयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत् ॥ एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तद्देशे मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—अक्षतानादाय—देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा श्रीधनदेश्वरि इहागच्छेह तिष्ठेत्यावाह्य प्रार्थयेत्॥ स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ इति प्रार्थयित्वा' ॐ पद्मायै नमः ' इति मंत्रेण मध्ये संपूज्य गंधादिपूजनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि १। हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि २। यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि ३। रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ४। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ५। सं सर्वात्मकं नमस्कारं समर्पयामि ६ ॥ इति संपूज्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य प्रवालमालामादाय जपं कुर्यात् ॥ जपांते—ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् ॥ ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः ऋष्यादिन्यासादिकं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्तत्र मंत्रः ॐ नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ इति मूलं पठित्वा धनदेश्वरीरतिप्रियायै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा बद्धांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ॥ ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिवे। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तहीनं सुरेश्वरि ॥ यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ५ ॥ इति बद्धांजलिपूर्वकं क्षमाप्य अर्घोदकेन चुलुकमादाय—ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु

मे देवि त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थितिः ॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्य्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै समर्पयामि ॥ इति जपसमर्पणं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ अथ कुबेरमंत्रः—ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा ॥ अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपः ॥ नक्तभोजनं क्षीरोदनेन ॥ इति रतिप्रियाधनदायक्षिणीपद्धतिः समाप्ता ॥ २ ॥ अथ श्रीधनदारतिप्रिया यक्षिणीकवचप्रारंभः ॥ रुद्रयामले—देव्युवाच ॥ कथयस्व महादेव धनदाकवचं शुभम् ॥ यच्छ्रुत्वा कवचं दुग कबेर इव भैरव ॥ १ ॥ भैरव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम् ॥ दारिद्र्यखंडनं नाम सर्वसौभग्यदायकम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीधनदायाक्षिणी कवचमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। श्रीधनदा देवता। रं बीजम्। श्रीं शक्तिः। ह्रीं कीलकम्।श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थे मे दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदाकवचपाठे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं कुबेरऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ ह्रीं पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे ॥ ॐ ह्रूं श्रीधनदादेवतायै नमः हृदि ॥ ॐ ह्रैं रं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ॐ ह्रौं श्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ ह्रः ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुं ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्—ॐ कुंकुमोदरगभाभां किंचिद्यौवनशालिनीम् ॥ मृणालकोमलभुजां केयूरांगदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम् ॥ भजेऽहं श्राम्यकमलवराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलाधरपल्लवाम् ॥ हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ इति ध्यात्वा कवचं पठेत् ॥ ३ ॥ ॐ तत्तुर्यं रक्षयेत्सर्वशरीरं देवि सर्वतः ॥ माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ॥ १ ॥ वह्निजाया पातु लिंगं मत्र सर्वत्र रक्षतु ॥ धनदा सर्वदा रक्षेत्पथि दुर्गे यमा

लये ॥ २ ॥ मंजुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम् ॥ सुदरी दंतजालं च कंठजालं च चामरी ॥ ३ ॥ भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद्दश
दिक्षु सुपाठिका ॥ करालभैरवी पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ॥ ४ ॥ त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदंगं सर्वसंकटे ॥ ओष्ठाधरौ महामाया रसनां
चोरुदंडयोः ॥ ५ ॥ अंगलीषु तथा शक्तिर्जघनं चैव चंडिका ॥ इंद्राणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ॥ ६ ॥ कौमारी पश्चिमे
पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु ॥ ऐशान्ये पातु वाराही चामुंडा वह्निकोणके ॥ ७ ॥ कौबेरी नैर्ऋते पातु वायव्यां दुःखहारिणी ॥ ऊर्ध्वं ब्राह्मी
सदा पातु अधो दुर्गा सदावतु ॥ ८ ॥ ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत् ॥ ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवि त्वां धनदायिकाम् ॥
॥ ९ ॥ रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिं सहितां जपेत् ॥ १० ॥ अन्यहस्तं गतं छत्रं
कुबेरश्चामरद्वयम् ॥ भविष्यति महादेव्या मंत्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ॥ ११ ॥ कदाचिद्यः पठेद्धीमान्न वै रोगो भवेद्ध्रुवम् ॥
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ॥ १२ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तधनदायक्षिणीकवचं सम्पूर्णम् ॥ अथ धनदायक्षिणीस्तोत्रं
लिख्यते ॥ रुद्रयामले–देवी देवमुपागम्य नीलकंठं सदाशिवम् ॥ कृपया पार्वती प्राह शंकरं करुणाकरम् ॥ १ ॥ देव्युवाच ॥ ब्रूहि
वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुंबिनाम् ॥ दारिद्र्यदलनोपायमंजसैव धनप्रदम् ॥ २ ॥ पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः ॥
उचितं जगदंबासि तव प्रीत्याऽनुकंपया ॥ ३ ॥ अत्यन्तं सानुजं रामं सांजनेयमथानुगम् ॥ प्रणम्य परमानंदं वक्ष्यऽहं स्तोत्रमुत्त
मम् ॥ ४ ॥ धनदाश्रद्दधानानां सद्यः सुलभसाधनम् ॥ योगक्षेमकरं प्रोक्तं सत्यं मे वचनं यथा ॥ ५ ॥ पठेत्तस्याग्रतो वापि ब्राह्मणो
रसिकोत्तमः ॥ धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमंत्रस्य कुबेर ऋषिः । पंक्तिश्छंदः ।
श्रीधनदेश्वरी देवता । धं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । श्रीं कीलकम् । श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्ध्यर्थ दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमंत्रजपे
विनियोगः ॥ ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि । पंक्तिच्छंदसे नमः मुखे । धनदादेवतायै नमः हृदि । धं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहाशक्तये नमः पादयोः । श्रीं कीलकाय नमः करसम्पुटे । दारिद्र्यनाशाय विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि

न्यासः ॥ ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ श्रां हृदयाय नमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रूं शिखायै वषट् । ॐ श्रैं कवचाय हुं । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ अथ ध्यानम्— ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां यक्षीं बालां स्मरामः परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ॥ पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांचीकराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम् ॥ ७ ॥ एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ भूभवां संभवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतां शुभाम् ॥ प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान् कामधेनुस्वरूपिणीम् ॥ ८ ॥ धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते ॥ सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम् ॥ ९ ॥ धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे ॥ त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥१०॥ रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये॥ शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ॥११॥ आरक्तचरणांभोजे सिद्धसर्वांगभूषिते ॥ दिव्यांबरधर दिव्ये दिव्यमाल्योपशोभिते ॥ १२ ॥ समस्तगुणसंपन्ने सर्वलक्षणलक्षिते ॥ जातरूपमणीन्द्रादिभूषिते भूमिभूषिते ॥ १३ ॥ शरच्चंद्रमुखे नीले नीरनीरजलोचने ॥ चंचरीकं च भ्रूवासं श्रीहारि कुटिलालके ॥ १४ ॥ मत्ते भगवति मातः कलकंठरवामृते ॥ हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिंतापहारिके ॥ १५ ॥ रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने ॥ क्वणत्कंकणमंजीरलसल्लीलाकरांबुजे ॥ १६ ॥ रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये ॥ प्रयच्छ यजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ॥ १७ ॥ मातरं वा विलंबेन दिशस्त्व जगदंबिके ॥ कृपया करुणासारे प्रार्थितं परयाशु मे ॥ १८ ॥ वसुधे वसुधारूपे वासुवासववंदिते ॥ धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ॥ १९ ॥ ब्रह्मण्ये ब्राह्मणे पूज्ये पार्वतीशिवशंकरे ॥ श्रीकरे शंकरे श्रीदे प्रसीद मयि किंकरे ॥ २० ॥ स्तोत्रं दारिद्र्यदार्तिशमनं च धनप्रदम् ॥ पार्वतीशप्रसादेन सुरेशशंकरेरितम् ॥२१॥ श्रद्धया ये पठिष्यंति पाठयिष्यंति भक्तितः ॥ सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद्ध्रुवम् ॥ २२ ॥ इति श्रीरुद्रयामले धनदारतिप्रियायक्षिणीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ १ ॥ अथ बिल्वयक्षिणीमंत्रप्रयोगः ॥

ईश्वर उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् ॥ यस्य सिद्धौ मनुष्याणां सर्वे सिध्यंति ह्यच्छयाः ॥ मंत्रो यथा—ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ऐं ओं स्वाहा ॥ इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ॥ सित्तेऽर्थवारेऽमौढये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः ॥ [2]प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते ॥ मासमात्रप्रयोगस्य निर्विघ्नेन विधिं चरेत् ॥ निर्जने बिल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम् ॥ उपचारैः षोडशभी रुद्रपाठसमन्वितम् ॥ [3]त्र्यंबकेत्यस्य मंत्रस्य जपं पंचसहस्रकम् ॥ दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम् ॥'यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रियबांधव॥ एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः ॥' इति मंत्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी [4]भवेद्दिवा ॥ [5]रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रो मितभोजनः ॥ बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मंत्रमिमं सदा ॥ मूलमंत्रस्य च जपं सहस्रत्रयसंमितम् ॥ [6]कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतंद्रितः ॥ [7]मध्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ॥ यक्षिणी बहुरूपा तु कचित्तत्रागमिष्यति ॥ तां दृष्ट्वा न भयं कुर्य्याज्जपसंसक्तमानसः ॥ [8]यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥ तदा [9]वरान् वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ॥ धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकाम् ॥ भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा ॥ [10]भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥ राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम् ॥ [11]एतदन्यद्यदिप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥ [12]चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः ॥

---

१ गुरुशुक्रके उदयमें मनुष्य यक्षिणीका साधन करे। २ श्रावणकृष्णपक्षकी प्रतिपदासे चन्द्रबल देखकर । ३ ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ इस मन्त्रको दिनमें बेलवृक्षके नीचे पांच हजार जप करे। ४ दिनमें मौन धारण करना और हविष्यान्नभोजन करना। ५ पीछे अर्द्धरात्रिमें निद्रारहित थोडा भोजन करके। ६ बेलवृक्षके ऊपर बैठकर एक मासपर्यन्त नित्य मूलमन्त्रका तीन हजार जप करे । ७ मद्य मांस बलिदानके वास्ते नित्यही पास रख लेवे कारण कि अनेक रूपधारण करके कौनसे कालमें कौनसे दिन यक्षिणी आजायगी। ८ जिस दिन यक्षिणी बलिको ग्रहण करके वर देनेको समर्थ हो। ९ उस समय मनमें इच्छा हो सो वर मांगले। १० अथवा किसी पुरुष या स्त्रीके लानेके वास्ते मांग ले। ११ उपरोक्त कहेहुए मांगे अथवा और जो कुछ इच्छा हो सो मांग ले ।१२ जो यक्षिणी प्रसन्न होगई हो तो मांगेहुए वर देगी इसमें सन्देह नहीं।

अशक्तस्तु द्विजैः कुर्य्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ॥ सहायानथवाऽऽदाय ब्राह्मणान्साधयेद्व्रतम् ॥ तिस्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः ॥ सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत् ॥ कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा ॥ गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ॥ प्रकाशे बहुविघ्नानि जायंते नात्र संशयः ॥ प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नवदाचरेत् ॥ निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा ॥ गोप्यं चेदं महत्तंत्रं यस्मै कस्मै न दापयेत् ॥ दुर्जनस्पर्शनाद् विद्या भवत्यल्पफला यतः ॥ २ ॥ अथ चन्द्रद्रवावटयक्षिणी मंत्रप्रयोगः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्–ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ मन्त्रिते सप्तभिर्मन्त्री कांजिके क्षालयेन्मुखम् ॥ यामर्द्धयं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ॥ रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्माण्यनेकधा ॥ सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शंकरोदितम् ॥ २ ॥ मतांतरे–ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । अन्यत्सर्वं पूर्ववत् ॥ २ ॥ अथ धनदा पिप्पलयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अश्वत्थवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ धनदां यक्षिणीं चैव धनं प्राप्नोति मानवः ॥ अयुतं जपेत्सिद्धिः ॥ मतांतरे–ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अश्वत्थाधो द्वात्रिंशत्सहस्रं जपेत् ॥ दधि दुग्धं च नैवेद्यं दत्त्वा सिद्धो भवति । ततो भूतप्रेतपिशाचादयो वश्या भवंति सेवां कुर्वंति यक्षिण्याधिपति भवति ॥ ३ ॥ अथ पुत्रदाआम्रयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥

१ आप करनेको अशक्त हो तो ब्राह्मणोंसे करा लेवें, यह प्रयोग सुरपूजित है । २ अथवा ब्राह्मणोंको संग लेकर व्रतको धारण करे । ३ और परमान्न (खीर) करके नित्य तीन कन्याओंको भोजन करावे । ४ रात्रिमें दो प्रहर पर्यंत जप करे ।

॥ ४ ॥ अथ अशुभक्षयकरीधात्रीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्र–ॐ ए क्लीं नमः ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–धात्रीमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अशुभक्षयकारिण्या यक्षिण्या मनुमुत्तमम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ५ ॥. अथ विद्यादात्र्युदुंबरयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–औदुंबरसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ लभेत्पुस्तकसांसीद्धिं सर्वविद्याश्चतुर्दश ॥ अयुतं जपेत् ॥ ६ ॥ अथ विद्यादात्रीनिर्गुंडीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे –ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–निर्गुंडीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ विद्याप्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ७ ॥ अथ जयार्कयक्षिणीमंत्रप्रयोगो मंत्रसिद्धभाण्डागारे–ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ दत्तात्रेयतंत्रे–जयं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अर्कमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ यक्षिणीं च जयां नाम सर्वकार्यकरीं सदा ॥ अयुतं जपेत् ॥ ८ ॥ अथ संतोषाश्वेतगुंजायक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे--ॐ जगन्मात्रे नमः ॥ इति सप्ताक्षरा मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--श्वेतगुंजासमारूढो जपेदेकाग्रमानसः॥ संतोषाख्या यक्षिणी तु ददाति वांछितं फलम् ॥ ९ ॥ अथ राज्यदातुलसीयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ क्लीं क्लीं नमः ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–तुलसीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ अकस्माद्राज्यमाप्नोति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १० ॥ अथ राज्यदांकोलयाक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रौं नमः ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अंकोलवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ राजाधिराजो भवति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ ११ ॥ अथ कुशयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ वाङ्मयायै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कुशमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः ॥ सर्वकार्याणि सिद्धयंति नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १२ ॥ अथ अपामार्गयक्षिणीमंत्रप्रयोगो दत्तात्रेयतंत्रे–ॐ ह्रीं भारत्यै नमः ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-·अपामार्गसमारूढो

जपेदेकाग्रमानसः ॥ वाचां सिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अयुतं जपेत् ॥ १३ ॥ अथ क्षीरार्णवायक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-निजगृहे द्वारवेदिकायां स्थित्वा रात्रौ पंचदशशतं जपेत्। दशदिनांतरे प्रसन्ना भवति घृतक्षीरदधिकदलीफलानि ददाति ॥ १४ ॥ अथ उच्छिष्टयक्षिणीसाधनं प्राकृत ग्रंथे-ॐ जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा ॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अनेन मंत्रेण सर्वावस्थायां पंच विंशतिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् । प्रसन्ना भवति अन्नवस्त्रेण परिपूर्णं करोति ॥ १५ ॥ अथ चन्द्रामृतयक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ गुलुगुलु चन्द्रामृतमायिअवजालितं हुलुहुलु चन्द्रनीरे स्वाहा ॥ इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-गृहे वाणस्य एकान्ते लक्षमेकं जपेन्मनुम् ॥ पुष्पधूपादिभिः पूजां नित्यं कुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ पंचामृतैर्दशांशेन हुते देवी प्रसीदति ॥ दीनाराणां सहस्रैस्तु प्रत्यहं तोषयेत्सती ॥ १६ ॥ अथ स्वामीश्वरीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-एकांते तु शुचौ देशे त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम् ॥ मासमेकं जपेन्मंत्रं ततः पूजां समारभेत् ॥ पुष्पधूपादिनैवेद्यैः प्रदीपै र्घृतपूरितैः ॥ रात्रावभ्यर्चयेत्सम्यक्सुस्थिरः सुमनाः सुधीः ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ॥ रसं रसायनं दिव्यं वस्त्रालंकारभूषणम् ॥ १७ ॥ अथ महामायाभोगयक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे-ॐ नमो महामायामहाभोगदायिनी हुं स्वाहा ॥ इति सप्तदशारो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पंचसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् मिष्टान्नं भुक्त्वा पंचमे वा घृतं च तेन दशांशतो होमः । ततो देवी प्रसन्ना भवति वरं ददाति सर्वस्त्रियः स्वस्त्री वा वश्या भवति राजमान्यो वश्यो भवति नृपतिश्च पंचमुद्राः प्रतिदिनं ददाति ॥ १८ ॥ अथ त्यागासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम्-अहो त्यागी महात्यागी अर्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं ह्रीं स्वाहा॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥

१ मतांतरे-जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः । २ न्हाकर या विना न्हाये पवित्र या अपवित्रावस्थामें बैठते ऊठते चलते फिरते उच्छिष्ट अवस्थामें । मतांतरे- पंचमेवाका दशांश हवन भी करे। करना योग्य है ।

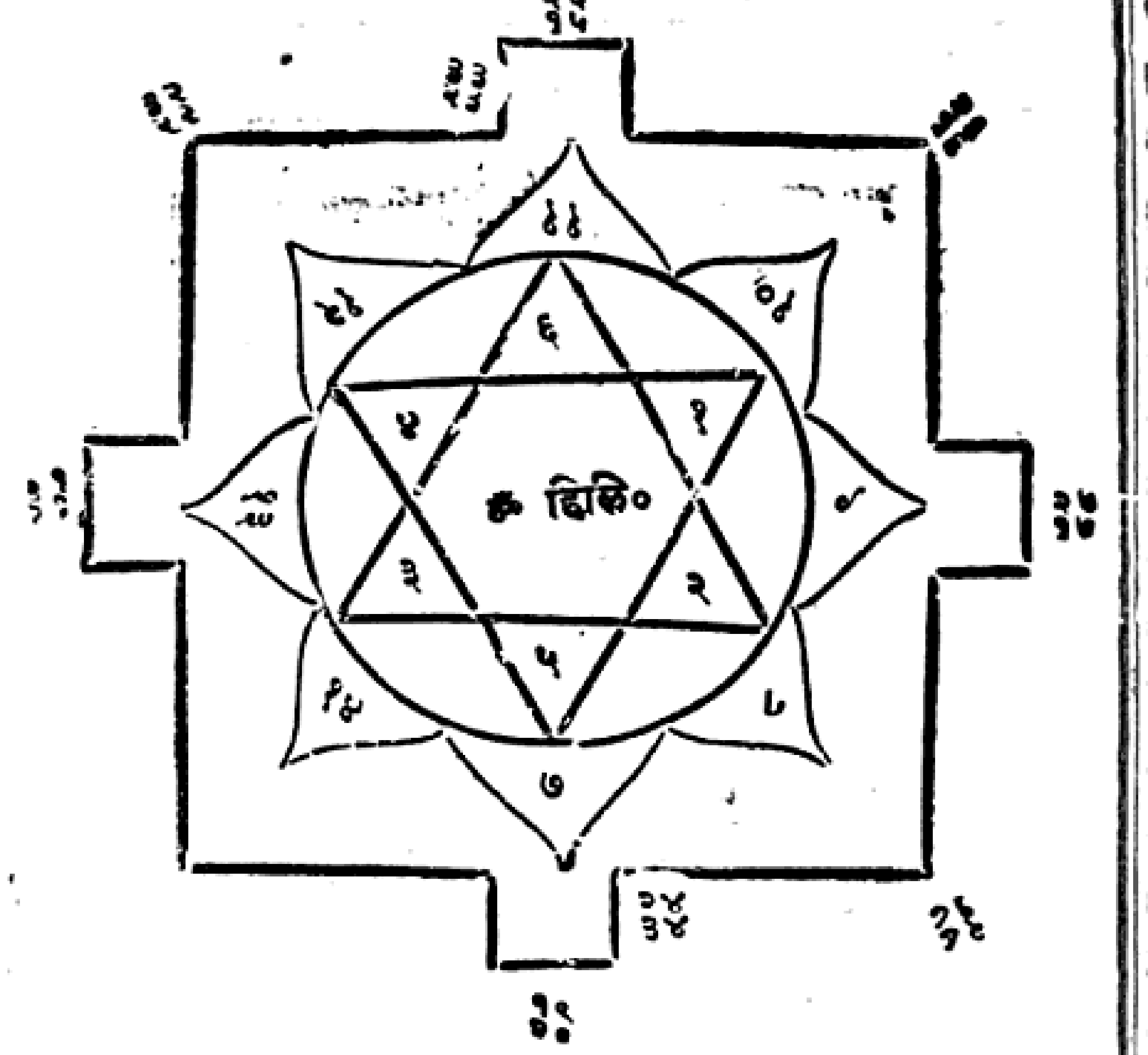
मतांतरे—ॐ अहो त्यागि मम त्यागार्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—चतुर्लक्षमिमं मंत्रं जपेत्त्यागा प्रसीदति ॥ ददाति चिंतितानर्थांस्तस्मै भोगांश्च मंत्रिणे ॥ १९ ॥ अथ सर्वांगसुलोचनासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम् ॐ कुवलये हिलि हिलि कुरु कुरु सिद्धिं सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षत्रयं जपे मन्त्रं दशांशं गुग्गुलुं हुनेत् ॥ लाक्षामुत्पलकं वाथ ध्यात्वा सर्वाङ्गलोचनम् ॥ पट्टिपट्टे वा संलिख्य होमांते चिंतिता सदा ॥ २० ॥ ॥ अथ भूतलोचनासाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ भूते सुलोचनेल्वम् ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—लक्षमुत्पलशाकोत्थं हुत्वा मंत्रमिमं जपेत् ॥ लक्षैकादशमावर्त्य हुत्वा मध्ये शशिग्रहे ॥ अथवा मालतीपुष्पैर्हुत्वा भानुसहस्रकम् ॥ भानुभुक्ते भवेद्यावत्पूर्णांते सिध्यति ध्रुवम् ॥ सहस्रं तु जपाद्यंते सहस्राणां तु भोजनम् ॥ २१ ॥ अथ जलपाणिसाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वलज्वल हुं ल्वुं स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शाकयूषपयःसक्तुभक्षः श्वेततमासने ॥ देवतां पूजयेन्नित्यं जपेल्लक्षत्रयो दशम् ॥ पायसं होमयेत्पश्चात्सहस्रेणैव सिध्यति ॥ नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं सा प्रयच्छति ॥ लक्षायुर्दिव्यवस्त्राणि दत्ते सा शङ्करोदिता ॥ २२ ॥ अथ मातंगेश्वरीसाधनं प्राकृतग्रंथे—[2]ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातंगेश्वर्यै नमो नमः ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—घृतदीपसंमुखे लक्षं जपेत् । तद्दशांशतो होमः । प्रसन्ना भवति स्त्रीभावे स्त्रीराजलक्ष्मीमहिषीत्याद्यभीष्टजातं ददाति ॥ २३ ॥ ॥ अथ विद्यायक्षिणीसाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पञ्चविंशतिसहस्रं जपेत् । पंचमे वा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्ता भवति ॥ २४ ॥ अथ हटेलेकुमारीसाधनं प्राकृतग्रंथे—ॐ नमो हटेलेकुमारि स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—द्विसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् । ततः सप्तदिनांतरे बंधमुक्तो भवति । दुग्धाज्येन दशांशतो होमं

१ एक लाख कमलका हवन करके मंत्रका ग्यारह लाख जप करे, चन्द्रग्रहणमें हवन करे अथवा मालती पुष्पका बारा हजार होम करे। सूर्यग्रहणमें हवन करे जब सूर्य ग्रहणसे मुक्त हो तबतक मंत्र सिद्ध होता है फिर सहस्रवार जपनेसे सहस्र मनुष्योंको भोजन प्राप्त होता है। २ मतांतरे-ॐ ह्रीं ॐ क्लीं नमो मातंगेश्वरि नमः। ३ मतांतरे लक्षं जपेत् तद्दशांशतो होमः। एवंकृते अन्नं ददाति।

कुमारीभोजनं च कुर्यात् । तदा प्रसन्ना भवति ॥ २५ ॥ अथ बंदीसाधनं मंत्रमहोदधौ ॥ मंत्रो यथा--ॐ हिलिहिलि बंदीदेव्यै स्वाहा ॥ ॐ अस्य श्रीबंदीमंत्रस्य भरव ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । बंदी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । बंदीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । हिलि तर्जनीभ्यां नमः २ । हिलि मध्यमाभ्यां नमः ३ । बंदी अनामिकाभ्यां नमः ४ । देव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्य्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ सतोय पाथोदसमानकांतिमंभोजपीयूषकरीरहस्ताम् ॥ सुरांगनासेवितपादपद्मां भजामि बंदीं भवबंधमुक्त्यै ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले 'आधारशक्त्यादिपरत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य जयादिनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वादिक्रमेण–ॐ जयायै नमः १ । विजयायै नमः २ । ॐ आजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ ॥ मध्ये । ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चदत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये बंधे एह्येहि नमः' इति मंत्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा पाद्यादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपजां कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ षट्कोणकेसरेषु अग्न्यादिक्रमेण मध्ये दिक्षु च ॥ ॐ हृदयाय नमः १ । हिलि शिरसे स्वाहा २ । हिलि शिखायै वषट् ३ । बंदी कवचाय हुं ४ । देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहाऽस्त्राय फट् ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च–ॐ काल्यै नमः १ । ॐ तारायै नमः २ । ॐ भगवत्यै नमः ३ । ॐ कुब्जायै नमः ४ । ॐ शीतलायै नमः ५ । ॐ त्रिपुरायै नमः ६ । ॐ मातृकायै नमः ७ । ॐ लक्ष्म्यै नमः ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत् ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पा

लान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—लक्षयुग्मं जपेन्मंत्री पायसान्नैर्दशांशतः ॥ एवमाराधिता वंदी प्रयच्छेदीप्सितं वरम् ॥ एकविंशति घस्रांतमयुतं प्रत्यहं जपेत् ॥ ब्रह्मचर्यरतो मंत्री गणेशार्चनपूर्वकम् ॥ कारागृहनिवद्धस्य मोक्ष एवं कृते भवेत् ॥ प्रकारांतरम् —अपूपोपरि घृतेन चतुरस्रांतर्वर्तिठकारं विलिख्य तत्रामुकं मोचयेति लिखेत् दिक्षु मायाबीजं च । अष्टादशार्णमंत्रेण तं वेष्टयित्वा तत्र देवीमावाह्याभ्यर्च्य कारागृहस्थायापूपं दद्यात् । स च तज्जग्ध्वा बंधनान्मुच्यते ॥ अष्टादशार्णमंत्रो यथा—ऐं ह्रीं श्रीं वंदि अमुष्य बंधमोक्षं कुरु २ स्वाहा ॥ इति ॥ एवं सा वंदिता मंत्रस्मरणाद्बंधमुक्तिदा ॥ इति ॥ अथाष्टाप्सरोदेवकन्यासाधनम् ॥ तत्रादौ वाहनादिमुद्रादि प्रदर्श्यंते ॥ द्विमुष्टिसंयुक्तौ उभौ हस्तौ कमलावर्त्तयोगेन

बंदीपूजनयन्त्रम् ।



मध्यमांगुल्या सूचिता अष्टाप्सरआवाहनमुद्रा ॥ १ ॥ उभाभ्यां षट्ककरा सर्वाप्सरोवशंकरी सान्निध्ये अग्निमुखमुद्रा सर्वत्र कामसाधिनी ॥ २ ॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां कमलावर्तयोगेन सर्वाप्सरोमोहिनी अनया मुद्रया बद्धमात्रया दासी भवति ॥ ३ ॥ अष्टाप्सरसामावाहनादिमंत्रो यथा—तत्क्षणात्सर्वाप्सरस आगच्छागच्छ हूं यः यः ॥ अनेन अप्सरसामावाहनम् ॥ १ ॥ ॐ सर्वसिद्धि

भोगेश्वरि स्वाहा ॥ अनेन सान्निध्यकरणम् ॥ २ ॥ ॐ कामप्रियायै स्वाहा ॥ अनेनाभिमुखीकरणम् ॥ ३ ॥ यद्यप्सरसो न
सिध्यंति तदा क्रोधसहितः क्रोधमंत्रं जपेत् ॥ क्रोधमंत्रो यथा—ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हूं वः फट् ॥ एतज्जपमात्रेण शिरः स्फुटति ।
शतखण्डं विशीर्यंति तदागच्छति ॥ ४ ॥ ॐ सबंधसबंधस्तनू हुं फट् ॥ अनेन मंत्रेण वेष्टयेत् ॥ ५ ॥ ॐ चलचल वशमानय हुं फट् ।
अनेन सर्वाप्सरसो वशमानयेत् ॥ ६ ॥ अथ शशिदेव्यप्सरोमंत्रप्रयोगो भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छागच्छ स्वाहा
॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पर्वतशिखरमारुह्य लक्षं जपेत् । सिद्धो भवति । पौर्णमास्यां यथाविभवतः पूजां
कृत्वा घृतदीपं प्रज्वाल्य सकलरात्रिं जपेत् । प्रभाते नियतमागच्छति । स्वयं देव्यै आगतायै चंदनेनार्घो देयः । वाचा भाषते । साध
केनैवं वक्तव्यं मम भार्या भवेति । सिद्धद्रव्यं रसरसायन ददाति । वर्षसहस्रं जीवति ॥ इति शशिदेव्यप्सरःसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ
तिलोत्तमाप्सरोमंत्रप्रयोगः—ॐ श्रींतिलोत्तमे आगच्छगच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम—चंदनक्षीराहारेणायुतं
जपेत् दिवसानि सप्त । दिवसे सप्तमे उदारपूजां कृत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते नियतमागच्छति ।
ईषद्धासितरागेण पुरस्तिष्ठति ॥ आलिंगनं चुंबनं च तया सह कर्तव्यं तूष्णींभावेन कामयेत् । एवं सिद्धा भवति ॥ यमिच्छति कामं
तं ददाति । पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति ॥ इति तिलोत्तमाप्सरःसाधनं द्वितीयम् ॥ २ ॥ अथ कांचनमालाप्सरो
मंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ श्रीं कांचनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—नदी
संगमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् दिवसानि सप्त । सप्तमे दिवसे उदारपूजां कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वा सकलां रात्रिं जपेत् । प्रभाते नियतमाग
च्छति सा च सर्वाशां पूरयति ॥ इति कांचनमालाप्सरःसाधनं तृतीयम् ॥ ३ ॥ अथ कुंडलाहारिण्यप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा
भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रीं ह्रीं कुंडलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—न तिथिर्न च नक्षत्रं
नोपवासो विधिर्न तु ॥ पर्वतमूर्ध्नि गत्वा अयुतं जपेत् ॥ ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति अर्घो देयः भार्या भवति दीनारलक्षं प्रतिदिनं

ददाति। पृष्ठमारोप्य सर्वतो भ्रामयति रसरसायनं सिद्धद्रव्यं च ददाति ॥ इति कुंडलाहारिण्यप्सरःसाधनं चतुर्थम् ॥ ४ ॥ अथ रत्नमालाप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ ह्रूं रत्नमाले आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—देवतायतने गत्वा अष्टसहस्रं जपेन्मासमेकं ततो मासांते पौर्णमास्यां पूजां कृत्वा पुनर्जपेत्। तावज्जपेत् यावदर्धरात्रे महानूपुरशब्देनागच्छति आगतायै पुष्पासनं दद्यात् ॥ स्वागतं देव्या इति वक्तव्यं स्वामिन् किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं मम भार्या भवेति वर्षसहस्रं जीवति ॥ इति रत्नमालाप्सरःसाधनं पंचमम् ॥ ५ ॥ अथ रंभाप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे ॐः सः रंभे आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इत्येकादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलुंधूप दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत्।त्रिसंध्यम् ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत्।प्रभाते शीघ्रमागच्छति। यदि शीघ्रं नागच्छति तदा म्रियते आगता सा भार्या भवेति यथेष्टं कामयितव्या दशवर्षसहस्राणि जीवति। सर्वाशां पूरयति।मृतो राजकुलेषु जायते॥इति रंभाप्सरःसाधनं षष्ठम् ॥ ६ ॥ अथ उर्वश्यप्सरोमंत्रप्रयोगः॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ श्रीं उर्वशि आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्--प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वा अष्टसहस्रं जपेत् त्रिसंध्यम्।ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति रसरसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति परस्त्र्याभिगमनं न कर्त्तव्यं पंचवर्षसहस्राणि जीवति ॥ इति उर्वश्यप्सरःसाधनं सप्तमम् ॥ ७ ॥ अथ श्रीभूषण्यप्सरोमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ वाः श्रीं वाः श्रीभूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कुंकुमेन भूर्जपत्रे श्रीभूषणीप्रतिमां विलिख्य रात्रावेकाकी शुचिः प्रतिदिनमष्टसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत्। मासांते उदारपूजां कृत्वा तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं नियतमागच्छति आगता सा शीघ्रं कामयितव्या ॥ तुष्टा भवति सुवर्णमुक्तादीनि ददाति दिने दिने कामिकभोजनं ददाति रसरसायनं ददाति ॥ इति श्रीभूषण्यप्सरःसाधनमष्टमम् ॥ ८ ॥ इत्यष्टाप्सरःसाधनं समाप्तम् ॥

॥ अथाष्टकिन्नरीसाधनम् ॥ तत्रादौ सूचना--यद्यष्ट किंनर्यो न सिद्ध्यंति तदा क्रोधसहितः क्रोधमंत्रं जपेत् ॥ क्रोधमंत्रो यथा--ॐ ह्रीं आकृष्टः कट्टः हूँ वः फट् ॥ अस्य जपमात्रेण शिरः स्फुटति शतखंडं विशीर्यति तदागच्छंति ॥ अथ मंजुघोषाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ श्रीं मंजुघोषे आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् त्रिसंध्यम् ॥ ततः पौर्णमास्यां महतीं पजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत् ॥ प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयसि तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति॥ रस रसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति पररूयभिगमनं न कर्तव्यं पंचवर्षसहस्राणि जीवति ॥ इति मंजुघोषाकिन्नरीसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ मनोहारीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ मनोहार्यै स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पर्वतमूर्ध्नि समारूढोऽष्टसहस्रं जपेत् ॥ अष्टकिन्नरीणां जपे समाप्ते महतीं पूजां कृत्वा गोमांसगुग्गुलुसमन्वितो धूपो देयः । तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं किन्नरी नियतमागच्छति तस्या न भेतव्यं भो भो साधक किमाज्ञापयासि साधकेन वक्तव्यं भद्रेऽस्मद्भार्या भवेति । स्कंधे आरोप्य देवलोकमपि नयति दिव्यकामिकभोजनं ददाति अष्टोत्तरसाधनं भवति ॥ इति मनोहारीकिन्नरीसाधनं द्वितीयम् ॥२॥ अथ सुभगामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ सुभगे स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--पर्वतमूर्ध्नि विहारे वाऽयुतं जपेत् ॥ दिव्यकोमलहस्तेन पादमुपचारयति ॥ शीघ्रं कामयितव्या भार्या भवति दिने दिने पंचदीनारान् ददाति ॥ इति सुभगाकिन्नरीमंत्रप्रयोगस्तृतीयः ॥ ॥ ३ ॥ अथ विशालनेत्राकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ विशालनेत्रे स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--नदीकूले गत्वाऽयुतं जपेत् ॥ पुनर्मासांते सकलां रात्रिं जपेत् ॥ प्रभाते नियतमागच्छति ॥ आगता सा भार्या भवति ॥ दिने दिने पंच दीनारान् ददाति ॥ इति विशालनेत्राकिन्नरीमंत्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ अथ सुरतिप्रियाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे--ॐ सुरतिप्रिये स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--रात्रौ नदीसंगमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् जपांते नियत

मागच्छति ॥ प्रथमदिवसे दर्शनं ददाति ॥ द्वितीयदिवसे पुरतस्तिष्ठति वाचा भाषते तृतीयदिवसे कामयितव्या नियतं तिष्ठति भार्या भवति सर्वकर्माणि करोति अष्टौ दीनारान् वस्त्रयुगलं च ददाति ॥ इति सुरतिप्रियाकिन्नरीमंत्रप्रयोगः पंचमः ॥ ५ ॥ अथाश्वमुखी किन्नरीमंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ अश्वमुखि स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः। अस्य विधानम्—पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत् ॥ तदा शीघ्रमागच्छति रसरूपेण पुरस्तिष्ठति आलिंग्य चुंबेत् तूष्णींभावेन कामयितव्या भार्या भवति ॥ अष्टौ दीनारान् प्रयच्छति दिव्यकामिकभोजनं ददाति ॥ इत्यश्वमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥ अथ दिवाकीरमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ दिवाकीरमुखि स्वाहा॥ इति नवाक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्—पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत्॥ नियतसमये समागच्छति भार्या भवति अष्टौ दीनारान् प्रयच्छति॥ इति दिवाकीरमुखीकिन्नरीमंत्रप्रयोगः सप्तमः ॥ ७ ॥ अथैकाकिन्नरीमंत्रादेरभावः ॥ इत्यष्टकिन्नरीसाधनं समाप्तम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथाष्टभूतकात्यायनीसाधनम् ॥ द्वौ करौ मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् । प्रसार्य तर्जनीं कुर्यात् त्रैलोक्यस्याकर्षिणी मुद्रा साधकाय ब्रह्मसाधनं करोति किं पुनः क्षुद्रसाधनमेतन्मुद्रावलोकनेन कात्यायनी शीघ्रमागच्छति ॥ कात्यायनीविद्यापठनमात्रेण सिध्यति ॥ तत्रादौ सुभगकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे—ॐ सुरतप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे कांचनमालाविभूषणनूपुरशब्देनाविशाविश पूरय साधकप्रियं स्वाहा ॥ इत्येकपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—रात्रौ राजगृहे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् । करवीरकाष्ठैरग्निं प्रज्वाल्य मालतीपुष्पैर्दधिमधुघृताक्तैरष्टशतं जुहुयात् । तदा पंचदिनांतरे महाभूतेश्वरी भतराज्ञी महाकात्यायनी पंचशतपरिवारेण महानूपुरशब्देनागच्छति॥ आगतायै कुसुमेनार्घ्यं दत्त्वा वक्तव्यं माता भगिनी भार्या वा भवेति॥यदि माता भवति न चित्तं दूषयितव्यं दिव्यकामिकभोजनं ददाति सुवर्णालंकारं वा ददाति॥ यदि भगिनी भवति तदा राज्यं ददाति योजनशतादपि स्त्रियमानीय ददाति॥ यदि भार्या भवति तदा दिव्यस्त्रीसदृशं भोगं ददाति॥ सर्वाशां परिपूरयति। दशवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति सुभगकात्यायनीमंत्रप्रयोगः प्रथमः ॥ १ ॥ अथ कुंडलकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामर

तंत्रे–ॐ यामिनि क्रातिनि अकालमृत्युनिवारिणि खड्गत्रिशलहस्ते शीघ्रं सिद्धिं ददाति हि तां साधक आज्ञापयति ह्रीं स्वाहा ॥ इति द्वाचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रौ उद्यानं गत्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिनानि त्रीणि नूपुरशब्दः श्रूयते । चतुर्थे दिवसेऽष्टमे दिवसे वा शिरःस्थाने मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिव्यभूतिनी कन्या कुंडलकात्यायनी स्वगृहमागच्छति आगता च कामयितव्या भार्या भवति दिव्यमुक्ताहारं शयने परित्यज्य प्रभाते गच्छति ॥ इति कुंडलकात्यायनीमंत्रप्रयोगो द्वितीयः ॥ २ ॥ अथ चंडकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ ऐं क्रं रुद्रभयंकरि अट्टाट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपे रत्नाकरि सुवर्णहस्ते यमनिकृंतनि सर्वदुःखप्रशमनि उँउँउँउँहूँहूँहूँहूँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ ह्रीं जः स्वाहा ॥ इत्यष्टाधिकषष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रावेकलिंगे गत्वा सहस्रं जपेदेकस्मिन्दिवसे नूपुरशब्दः श्रूयते । द्वितीये दिवसे दिव्यस्त्री पुरतस्तिष्ठति न दूषयति न भाषते । तृतीय दिवसे चाभाषते भोः साधक किमाज्ञापयसि साधकेन वक्तव्यं भो देवि उपस्थापिका भवेति यावज्जीवति तावदुपस्थानं करोति पृष्ठमारोप्य मेरुसागरादीन्नयति पुनरपि वैश्रवणगृहे गत्वा द्रव्यमानीय ददाति जंबद्वीपपादके उत्तमरूपकन्यामानीय ददाति जीवति वर्षशतानि पश्चान्मृतः सामंतकुलेषु जायते ॥ इति चंडकात्यायनीमंत्रप्रयोगस्तृतीयः ॥ ३ ॥ अथ रुद्रकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ हे हे फट् स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने गत्वा सहस्रं जपेद्दिवसानि त्रीणि तदा सर्वभूतिनी रुद्रकात्यायनी शीघ्रमागच्छति आगतायाः कपाले कंठे च पूर्णाभं देयं तुष्टा भवति वदति च किं मया कर्तव्यमिति साधकेन वक्तव्यं मातेव भवेति मातृवत्प्रतिपालयति राज्यं ददाति सर्वाशां पूरयति महाधनपतिर्भवति पंचवर्षशतानि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति रुद्रकात्यायनीमंत्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ अथ महाकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा भूतडामरतंत्रे–ॐ भूह्रूलह्रं फट् ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रात्रौ नदीसंगमे गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा दिव्यस्त्री भूतिनी महाकात्यायनी सह परिवारेण गच्छति आगता च मंत्रयितव्या तूष्णींभावेन कामयेत् ॥ दिने दिने पंच दीनारान् वस्त्रयुगलं च ददाति ॥ इति महाकात्यायनीमंत्रप्रयोगः

पंचमः ॥ ५ ॥ अथ सुरकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा—भूतडामरतंत्रे—ॐ श्रूँ हूँ फट् ॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—शून्ये देवालये गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महाट्टभासं कृत्वाष्टशतपरिवारेण नियतमागच्छति आगतायै चंदनोदकेन अर्घो देयः तुष्टा भवति रसरसायनं प्रयच्छत्यष्टशतपरिवारस्य वस्त्रालंकारभोजनादीनि ददाति पंचवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते ॥ इति सुरकात्यायनीमंत्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥ जयमुखकात्यायनी सर्वभूतकात्यायनीति द्वयोर्मन्त्रादेरभावः ॥ इत्यष्टकात्यायनीमंत्रप्रयोगः ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे यक्षिण्यादितंत्रे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कर्णपिशाचिन्यादितंत्रप्रारंभः । तत्रादौ षोडशाक्षरमंत्रोत्पत्तिः ॥ कर्णे ते क्षणलोहितोरकगतोऽनन्तश्चकारो वदातीतानागतशब्दयुक्तभुवने श्रीवह्निजायान्विता ॥ ताराद्यो मनुरेकलक्षजपितो व्यासेन संसेवितः सुज्ञत्वं लभतेऽचिरेण नियतं पैशाचिकीभक्तितः ॥ १ ॥ मंत्रो यथा—ॐ कर्णपिशाचि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अथ ध्यानम् ॥ कृष्णां रक्तविलोचनां त्रिनयनां खर्वां च लम्बोदरीं बन्धूकारुणजिह्विकां वरवराभीतीकरामुन्मुखाम् ॥ धूम्रार्चिर्जटिलां कपालविलसत्पाणिद्वयां चञ्चलां सर्वज्ञां शवहृत्कृताधिवसतिं पैशाचिकीं तां नुमः ॥ २ ॥ अस्य विधानम्—अर्धरात्रे स्वहृदये देवीं ध्यात्वा मलं रक्तचन्दनेन लिखित्वा रक्तचन्दनबन्धूकजपापुष्पादिना पूजाद्रव्याणि 'ॐ अमृतं कुरु कुरु स्वाहा' इति मंत्रेण संप्रोक्ष्य यंत्रोपरि इष्टदेवतां संपूज्य 'ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीनबलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥' मंत्रेण इति दग्धमीनबलिं च दत्त्वार्धरात्रे मंत्रं जपेत् ॥ पूर्वाह्णे किंचिज्जपित्वा मध्याह्ने चैकभक्तनिरामिषं भुक्त्वा रात्रावपि तत्तत्संख्यं जपेत् ॥ अन्यत् किंचिन्न भोक्तव्यं तांबूलादिकं विना जपदशांशेन प्रतिदिनं तर्पणं कुर्यात्॥तत्र मन्त्रः—ॐ कर्णपिशाचि तर्पयामि स्वाहा॥अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः दशांशेन होमः होमाशक्तौ पुनर्दशांशतर्पणं कृत्वा वरं प्रार्थयेत् ॥ सिद्धिलक्षणं गगने हुंकारादिश्रवणदीर्घाग्निशिखारूपसन्दर्शनात् सिद्धिर्भविष्यतीति ज्ञात्वा तथा विधिमाचरेत् ॥ इति षोडशाक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ तंत्रांतरेऽपि—कहकह कालिके गृह्ण गृह्ण पिंडं पिशाचिके स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः ॥ अन्यत् सर्वं पूर्ववत् ॥ २ ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ ह्रीं चः चः कम्बलिके गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--एकविंशत्यहं यावदुदयास्तमयं जपेत् ॥ नित्यं सायं समाहारपिंडं

१ इस मन्त्रका एक लाख जप करके व्यासजीने शीघ्र सर्वज्ञता प्राप्त करी थी । २ कर्णपिशाचिनी देवीका शरीर कृष्णवर्ण है । तीनों नेत्रोंकी आभा अरुणवर्ण है, आकार खर्व अर्थात् छोटा है, और पेट बडा है, जिह्वा बन्धूकपुष्पके समान अरुणवर्णकी है । देवीजीके एक हाथमें वरमुद्रा, दूसरे हाथमें अभयमुद्रा अन्य दोनो हाथोंमें दो मनुष्यके कपाल हैं, शरीरमें धूम्रवर्ण ज्वाला निकलती है। देवीका मुख ऊपरको उठा हुआ है । शिरपर ज्वाला विराजमान और चंचल प्रकृति है। कर्णपिशाचिनी देवी सर्व विषयोंको जाननेवाली है और सबके हृदयमें निवास करती है । इस प्रकारकी आकृतिवाली देवीको नमस्कार करता हूं। ३ उदयास्तके समय मन्त्र जपे । ४ अपने आहारमेंसे एक पिंड सन्ध्याको घरके ऊपर छतपर फेक दिया करे ।

हर्म्योपरि क्षिपेत् ॥ त्रिसप्ताहे तु सा तुष्टा शशांगा तु पिशाचिका ॥ पंचविंशतिदीनारान् ददाति प्रतिवासरम् ॥ कर्णे कथयति क्षिप्रं यद्यत्पृच्छत्यसौ क्रमात् ॥ इत्यष्टादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ ह्रीं कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय हुं फट् स्वाहा ॥ इत्यष्टादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—प्रदीपतैलं पादयोर्दत्त्वा रात्रौ लक्षं जपेत् ॥ ततः सर्वज्ञो भवति नास्य पूजाध्यानम् ॥ ४ ॥ मंत्रमहोदधौ—ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनि कर्णे मे कथय स्वाहा ॥ इति षोडशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य कर्णपिशाचिनीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। नीवृच्छंदः। कर्णपिशाचिनी देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १। नीवृच्छंदसे नमो मुखे २। कर्णपिशाचिनीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। कर्णपिशाचिनि मध्यमाभ्यां नमः ३। कर्णे मे अनामिकाभ्यां नमः ४। कथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हृदयाय नमः १। ह्रीं शिरसे स्वाहा २। कर्णपिशाचिनि शिखायै वषट् ३। कर्णे मे कवचाय हुं ४। कथय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ चितासनस्थां नरमुंडमालाविभूषितामस्थिमणीन् कराब्जैः ॥ प्रेतान्नरांत्रैर्दधतीं करस्त्रां भजामहे कर्णपिशाचिनीं ताम् ॥ पीठपजादिकं षड्यक्षिणीवज्ज्ञेयम् ॥ श्मशानस्थः शवस्थो वा लक्षं जपेत् ॥ विभीतकसमिद्भिर्दशांशतो होमः ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति सिद्धे मंत्रे अशुचिर्भूत्वा बदरीतरौ पुनर्लक्षं जपेत् ॥ तदा पिशाचिनी प्रसन्ना भवति परचित्तस्थितां वार्तां कर्णे कथयति ॥ तथा च—श्मशानस्थः शवस्थो वा जपेल्लक्षं समाहितः ॥ दशांशं जुहुयाद्वह्नौ विभीतकसमिद्वरैः ॥ सिद्धे मंत्रे जपं कुर्यादधस्ताद्बदरीतरौ ॥ अशुचिर्लक्षसंख्यातं तेन तुष्टा पिशाचिनी ॥ परचित्तस्थितां वार्तां भाविनीं च वदेच्छ्रुतौ ॥ ग्रंथांतरेऽपि—ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमः कर्णाम्रौ कर्णपिशाचिकादेवि अतीतानागतवर्तमानवार्तां कथय मम कर्णे कथय कथय तथ्यं मुद्रावार्तां कथय

---

१ रात्रिके समय दीपकका तेल पैरोंमें मलके मन्त्रका एक लाख जप करे।

कथय आगच्छागच्छ सत्यं सत्यं वद वद वाग्देवि स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मूलं रक्तचंदनेन लिखित्वा पंचामृतेन स्नप यित्वा लक्षं जपेत्। दशांशतो होमः। मंत्रः सिद्धो भवति। वार्तां कथयति ॥ ६ ॥ मतांतरेऽपि–ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मेत्तकर्णि[1] प्रविश अतीतानागतवर्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा॥इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्–लक्षं जपेत् सिद्धिः।पुनः आम्रपट्टो परि अष्टोत्तरशतवारं मंत्रं लिखित्वा प्रत्येकं च पूजयित्वा तं मंत्रं शिरोऽधो धृत्वा शयनं कार्यम्। स्वप्ने वदति सत्यमेव। यदि साधको लक्ष त्रयं जपेत्तदा सा प्रत्यक्षा भवति ॥ भूतभविष्यद्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति ॥ ७ ॥ तंत्रांतरेऽपि–ॐ कर्णपिशाचिनि पिंगल लोचने स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः तद्दशांशतो होमः। तिलं भुक्त्वा एकभुक्तिव्रतं कार्यम् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। देवी कर्णपिशाचिनी प्रसन्ना भवति। त्रलोक्यवार्तां कथयति ॥ ८ ॥ मतांतरेऽपि–ॐ अरविंदे स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अमुमयुतं जपेदेकविंशतिदिनं यावत् कर्णपिशाचिनी सिद्धा भवति। भूतभविष्य द्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति ॥ ९ ॥ मतांतरेऽपि–ॐ क्लीं जयादेवि स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्याऽपि ऋष्यादिन्यासादेरभावः ॥ एवं लक्षं जपित्वा गृहगोधिकां निपात्य तदुपरि जयादेवीं यथाशक्ति संपूज्य तावज्जपेत् यावत्सा जीवति ततः सिद्ध्यति सिद्धिस्तु[2] मनसा प्रश्ने कृते सा अतति तस्याः पृष्ठे सर्वं भूतभविष्यादिकं पश्यति ॥ १० ॥ मतांतरेऽपि– ॐ विश्व रूपे पिशाचि वद वद ह्रीं स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षं जपेत् दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत् एकविंशतिदिनं यावत् ॥ तदा त्रैलोक्यवार्तां सर्वां कर्णे कथयति ॥ ११ ॥ ॥ तंत्रांतरेऽपि–ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतरातीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचि स्वाहा ॥ इति पंचषष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–प्रातःकाल घृतका और रात्रिमें घृत तेल

१ पाठांतरे मम कर्णे प्रविश। २ इस मंत्रकी सिद्धि होजानेपर साधक जब अपने मनमें किसी प्रश्नको करता है उसी समय देवी साक्षात् आकर उस प्रश्नका यथार्थ उत्तर देती है तथा साधक उसके पृष्ठमें सम्पूर्ण भूत और भविष्य विषय लिखा हुआ देखता है।

दोनोंका दीपक जलाकर त्रिशूलकी पूजा करे ॥ इस प्रकार मन्त्रका सवा लक्ष जप करनेसे मंत्र सिद्ध हो जाता है पीछे अशुचि हो बेरवृक्षके नीचे बैठकर रात्रिके समय सवा लाख जप करनेसे कानमें शब्द आने लग जाता है, फिर जिस वक्त साधक किसी बातके जाननेकी इच्छा करता है उस वक्त कर्णपिशाचिनी देवी साधकके कानमें उसके प्रश्नका उत्तर दे देती है ॥ १२ ॥ अथ कर्णपिशाचिनीवार्तालीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासिनि सर्वनरनारीमुखवार्तालि वार्तां कथय सप्त समुद्रान्दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नीं ठं ठं हुं फट् स्वाहा ॥ इति सप्तपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-शेहका शूल दो २ जंगली वराहका दंत १ लेकर उसके ऊपर एक लाख बत्तीस हजार १३२००० जप करे तो सिद्ध हो। पीछे नित्य ही जप करता रहे तो साधकके प्रश्नका उत्तर कानमें कहती है,रोलीका तिलक करे नहीं रोलीका तिलक करनेसे सिद्धि नष्ट होजाती है।यह मंत्र एक महात्माकी कृपासे मिला था, उस महात्माको इस मंत्रकी पूर्णसिद्धि थी, इसीके प्रभावसे भूत भविष्य वर्ततमान तीनों कालकी वार्ता बहुत अच्छी तरह कह देते थे ॥ १३ ॥ अथ कर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः ॥ वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा-ॐ कं ह्रीं प्राणकर्षणमालोकितेन विश्वरूपी पिशाची वद वद इँ ह्रीं स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-पक्षैकं दशसाहस्रं जपित्वा पिंडदानेन सिद्ध्यति भूतभविष्यवर्तमानवार्तां कथयति ॥ १४ ॥ अन्यत्र मंत्रो यथा-ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् कनकवज्रवैडूर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि २ आगच्छ २ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकालज्ञानदूरदृष्टिदूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्निस्तंभनं शत्रुस्तंभनं शत्रुमुखस्तंभनं शत्रुगतिस्तंभनं शत्रुमतिस्तंभनं परेषां गतिं मतिं सर्वशत्रूणां वाग्जृंभणस्तंभनं कुरु २ शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धि करि शत्रूणामुद्योगविध्वंसकरि वीरचामुंडिनि हाटकधारिणि नगरीपुरीपट्टणस्थानसंमोहिनि असाध्यसाधिनि ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ॐ देवि हन २ हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-इमं मंत्रमयुतं जपेत् सिद्धिः ॥ सर्वं कर्णे कथयति शत्रून्नाशयति सर्वकार्याणि सिद्ध्यंति ॥ १५ ॥ ॥ अथ विप्रचांडालिनीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे-ॐ नमश्चामुंडे प्रचंडे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचांडालिनि शोभिनि प्रकर्षिणि

आकर्षय आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हूँ फट् स्वाहा ॥ इत्येकपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–प्रथम दिन उपवास करे शील तासे रहे धरतीपर सोवे मीठा भोजन जीमे जीमते जीमते छोड दे अपवित्रस्थानमें मंत्र जपे तो इक्कीस दिनमें सिद्ध हो पीछे सात दिन पृथ्वीपर सोवे तो आश्चर्य दखि तीसरे दिन स्वप्न दीखे उसमें रौद्रादिरूप दीखता है यदि स्वप्नमें न दीखे तो पुनः इक्कीस दिन जपे तो स्त्रीरूप प्रत्यक्ष दीखे छल करे अभक्ष्य वस्तु लाकर दे अनाचार करे मनको भय दे जो शंका न करे तो सिद्ध हो लक्ष्मी प्रत्यक्ष हो ॥ इति विप्रचांडालिनीमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ क्षोभिणीमंत्रप्रोगः ॥ मन्त्रो यथा प्राकृतग्रंथे–ॐ नम उच्छिष्टचांडालिनि क्षोभिणि दह दह द्रव द्रव आनपूरीश्रीभास्करि नमः स्वाहा ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–बाईस हजार एकसो तेईस मंत्र जपे तो सिद्ध हो ॥ २ ॥ अथ वेतालसाधनं प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ क्षाँ क्षाँ ह्रीं ह्रीं फट् ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशाने लक्षं जपेत् वेतालसिद्धिः ॥ ३ ॥ अथ श्मशानोत्थापनप्रयोगः ॥ प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा--ॐ नमो आठकाठकी लाकडी मंजबानी बान ॥ मुवा मुरदा बोले नहीं तो माया महावीरकी आन । शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति चतुंष्पचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मद्य सेर १ जातीपुष्प लोबानकी धूप बालछड छडीला कपूरकचरी अगर लेकर मसाणमें जावे मुरदेको देखकर दारूकी धार दे धूप खेवे फल विखेर दे सुगंध द्रव्य चढावे पीछे दूर आकर मंत्र पढे मद्यकी धार दे मसाण जागे हाहाकार मचे सिद्ध हो सही ॥ ४ ॥ अथ प्रेतसाधनम् । मंत्रो यथा–ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–शौचका बचा हुआ जल मूलनक्षत्रसे प्रारंभ करके बबूलके वृक्षमें डाला करे उस वृक्षके नीचे बैठकर अष्टोत्तरशत मंत्र प्रतिदिन जपे इस प्रकार छः मासतक करे पीछे एक दिन केवल मंत्र जपे और जल नहीं डाले तो प्रेत सम्मुख आकर पानीको मांगेगा उस वक्त तीन वचन लेवे कि याद किये पर आकर जो काम पडे सो करे पीछे जल देवे तो भूत सेवामें रहे सत्यमेव ॥ ५ ॥ अन्यो मंत्रो यथा–सूनसान सोखता मसान जागे भत नाचे शैतान ॥ इत्येकोनविंशत्य

क्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–श्मशानसे मनुष्यका हाड लावे पीछे एकांतस्थानमें शिवजीके मंदिरके भीतर बैठ उस हाडको आसनके नीचे दे अर्द्धरात्रिमें मंत्रका पांच हजार जप करे तो पांच सात दिनमें ही चरित्र दीखने लगेगा मद्यमांसादिक बलिके वास्ते सदैव पास रख लिया करे नहीं मालूम किस दिन आकर मांग बैठे जब चालीस दिनमें प्रेत सम्मुख आवे और बलि मांगे तव तीन वचन लेकर बुलानेपर हाजिर हूंगा अथवा उसकी शिखा लेकर मद्य मांसकी बलि देवे तो सदैव पास रहे जो काम हो सब करे ॥ इस मंत्रकी सिद्धि एक ब्राह्मणको थी उसके बडे बडे आश्चर्यकारक काम देखे गये उसने कृपापुर्वक प्रदान किया है ॥ ६ ॥

॥ अथ भूतयक्षिणीप्रसन्नताकारकं यंत्रम् ॥ इस यंत्रको सिरसपेडके नीचे बैठकर एक लक्ष लिखनेसे भूत प्रेत देवी यक्षादि अत्यंत प्रसन्न होते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥ अथ स्वप्ने भूतदर्शकं यंत्रम् ॥ ८ ॥ इस यंत्रको गिलोयके रससे भोजपत्र अथवा कागजपर लिखके गूगलकी धप देवे पीछे सिरहाने धरकर सो जावे तो स्वप्नमें भूतही भूत दीखेंगे इसमें संदेह नहीं॥८॥अथ दे०प्र०यं०इस यंत्रको आम्रवृक्षके नीचे सवा लक्ष लिखे तो देवी प्रसन्न हो दर्शन देवे मनचिंतित कार्य करे॥९॥ अथ पीरविरहनामंत्रप्रयोगः॥मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे–पीरविरहना फूलविरहनाँ धुंधुंकारे–सवासेरका तोसा खाय अस्सीकोसका धावा करे सातसै कुतक आगे चले सातसै कुतक पाछे चले छप्पनसे छूरी चलें बावनसै वीर चलें जिसमें गढ गजनाका पीर चले औरकी ध्वजा उखाडता चले अपनी ध्वजा टेकता चले सोतेको जगावता चले बैठेको उठाता चले हांथोंमें हथकडी गेरे पैरों में पैरकडी गेरे हलालमाहीं दीठ करे मुरदारमांहीं पीठ करे कलवाननवीकूं याद करे ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥

भूतप्रसन्नतायंत्रम् ॥

तं	तं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
इं	इं	इं	इं
लं	लं	लं	ल

अथ स्वप्न भूतदर्शकयंत्रम् ॥

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	८	९	१
४	६	९	१२

देवीप्रसन्नयन्त्रम्.

।।।	=	।।।	≡
।।।।	≡	।:।।	॥
≡	॥	१	।
।।।	=	–	=

अस्य विधानम्–ग्रहणकी रात्रिसे प्रारंभ करके नित्य १०८ मंत्र जपे चमेली पुष्प चढावे सवा सेर हलवेका भोग धरे तो चालीस दिनमें परिविरहना हाजिर होगा उस वक्त डरे नहीं तो जो काम कहोगे सो करेगा सदा पासमें हाजिर रहेगा ॥ ॥ अथ महम्मदापीरसाधनम् ॥ मंत्रो यथा–विस्मिल्लाहेररहेमानिरहीम पांय घूघरा कोट जंजीर जिसपर खेले मुहम्मदा पीर सवा मनका तीर जिसपर खेलता आवे मुहम्मदावीर मारमार करता आवे बांधबांध करता आवे डाकिनीको बांध पलीतको बांध नौ नर सिंहको बांध बावन भैरो बांध जातका मसाण बांध गूंगिया पीतिया धौलिया कालिया मसाण बांध बांध कुत्ता बावडी लावो सोती को लावो पीसतीको लावो पकातीको लावो जल्द जावो हजरत इमाम हुसेनकी जांघसे निकालकर ल्यावो बीबीफातमाके दामनसू खोलकर ल्यावो नहीं लावे तो माताका चूखा दूध हराम कहे लावे शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको नौचंदी जुमरातकी संध्यासे प्रारंभ करके प्रतिदिन दसदफे पढे लोहवानकी धूप देताजावे तो इक्कीस जुमेरातोंमें हाजिर होगा जो काम कहोगे सो करेगा किसी रोगीके ऊपर पढकर फेक देवे तो आराम हो जायगा ॥ अथ डाकिनीसाधनम्– ॐ नमो चढौ चढौ सूरवीर धरती चढथा पाताल चढ पग पाली चढथा कुणकुण वीर हनुमंतवीर चढथा धरती चढ पगपानचढी एडी चढी मुरचै चढी मुरचै चढी पिंडी चढी पिंडी चढी गोंडा चढी गोडां चढी जांघ चढी जांघ चढी कटि चढी कटि चढी पेट चढी पेटसूं धरणी चढी धरणीसूं पांसली चढी पांसलीसूं हिये चढी हियासूं छाती चढी छातीसूं खवा चढी खवासूं कंठ चढी कंठसूं मुख चढी मुखसूं जिह्वा चढी जिह्वासूं कान चढी कानसूं आंख चढी आंखसूं ललाट चढी ललाटसूं सीस चढी सीससूं कपाल चढी कपालसूं चोटी चढी हनुमान नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसंतावीर ये वीर चढे ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–ग्रहणकी रात्रिको चौका लगा घृतका दीपक बाल एक पैरसे खडा होकर एकसो आठ मंत्र पढे तो डाकिनी आवे उसको देखकर डरे नहीं तो सम्मुख बात करे पीछे जो जो काम कहोगे सो करेगी ॥ अथ प्रेतदर्शकतन्त्रम् ॥ प्राकृतग्रंथे–बागलको

लाकर उसको पारा प्यावे जब विष्ठाके साथ पारा बाहेर आजावे तब उसको बराबर शीशा मिला काजल करके नेत्रमें आंजनेसे भूत प्रेतोंका दर्शन होता है वह प्रेतादिक उसके कहेहुए कामको करेंगे और सौ कोसतककी बात पूंछोगे सो सच्ची सच्ची बतावेंगे ॥ अन्यत्– सुरमां राखे योनिमें, एक दिवस रजमाहि ॥ ताको होमे अग्निमें, भूत दृष्टिमें आहि ॥ अन्यत्–चिरमीरस आंखनमें आंजे। दीखे भूत भयंकर साजे ॥ पितृदर्शकतंत्रम्–रविदिन गधेका मूत्र लावे पृथ्वीमें पडने देवे नहीं उसको गूगलकी धूप देकर रात्रिके समय नेत्रोंमें अंजन करे तो पितृदेव दिखाई पडेंगे ॥ अन्यत्–बेलपत्ररस पीसिये, गुंजामूल मंगाय ॥ आँज आंखमें देखिये, आवे भूत लखाय ॥ अन्यत्–अंकोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः ॥ दृश्यंते निशि भूतानि खेचराणि महीतले ॥ अथ देवीदेवता दर्शकतंत्रम् ॥ प्राकृतग्रंथे--अंकोलके फलका तेल निकालके तगरके फलका चूर्ण मिलावे, पीछे नेत्रोंमें आंजनेसे जहां दृष्टि पडेगी वहां ही देवी देवता दीखेंगे । पश्चात् केवल तगरके तेलका अंजन करनेसे पुनः मानुषी दृष्टिको प्राप्त होजाता है॥ अथ भैरवदर्शकतंत्रम्– अमावस्याकी रात्रिको अपना वीर्य निकालकर सुखावे सूखनेसे पीसकर रख लेवे जब दूसरी अमावस्या आवे उस दिन संध्यासमय जहां भेड बकरियां आती हों वहां जाकर अंजन करे तो भैरव बकरेपर सवार हुआ दीखेगा । तब उसी वक्त उसकी कुलह उतारा लेनेसे भैरव पास आकर अपनी कुलहको मांगता है इस वास्ते उस कुलहको छिपा लेवे और देवे नहीं, जबतक वह टोपी साधकके पास रहेगी वह वशीभूत होकर साधकके पास रहेगा जो काम कहोगे तुरत कर लावेगा अगर तीन बचन देवे कि याद करते ही आऊंगा तब टोपीको देदेवे ॥ अन्यत्–रवि शनि वारको जब तारा टूटे उस वक्त पगडीमें गांठ दे इसी तरह सात तारा टूटनेतक सात गांठ देवे पीछे गूगलकी धूप दे कुएपर जावे जब पनहारी घडा लेकर चले तब एक गांठ खोलनेसे उस पनहारीकी मटकी फूट जायगी इसी तरह करता रहे जो मटकी न फटे अथवा जिसका गिरगिना फटनेसे बाकी रह जावे उसको लाकर संध्याके समय

जहां भेड बकरियां आती हों वहां जाकर उस घडेके गिरगिनेके भीतरसे दृष्टि करके देखे तो भैरव बकरेपर सवार नजर पडेगा उस वक्त गिरगिनेके भीतर हाथ डालकर उसकी टोपी उतार ले और गिरगिनेको फोडदे भैरव टोपी मांगे तो न देवे सदा पास रहेगा जो काम कहोगे सो करेगा ऐसा तीन वचन देनेसे टोपी दे देवे तो कोई हरज नहीं ॥ पूर्वजन्मदर्शकतंत्रम्–अंकोलबीजके तलमें घृत मिलाकर पुष्य नक्षत्रमें काजल पाडे इस काजलको नेत्रोंमें लगाकर ध्यान करनेसे पूर्वजन्म दीखता है ॥ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे कर्णपिशाचिन्यादिसाधनवर्णनं नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ चेटकतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ वटयक्षिणीचेटकः कामरत्नतंत्रे–ॐ सुमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ ह्रूं चेटक जय जय स्वाहा ॥ इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ शिवार्चनचन्द्रिकायाम्--ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ ह्रु चेटके जय जय स्वाहा ॥ इति विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किंचित्स्वादु भोजनम् ॥ स बलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः ॥ ततो देवी समागत्य हस्ताद्गृह्णाति भोजनम् ॥ तदैव सा वरं दत्त्वा सान्निध्यं कुरुते सदा ॥ अतीतानागतं कर्म स्वस्थास्वस्थं ब्रवीति सा ॥ पर्वतप्रतिमान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात् ॥ १ ॥ अथ कर्णवर्तश्मशानयक्षिणीचेटकः प्राकृतग्रंथे--ॐ क्लीं भगवतीभ्यो नमः ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--श्मशाने नग्नो भूत्वा पंचाशत्सहस्रं जपेत् मद्यभांडे भोजनेन देवी प्रसन्ना भवति त्रैकालिकीं वार्तां सर्वां कर्णे कथयति पुष्पफलादिकं ददाति ॥ २ ॥ अथ करालिनीचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ हूं कारिकरालिनी क्षं क्षां फट् ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–एकपदेन अष्टोत्तरशतं जपेत् अजामांसबलिं च दद्यात् रक्तपुष्पेण पूजयेत् एवं कृते षण्मासाभ्यंतरे वरं ददाति ॥ ३ ॥ अथ कालिकाचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–गोशालायां द्विलक्षं जपेत् तद्दशांशतो होमः । एवं कृते मध्यरात्रे वरं ददाति ॥ ४ ॥ अथ भैरवचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥ इति नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–चत्वारिंशत्सहस्रं जपेत् गोधूमस्य दशांशतो होमः । एवं कृते प्रतिदिनमष्टादशधान्यानि प्रयच्छति ॥ ५ ॥ अथ लिंगचेटकः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्–ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्तानां पार्वतीपते ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लिंगमूर्ध्नि करं दत्त्वा वामं लक्षं जपेन्मनुम् ॥ वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिंगी चेटकस्तु प्रयच्छति ॥ ६ ॥ अथ विरूचेटकः प्राकृतग्रंथे ॥ मंत्रो यथा–ॐ श्रीं काककमलवर्द्धने सर्वकार्यसर्वार्थान्देहि देहि सर्वकार्यं कुरु कुरु परिचर्य्यसर्वसिद्धिपादुकायां हं क्षं श्रीं

१ तत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा–ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्त पर्वतगते द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः ॥ अस्य विधानम्–स्वस्य मूर्ध्नि करं वामं दत्त्वा लक्षं जपेन्मनुम् ॥ वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिंगचेटकस्तु प्रयच्छति ॥

द्वादशान्नदायिने सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा ॥ इत्येकषष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लक्षं जपेत् गोधूमचणकस्य दशांशतो होमः । विरूचेटकः प्रसन्नो भवति सहस्रधेनुं ददाति स्वर्गवस्तु समानीय ददाति सप्तद्वीपांतरान्नं वस्त्रं च ददाति । चिंतितः शीघ्रमायाति वस्तु ददाति ॥ ७ ॥ अथ नानासिद्धिचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धीर्देहि देहि श्रीं क्लीं स्वाहा ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अश्वत्थवृक्षस्याधः उपविश्य पंचलक्षं जपेत् तद्दशांशं पलाशसमिद्भिः शुद्धघृतं जुहुयात् दशकपालिभ्यस्तृप्तिपूर्वकमन्नं देयम् । ततो विरूचेटकः प्रसन्नो भूत्वा प्रार्थितं ददाति खर्जूरचणकनारिकेलद्राक्षाफलान्यनेकानि ददाति ॥ ८ ॥ अथ नृसिंहचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ नमः श्रीनारसिंहाय मणिभद्राय शोषय वीर पहरे चीर क्षीर नाव पन वेग आव पाटवी पुजाय ठः ठः स्वाहा ॥ इति चतुश्चत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कार्तिककृष्णचतुर्दश्यां दीपमालिकायां वा अर्द्धरात्रे येन येन वस्तुना होमयेत् तत्तद्वस्तु समानीय ददाति ॥ अथवा नवरात्रे कुर्य्यात् । द्वादशसहस्राहुतिं तीर्थे दद्यात् । नारिकेलोत्थबलिं दद्यात् । सिद्धो भवति ॥ ९ ॥ अथ सागरचेटकः शिवार्चनचन्द्रिकायाम्--ॐ नमो भगवते समुद्राय देहि रत्नानि जलराशे त्रीणि नमोऽस्तु ते स्वाहा ॥ इत्यष्टाविंत्यक्षरो मंत्रः ॥ मतांतरे–ॐ नमो भगवन्समुद्र देहि रत्नानि जलराशे नमोऽस्तु ते स्वाहा ॥ इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--रात्रौ रात्रौ जपेन्मंत्रं सागरस्य तटे शुचिः । लक्षजापे कृते सिद्धे दत्ते सागरचेटकः ॥ रत्नत्रयं तदा मूल्यं तेन मंत्री सुखी भवेत् ॥ १० ॥ अथ हंसबद्धचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ हंसः सर्वलोकलोचनानि बन्धय बन्धय देवी आज्ञापयति स्वाहा ॥ इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–हृदि ध्यात्वा जपेद्रात्रौ हंसबद्धं स चेटकः ॥ योगं ददाति संतुष्टो जरामृत्युविनाशनम् ॥ ११ ॥ अथ मणिभद्रचेटकः प्राकृतग्रंथे–ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ शिवार्चनचन्द्रिकायाम्--ॐ मणिभद्राय नमो नमः पूर्णभद्राय नमो नमः महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इत्यष्टात्रिंशदक्षरो मंत्रः॥ मतांतरे--ॐ नमो

मणिभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमो महायक्षाय सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा ॥ इति चतुश्चत्वारिंशद क्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-- मन्त्रोऽयमष्टसाहस्रं जप्यः सप्तदिनावधि ॥ प्रत्यहं मणिभद्राख्यः प्रयच्छत्येकरूपकम् ॥ १२ ॥ अथ भूतेश्वरचेटको भूतडामरतंत्रे--ॐ ह्रूयः आः भूतेश्वरः आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—एकलिंगे गत्वा रात्रौ एकाकी रक्तमत्स्यमांसबलिं दद्यात् ॥ महामांसगुग्गुलुलवणेन सह धूपयेदष्टसहस्रं जपेत् । प्रथमे दिवसे स्वप्नं पश्यति द्वितीये दिवसे स्वयमेव पश्यति ॥ तृतीये दिवसे शीघ्रमागच्छति पुरस्तिष्ठति स एवमाह किं मया कर्तव्यम् । साधकेन वक्तव्यं किंकरो भवेति । नित्यानुबद्धो भवति स्वर्गं गत्वा अक्षयनिधानानि आनीय ददाति अतीतानागतवर्तमानं कथयति वस्त्रालंकार कामिकभोजनं च ददाति द्विवर्षसहस्रं जीवति ॥ अस्य मुद्रा—अंगुलिं वेष्टयित्वा मध्यमांगुलिं प्रसार्य सूच्याकारेण धारयेदपराजितमहा भूतराजस्य अंगुष्ठौ पार्श्वतो भतेश्वरस्य मुद्रा ॥ इति भूतेश्वरचेटकः ॥ १३ ॥ अथ किंकरयमस्य चेटको भूतडामरतंत्रे—ॐ अजः किंकरोत्तम आगच्छागच्छ स्वाहा ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—वज्रधरस्य गृहं गत्वा कृष्णचतुर्दश्यामारभ्यायुतं जपेत् दिवसान्सप्त पूर्वं सेवा भवति ततः साधनमारभेत ॥ चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्वा श्वेतभक्तघृतपायसपिंडकोपविष्टेन घृतप्रदीपं प्रज्वाल्य तावज्जपेद्यावदर्द्धरात्रे स्वयं किंकरोत्तमतां याति । आगताय चन्दनेनार्घो देयः । भो साधक किं मया कर्तव्यमिति यदा पृच्छति तदा साधकेन वक्तव्यमस्माकं किंकरो भवेति । दिव्यकामिकभोजनं ददाति रसरसायनं निधानं च ददाति । पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति । पुनरपि राज्यं ददाति । पंचवर्षसहस्राणि जीवति । तस्य मुद्राः संपुटं कृत्वा तर्जनीद्वयं कुंचयित्वा किंकरोत्तमस्य मुद्राः ॥ इति किंकरयमस्य चेटकः ॥ १४ ॥ अथ कालीचेटकः वीरभद्रोड्डीशतंत्रे—ॐ कंकाली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा ॥ इति पचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अनेन मंत्रेण सहस्रमत्स्यान्जुहुयात् काली वरदा भवति स्वर्णपलचतुष्कं प्रतिदिनं ददाति ॥

 इति कालीचेटकः ॥ १५ ॥ अथ मंत्रवादे कालीचेटकः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि मंत्रवादं सुदुर्लभम् ॥ येन विज्ञातमात्रेण सर्वसिद्धिः
 प्रजायते । ॐ काली कंकाली किलकिले स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अनेन मंत्रेण मल्लिकापुष्पसहस्रं जुहुयात्
तदा कंकाली वरदा भवति। सुवर्णमाषचतुष्टयं प्रतिदिनं ददाति॥इति मंत्रवादे कालीचेटकः॥१६॥अथ रक्तकंबलाचेटकः–ॐ ह्रीं रक्तकंबले
महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कंपय नीलय विलस हुंहुं ॥ इत्यष्टत्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–जप्यं मासत्रयं रक्तकंबला सा प्रसीदति ॥ मृतकोत्थापनं कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा ॥ इति रक्तकंबलाचेटकः ॥ १७ ॥ आकाशगामिचेटकः–ॐ ह्रीं ॐ हुंहुंहुं ॐ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥ त्रिलक्षं जपेत्। तदा दूरदृष्टिर्भवति सर्वपापरहितो भूत्वा आकाशचारी भवति ॥ १८ ॥ अन्यत्--ॐ नमः॥इति त्र्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–एतं मंत्रं वरारोहे जपेत्तु दशलक्षकम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो जायते खेचरः पुमान् ॥१९॥ अथ देवांगनाप्राप्तिचेटकः--ॐ ह्रीं नमः॥ इति चतुरक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–मंत्रेणानेन देवेशि सप्ताहं जपमाचरेत् ॥ रक्तांबरधरो नित्यं तथा कुंकुममालिकः ॥ सप्ताहं जपमात्रेण ह्यानयेदमराङ्गनाम् ॥ २० ॥ अथ ज्वालामालिनीचेटकः–ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि गृध्रगण परिवृते स्वाहा ॥ इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्--ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ भगवति तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ ज्वालामालिनि मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ गृध्रगणपरिवृते अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव नेत्रहीनं पंचांगन्यासं कृत्वा जपं कुर्यात् ॥ अभुक्तनियतश्चैव जपेन्मंत्रं जपाज्जयी ॥ दीपतैलाक्तपादोऽथ वारे गुरुदिने ततः ॥ १ ॥ जपेदष्टसहस्रं तु त्रयोविंशतिवासरान् ॥ प्रत्यहं सा सुवर्णं च ददातीति न संशयः ॥ स्मृतिमात्रेण वै मंत्री रिपून्सर्वान्विनाशयेत् ॥२१॥
॥ अथ फेत्कारिणीचेटकः–ॐ नमो अश्मकर्णेश्वरि दुर्बले आर्द्रकेशीजटाकलापे ढक्कणफेत्कारिणी स्वाहा ॥ इति त्रिंशदक्षरो

१ भाषानुवाद–दुर्लभ मन्त्रवादको शिवजी वर्णन करते हैं जिसके जाननेमात्रसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। २ इस मन्त्रसे एक हजार चमेलीके फूलोंका घृत मिलाकर एक हजार होम करै तो काली वर देनेवाली होती है, चारमासे सुवर्ण नित्य देती है। ३ कुदक सप्ताहजप करै लाल पुष्प और कुंकुमकी रंगीन माला धारणकरे तो सात दिनमें ही देवांगना प्राप्त हो।

मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--कृष्णपक्षचतुर्दशीकी रात्रिमें कलहारीकी जड लावे सफेद बकरीके दूधमें पीसकर तिलक करे तो जो देखे सोही वश हो । अथवा अजमोदकी जडको घोडीके दूधमें हरतालके साथ घिसे पीछे मुखमें रख लेवे पीछे जिस किसीसे जो वस्तु मांगे वही देदेगा ॥ अथ यक्षचेटकः–ॐ नमो महायक्षसेनाधिपतये मणिभद्राय अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--बडके पेडपर इस मंत्रको सात बार पढके उसकी लकडी ले आवे उस लकडीपर इकीस मंत्र पढके दहिने कानपर लगा लेवे तो विना मांगे अन्न प्राप्त हो ॥ अथ उच्छिष्टचांडालिनीचेटकः-ॐ नम उच्छिष्टचांडालिनि वाग्वादिनि राजमोहिनि प्रजामोहिनिं स्त्रीमोहिनि आन आन येवे वायु वायु उच्छिष्टचाण्डालि सत्यवादिनीकी शक्ति फुरे स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–भोजन करके जूठे मुख इस मंत्रको एक लाख जपे पीछे जहां कहीं एकांतमें बैठकर इस मंत्रका स्मरण करे वहीं भोजन आकर अपने आप उपस्थित होगा ॥ अथ रतिराजचेटकः--ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं विटपाय स्वाहा ॥ इति दशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--प्रथमं चेटकस्य नाम गृहीत्वा ततो गृहमध्ये उपविश्य पंचशतसहस्रं पञ्चलक्षं जपेत् । ततः सिद्धि र्भवति । बालारमणसमये ह्यष्टाविंशतिवारं जपेत् कामोद्दीपनं भवति स्त्री द्रवति वशीभवति ॥ ॥ अथ सूर्यदर्शकचेटको दत्तात्रेय तंत्रे--मातुलुंगस्य बीजेन तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥ लेपयेत्ताम्रपात्रेण मध्याह्ने च विलोकयेत् ॥ रथेन सह साकारो दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ॥ विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ ग्रहणदर्शकचेटकः–कृकलासस्य रक्तेन दर्पणार्द्धं तु लेपयेत् ॥ धारयेच्च शिरोमूर्ध्नि ग्रहणं दृश्यते जनैः ॥ ॥ अथ दिने नक्षत्रदर्शकचेटकः–अगस्त फूलको तेल, जो कोइ आंजे नेत्रमें । दिनमें तारे देख, होय अचंभो अतिघनो ॥ अन्यत्–सुरमा श्वेत जु लेयके, अगस्तपुष्प रस भेय ॥ दिना सातलौं ताहि पुनि छाया सूख, करेह ॥ घोट आंखमें आंजिये, ऊपर देखे जाय ॥ दिनमें तारे दीखहीं, ऐसो सहज उपाय ॥ अन्यत्–काठ धतूरा लेय मँगाई, कोदोका भुस ताहि मिलाई ॥ दुहुन मिलाय करै एक ढेरी, भर कपडा बत्ती कर फेरी ॥ ताको दीपक लेहु जलाय, काजल आंखिन

लेहु लगाय । दिनमें तारे दीखें भाई, सबहीसे यह सहज उपाई ॥ अथ रात्रिसमये दिनवद्दृश्यचेटकः--उलूकव्याघ्रमहिषीघोषगृध्र विलोचनैः । स्रोतोंजनं युतं चांज्यं दिवावत्पश्यते निशि ॥ अन्यत्--हदहदरुधिर नैनमें, जो कोइ आंजे लाय । विना चिरागके रात्रिमें, पुस्तक सबहि पढाय ॥ अन्यत्--रविदिन मेंढक मेंढकी, रति करता जो होय । अथवा मेंढक पीलिया, मेंढकही पर जोय ॥ लावै मार सुखायकर, जारे अग्नीमांहि । सुरमे कासा पीसके, आंजे नैनोंमाहि ॥ रात अंधेरी होय जब, करिये जो मनभाय । दीखे सगरी वस्तु यों, ज्यों दिनमें दृष्टि आय ॥ अन्यत्--घृतको दीपक बालिये, उल्लूखोपडी मांहि । तामें काजर पाडिये, प्यालो खोपडी काहि ॥ ताहि आंजिये नेत्रमें, रात्रिमें दिन होय । जो चाहे सो बांचिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥ ॥ अथ शतयोजनदृष्टिचेटकः--कृष्णपक्ष चौदश दिना, शीस गीधको लाय । भर मांटी गाडे कहीं, लहसन बीज बुवाय ॥ पुष्यनक्षत्र आवे जबहीं, फल अरु फूल लायके तबहीं । काजल संग ताहि पिसवावे, घृत मिलाय आंखनमें लावे । सौ योजनतक धरती चमके, पुनिः दिनमें ताराहू दमके ॥ ॥ ॥ अथ अनाहारचेटको दत्तात्रेयतंत्रे-अंत्राणि कृकलासस्य मज्जाकारंजबीजकम् ॥ पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रि[१]लोहेन तु वेष्टिताम् । तां वक्त्रे धारयेद्यस्तं क्षुत्पिपासा न बाधते ॥ यस्मै कस्मै न दातव्या नान्यथा शंकरोदितम् ॥ तत्र मंत्रः–ॐ नमः सिद्धिरूपाय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥ अथ आहारकरणचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--संध्यायां शुष्कवृक्षस्य कर्तव्यम भिमंत्रणम् ॥ प्रातः पुष्पाणि संग्राह्य मालां शिरसि धारयेत् ॥ कौपीनं संपरित्यज्य भोजनं भीमसेनवत् ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यः सिद्ध योग उदाहृतः ॥ अन्यत्--गृहीत्वा मंत्रितान्मंत्री बिभीततरुपल्लवान् ॥ धारयेद्दक्षिणे हस्ते विंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ अन्यत्--अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने निबंधयेत् ॥ वायुपुत्र इवाश्चर्यं स तु भुंक्तेऽन्नपर्वतम् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवी आज्ञापयति स्वाहा ॥ इति सर्वयोगेष्वयमेव मंत्रः ॥ अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥ अन्यत् प्राकृतग्रंथे--जो वरणके वृक्षको,

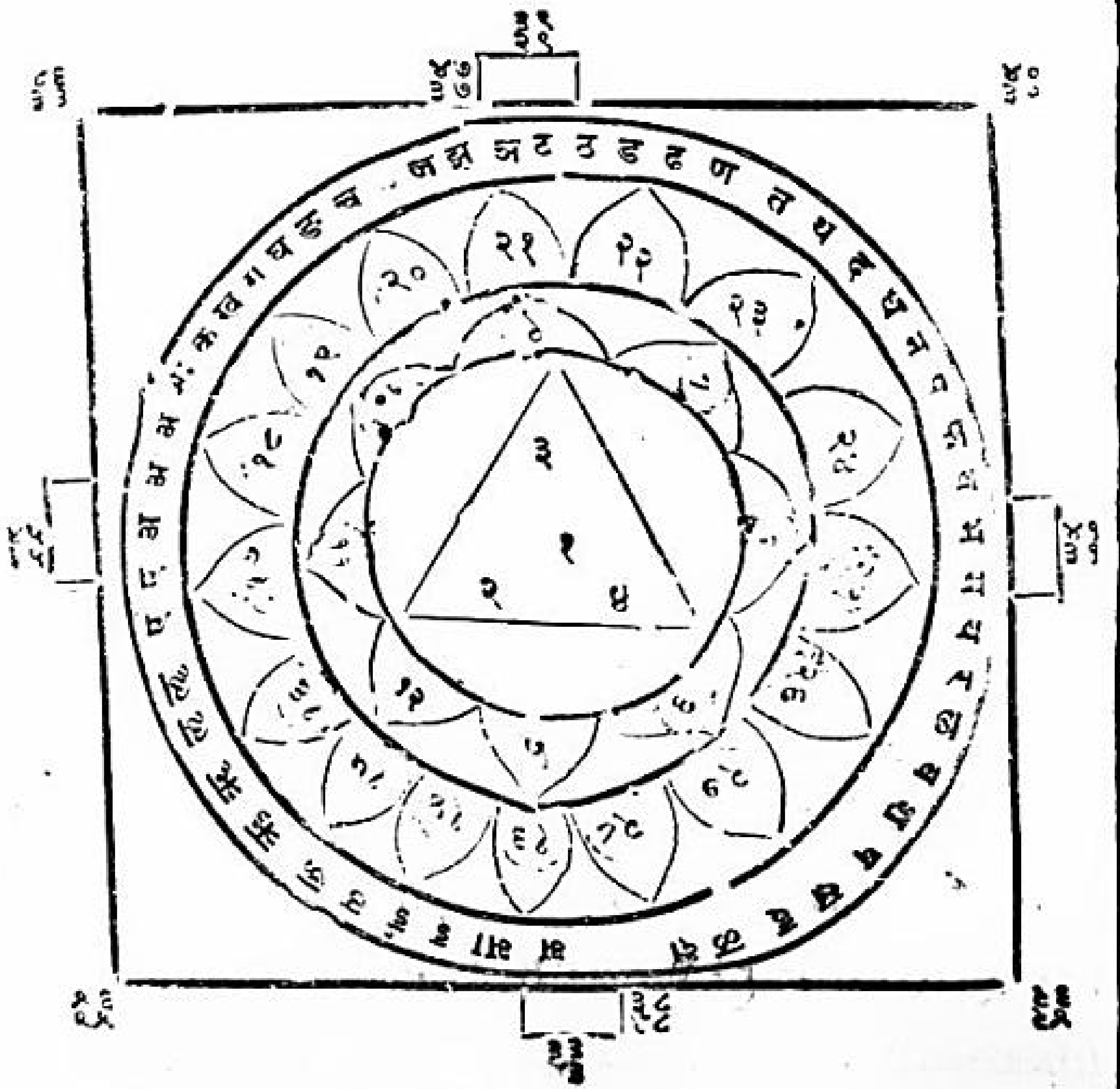
१ त्रिलोहो यथा–" दश हेम द्विषड् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम् ॥ एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥ "

संध्या न्यौते जाय । प्रातहि पत्र जु लायके, पगके तले दबाय ॥ भोजन करते ना थके, बीस तीसको एक । साधकही भोजन करे, कसर नहीं लौलेस ॥ अथ हाजरातचेटकः ॥ तत्रादौ ख्वाजामंत्रप्रयोगः—ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मेदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान् पीर करो घोडेपर भीड चढो हजरत पीर हाजर सो हाजर ॥ इति मन्त्रः । अस्य विधानम्—प्रतिदिन उलटी मालासे १०८ एकसौ आठ जप करे—लौंग, इलायची और लोहबानकी धूप देवे तो २१ दिनमें सिद्ध हो—पीछे जब चढाना हो आठ बजे दिनसे पहिले लडकेको पवित्र करके बैठावे--लडकेके नखमें स्याही लगादे और मुख देखनेको कहे आप आगे बैठकर मन्त्र पढकर धूप देता रहे—पहिले मैदान दीखेगा उस वक्त लडका कहे कि मुख दीखनेसे बंद होकर चौगान होजावो--तो चौगान होजायगा—पीछे लडका कहे कि दो जने आवो जब दो आ जावें तब कहे दो और आवो दो और भी आ जावें उस वक्त कहे कि दो और भी आवो इसी तरह ४ चार दफे कहे जब आठ आदमी आजावें--उस वक्त कहे कि झाडूवालेको बुलाकर झाडू लगवावो--झाडू लग जानेके बाद कहे कि भिश्तीको बुलाकर छिडकाव करावो, छिडकाव होजानेके पीछे कहे कि फर्श बिछावो—फर्श होजाने पर कहे कि दो कुरसी और तख्त मंगावो--तख्त आनेपर कहे कि तख्तपर गद्दी बिछावो—गद्दीके बिछ जानेपर कहे कि--पीरान् पीर साहबसे जाकर हमारी अर्ज गुजरावो कि आपका अमुक भक्त आपको याद करता है सो मुन्शी साहबको संग लेकर कृपा कर पधारो--जब आदमी जावे और पीर साहब पधारें—उस वक्त मुन्शीसे कहे कि भोग पीरान् पीर साहबकी नजर करे--भोग इलायची--अतर सब देवे--पीछे मुन्शीसे कहे कि पीरान् पीर साहबसे हमारी अर्ज करो कि अमक भक्त आपका फलाना काम पूछता है--उत्तर मिलेगा--यदि लडका उत्तरको समझ जावे तो ठीक कहे, नहीं समझे तो मुन्शीसे कहे कि मैं नहीं समझा अमुक भाषामें मुझको लिखकर दिखावो--तो मुन्शी लिखकर दिखावेगा--इसी प्रकार जो कुछ पूछना हो पूछ लेवे--इति ॥ महंमदपीरमंत्रो यथा--बिसिमिल्लाहेर्रहेमानि रहीम महम्मदा ताइयासिलारनवलखताजीका असवार यहां चलंता कौनकौन चल्या अजैगिरपर पर्वत चले हाजी चले गाजी चले

ढोल बाजंत भेरी बाजंत अहेमदा चलंत महेमदा चलंत राजा हठीली चलंत सत्तर सिला चलंत बहत्तर बल्लम चलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत बावन वीर चलंत चौंसठ जोगनी चलंत नौ नारसिंह चलंत बारह रावण चलंत चौसठ मसा चले सुलेमान पैगम्बरका तखत चलंत ईसा पैगंबरका तखत चलंत बहत्तर खान वज्राईल पैगम्बरका तखत चलंत लाल परी चली सुपेद परी चली जरद परी चली स्याम परी चली सबज परी चली हूर परी चली जर परी चली अळोल परी चली आसमान परी चली सुपेद परी चली अकाशसे उतरी वराय खुदा मेरे कामकूं सिताबी उतार ल्यावणा एक चलंता एकसौ चल्या दोय चलंता दोयसौ चल्या तीन चलंता तीनसौ चल्या बडे वेगसूं चल्या उडा कुडा देव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंकापे रावण चल्या हनुमंत चले घूमन गरसूं देवी घूमा चली नदी नालेसूं चली मंदोदरी रावनपुरीसुं चली उलटी पाखर सुलटी लागी जो कोई कहे हमारी बुरी उलटी सोमरली देखू ते तालमंत्र तेरी शक्ति बेस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम उत्तरका बाजा बजा उत्तरका बादशाह आया पश्चिमका बाजा बजा पश्चिमका बादशाह आया पूरबका बाजा बजा पूरबका बादशाह आया कालेकालेके असवार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहां हकालूं जहां हाजिर रहेना देखुदा महम्मदाकी सुखीर पीर नीरनीर लीला घोडा नीलाजीन जिसपर चढिआया महम्मदा पीर रोजा करे निवाज गुजारे अन्नपानीके कने न आवे खाजखाय अखजपर हरे सो मुसलमान बिहिस्तमें जाय सत्रामन लोहेको जंजीर तोडतो जाई तोडतो आव हाथ कुदाडी गले जंजीर ऐसी कही सुनो महम्मदापीर सुनो महम्मदापीर अपनी मुद्रारा पेशकरी पराई मुद्रा तोड डाल हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किलेकी असवारी ठः ठः स्वाहा इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—सफेद कपडा हाथ सवा गूगल और लोनकी धुप दीजे पीछे ऊपर सवासेर चावलकी महेजित बनावे थाली पानीसे भरकर धरे मह जितके ऊपर चौमुखा दीपक वाले कुवांरी कन्याको स्नान करा नवीन वस्त्र पहरकर सम्मुख बैठावे गुडकी गोली १४ मंत्रसे कन्या

को खवावे कन्या दीपकपर निगाह करे पीछे पूछे तो सत्य सत्य कहेगी ॥ २८ ॥ अथ हनुमन्मंत्रप्रयोगः–ॐ नमो भगवते रुद्रावताराय महाबलाय आंजनेयाय वायुपुत्राय कौशलेन्द्रानुचराय सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय २ सत्यं वद २ स्वाहा ह्रां ह्रां ॐ ॥ इति षष्ट्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–ॐ अस्य श्रीविश्वलोचनचक्राजहनुमन्मंत्रस्य अगस्त्य ऋषिः। अतिजगती छंदः । कौशलेन्द्रानुचरो महेश्वरो हनुमान् देवता । ह्रां बीजम् । स्वाहा शक्तिः । नमः कीलकम् । कार्यदर्शने विनियोगः ॥ ॐ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि १ । अतिजगतीच्छंदसे नमः मुखे २ । कौशलेन्द्रानुचरमहेश्वरहनुमद्देवतायै नमः हृदि ३ । ह्रां बीजाय नमो गुह्ये ४ । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५ । नमः कीलकाय नमो नाभौ ६ । कार्यदर्शनविनियोगाय नमः सर्वांङ्गे ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमो भगवते ह्रां हनुमते हृदयाय नमः १ । ॐ रुद्रावताराय महाबलाय ह्रीं हनुमते शिरसे स्वाहा २ । ॐ आंजनेयाय वायुपुत्राय ह्रूं हनुमते शिखायै वषट् ३ । ॐ कौशलेन्द्रानचराय ह्रैं हनुमते कवचाय हुं ४ । ॐ सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय दर्शय ह्रौं हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । सत्यं वद वद स्वाहा ह्रां ह्रां ॐ ह्रः हनुमते अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवमेव कराङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्–ॐ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥ वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत् ॥ ततः सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा विष्णुपीठे रुद्रपीठे वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडुकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च–पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्वायै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य

तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतात्मने हनुमंताय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य मूलेन पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तथा च पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तथा च त्रिकोणमध्ये—ॐ रां रामाय नमः । रामश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ पूर्वे ॐ हां हनुमंताय नमः । हनुमंतश्रीपा० १ । ऐशान्ये ॐ सं सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवश्रीपा० ३ । अग्निकोणे ॐ लं लक्ष्मणाय नमः । लक्ष्मणश्रीपा० ४ । इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति प्रथमावरणम्



॥ १ ॥ ततोऽष्टदले—पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च—ॐ अणिमायै नमः । अणिमाश्रीपा० १ । ॐ महिमायै नमः । महिमाश्रीपा० २ । ॐ गरिमायै नमः । गरिमाश्रीपा० ३ । ॐ लघिमायै नमः ।

लघिमाश्रीपा० ४ । ॐ प्राप्त्यै नमः । प्राप्तिश्रीपा० ५ । ॐ प्रकाम्यायै नमः । प्रकाम्याश्रीपा० ६ । ॐ ईशितायै नमः । ईशिताश्रीपा० ७ । ॐ वशितायै नमः । वशिताश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ सिद्धीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षोडशदले दक्षिणावर्तेन च–ॐ विजयध्वजाय नमः १ । ॐ सिंहध्वजाय नमः २ । ॐ हलध्वजाय नमः ३ । ॐ सुषेणाय नमः ४ । ॐ भद्रसेनाय नमः ५ । ॐ जयसेनाय नमः ६ । ॐ विजयसेनाय नमः ७ । ॐ गोमुखाय नमः ८ । ॐ दधिमुखाय नमः ९ । ॐ जडलांगूलाय नमः १० । ॐ महीलांगूलाय नमः ११ । ॐ कालाय नमः १२ । ॐ महाकालाय नमः १३ । ॐ वज्रसाराय नमः १४ । ॐ महासाराय नमः १५ । ॐ मकरध्वजाय नमः १६ ॥ इति षोडश पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो मंडले अकारादिक्षकारांतमातृका भूपुरे इंद्रादिदिक्षु दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य स्तोत्रादिकेन स्तुत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् मौनी एकचित्तो मूलमंत्रं जपेत् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । बदरघृतैः दशांशतो होमं तद्दशांशेन त्रिमधुभिस्तर्पणं तद्दशांशेन गंधवारिभिः मार्जनं तद्दशांशेन मोदकैः पायसेन वा ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । मंत्रे सिद्धे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् ॥ तद्यथा–शुक्रशनिभौमवासरे घृतदीपं स्वर्णादिपात्रे सुगंधवर्त्या संयोज्य 'ॐ हनुमद्दीपाय नमः' इति संपूज्य प्रज्वाल्य स्वर्णादिपात्रे कज्जलं पातयित्वा 'ॐ सिद्धाञ्जनाय नमः' इति कज्जलं संपूज्य ततो विशाले शोभने पात्रे द्व्यंगुलं वर्तुलं तदुपरि चतुरंगुलं चक्रवालमलक्तकेन वा विधाय तत्राद्यमण्डले स्नेहेन सुगंधेन कज्जलं संयोज्य तदुपरि मण्डलं कुंकुमेन संलिप्य भर्जपत्रे मूलमंत्रं लिखित्वा मंत्रांतरे च पत्रांतरयोः स्वप्ननिरूपकतगरादीनगरकुंकुमकर्पूरकल्केन निरूपयेत् । तदग्रे यंत्रं लिखित्वा- ॐ जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः ॥ राजा जयति सुग्रीवो हनुमान्कार्यसाधकः ॥१॥ इति मंत्रेण मूलमंत्रेण वा षोडशोपचारैः संपूजयेत् । ततः स्नातं शुद्धमखंडितब्रह्मचर्यमदूषितं बटुं संस्थाप्य मंत्रं श्रावयेत् पूजां च कुर्यात् । ततः गोघृतेन तैलेन वा दीपं प्रज्वाल्य शुचिर्मौनी अष्टोत्तरशतं मूलमंत्रं जपेत् । ततो बालः समुत्थाय दीपकं स्पृष्ट्वा

मेचकमण्डले नेत्रं दत्त्वा दीपं पश्येत् । तत्र मंत्रत्रयं जपेत् हुं इति प्रजपन् बालं पृच्छेत् किं पश्यासि एवं पुनः पुनः कुर्यात्--बालकः पूर्वं तेजोमण्डलं पश्यति-तत उत्तरम्-तत उपवेशनम्-ततः प्रभाम्-ततः सभयदेवताः-ततः सिंहासनम्-ततो हनुमंतम्-ततः सुग्रीवम्-ततो लक्ष्मणम्--ततः श्रीरामं पश्यन् वदति--ततो यजमानः स्वचिंतितं कार्यं बालाय श्रावयेत्-बालः कृतांजलिर्वदेत्--भगवन् हनुमन्--मया निवेदितं कार्यं कृपया वद--इति । तद्भाषितं श्रुत्वा गुरवे निवेदयेत् । तेन कार्यसिद्ध्यसिद्धी जानीयात् । यदा तु किमपि न पश्यति अन्यथा पश्यति गिरिसमुद्रनागयक्षराक्षसनरनारीपशुपक्षिगणं पश्यति तदपि तदा शुभाशुभं तद्रूपेण जानीयात् । अनिष्टं पश्यति चेत् मंत्रयंत्रं वटुशिरसि निधाय मंत्रं जपित्वा पुनः पृच्छेत् ततः इष्टं पश्यति तत्र प्रश्ने एकवारं द्विवारं त्रिवारं वा कार्यं पृच्छेत् । चौरजारनारी द्यूतादीनां प्रश्नं न कुर्यात्-यदि कुर्यात्-लक्षमंत्रं जपेत् । शांतौ श्वेतवस्त्रमाल्यनैवेद्योपचारैस्तुष्टिं कुर्यात् । इतरे रक्तानि वस्त्राणि धारयेयुः । सिद्धं कार्यं भवति । प्रश्नवेलार्धरात्रिरेव ॥ इत्यगस्त्यसंहितायां सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे विश्वलोचनचक्रपूजाविधानं समाप्तम् ॥ कामाख्या मंत्रो यथा-ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धिदायै अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-अस्य मंत्रस्य वह्निक ऋषिः । जगती छंदः । कामाख्या देवता । प्रणवः शक्तिः । अव्यक्तं कीलकम् । अमुककर्माणि जपे विनियोगः । ॐ वह्निकऋषये नमः शिरसि १ । जगतीछंदसे नमः मुखे २ । कामाख्यादेवतायै नमः हृदि ३ । प्रणवशक्तये नमः पादयोः ४ । अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः २ । सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां नमः ३ । अमुककर्म अनामिकाभ्यां नमः ४ । कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ १ । ॐ नमो हृदयाय नमः १। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा २। सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट् ३। अमुककर्म कवचाय हुम् ४। कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-ॐ योनिमात्र शरीरा या कुंजवासिनि कामदा ॥ रजस्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मंत्रं जपेत् ॥ अस्य पुरश्च

रणमिहायुतजपः ॥ गुडहलपुष्पेण दशांशतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कर्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् । तथा च–पीछे इस यंत्रको लिखकर इसमें मेढककी राख लपेटके रुईके साथ बत्ती बनावे उसको तेलमें जलावे उस दीपकके सम्मुख आठ दस वर्षकी कन्या अथवा पुत्र उच्चवर्ण देवतागण हो नहवाकर बैठावे उसके हाथोंमें मेढककी राख तेलमें सानकर लगादेवे आप मंत्र पढने लगे और बालकको दीपककी लौपर दृष्टि बांधकर देखनेको कहे तो बालकको जैसा दीखेगा सत्यसत्य बतावेगा इसमे संदेह नहीं ॥ २८ ॥ अन्यत्–तैलमातङ्गीमंत्रः–ॐ ऐं तैलमातङ्गि नूनखमध्ये आगच्छ ततः कर्म कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति पंचविंशत्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रविवारकी रात्रिसे काले कम्बलपर बैठकर नग्न हो प्रतिदिन अष्टोत्तरशत १०८ वार मंत्र जपे तो इक्कीस २१ दिनमें सिद्ध हो पीछे प्रयोग इस प्रकारसे करे–शनिवारकी रात्रिको तिलका तेल तोला एक १ कांसीकी कटोरीमें डाल दूर्वाकी प्रोक्षणीद्वारा एकसो आठवार उस तेलको अभिमंत्रित करके रख छोडे–पुनः रविवारको प्रातः काल चौका लगा धूप दे फूलमाला चढा–एक लडका वर्ष ९ तथा १० तकका उसे स्नान कराके सुगंध द्रव्य लगा स्वच्छ वस्त्र पहराकर बैठादेवे–पीछे पहले दिनका अभिमंत्रित किया हुआ तेल लडकेके हाथवाले अंगूठेके नाखूनमें लगाकर लडकेको एक टक देखनेके वास्ते कहे और आप सामने बैठकर मंत्र पढ पढ कर लडकेके ऊपर फूंक मारता रहे धूप भी देता रहे–थोडी देर पीछे लडकेसे पूंछे तुझको कुछ दीखता है–पहले मुख दीखेगा–जब लडकेसे कहलावे कि–हे मातेश्वरी ! तुम्हारा अमुक भक्त याद करता है सो जल्द आकर दर्शन दो ऐसा कहनेपर जब–सिंहपर चढी देवी या लटा बिखरेहुए भैरव दीखे–तब लडकेके हाथमें–पेडा देकर–लडकेसे कहलावे कि–भोग लो–पीछे–इलायची दे–पीछे सुगंधद्रव्य देवे–यदि लेतीहुई दीखे जब लेचुके उस वक्त लडका हाथ जोड कर पूंछे–आपका अमुक भक्त अमुक कार्य पूछता है सो कृपापूर्वक बतावो–ऐसा कहनेसे बतादेगी–जबतक प्रश्न करे धूप देता रहै ॥ अन्यो मंत्रो यथा–बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम खुदाई बडा तू बडा जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरा सादात फुरो वादना मुरादी बेबुनि

यादी तुर्कमापरि तायियासिलार देखूं तेरी शक्ति वेगि बांधिल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारहसो शाकिनी कामनदुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया बैताल वेगि बांधिलाव जो न बांधि लावै तो दुहाई सुलेमान पैगम्बरकी ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--शुक्रके शुक्र तेल अतर लौंग धूप मिठाईसे पूजन करके एकसौ आठ दफे मंत्र पढे तो चालीस दिनमें सिद्ध होजायगा पीछे जब हाजिर करना होवे तब मट्टीसे चौका लगा उसपर चावलोंकी मसजिद बनावे पीछे पट्टापर त्रिशूल लिख कन्याको नहलाकर स्वच्छ वस्त्र पहरावे और उस पट्टेपर बैठा देवे उसके सम्मुख दीपक जोडकर धरे आप मंत्र पढ पढ कर कन्याके मस्तकपर चावलोंको मारे तो वह कन्या जो कुछ पूंछोगे दीपकमें देखकर बतावेगी। सत्यमेव न संदेहः ॥ २९ ॥ अन्यत्--पुष्यनक्षत्रमें सूर्योदयके पहले नग्न होकर लाल औंगाकी जड साबित खोदकर निकाल लावे उसके तांतूमें रुई लपेट दीपक बालकर दिखानेसे सत्य सत्य विना मंत्रके ही दीखने लगेगा। सत्पमेव न संदेहः ॥ ३० ॥ अथ मंडूकयुग्मचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--मंडूकद्वितयं ग्राह्यमेका नारी परो नरः। द्वितीया मुखमध्ये च मुद्रा स्वर्णस्य दीयते ॥ १ ॥ श्मशाने गर्तकुंडे तु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ॥ नार्याः कार्या चिता वामे पुरुषस्य च दक्षिणे ॥ एकादशदिनं यावद्गंधकं धूपमादिशेत् ॥ तद्दिने संगृहीत्वा तु मुद्रिकां ग्राह्य यत्नतः ॥ नारीसंज्ञां मुद्रिकां च त्रिलोहे वेष्टितां कुरु ॥ दक्षिणे बाहुमूले च कंठस्थाने विशेषतः ॥ धारयेच्च नरः सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ पुरुषाख्या मुद्रिकेयं संसारे दीयते तथा ॥ व्यापारं तस्य कृत्वा तु यथेच्छं सुखमाप्नुयात् ॥ क्षणमात्रे हस्तमध्ये आगच्छति न संशयः॥ यावज्जीवं नरः सत्यं यावत्कौतुककौतुकम् ॥ युग्मसंज्ञस्त्वयं सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ वस्त्वाकर्षणचेटकः प्राकृतग्रंथे--पारा विष अरु बीज अंडके, मांस नागको लीजे। बीज ककोडा मांस छिपकली, बंदर हाडजु लीजे ॥ लेपकरे जल पीस हथेली, जहां हाथ वह लागे। बिन बल किये वस्तु वह आपुहि, संगहि संग जु लागे ॥ यंत्रभंजनचेटकः--रविदिन दोपहरी समै, नंगा होकर ल्याय।

१ त्रिलोहो यथा--"दश हेम द्विषट ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम्। एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि ॥"

चील कागका घोसला, लाइ धूप दे ताय ॥ बहुरि जरावे अग्निमें, ल्यावे अग्नि उठाय । मुँदे कलफपर मारिये, कुंजी बिन खुल जाय ॥ अन्यत्–भादों भौमवारको जोई, चन्द्रग्रहण कहि ता दिन होई । नंगा होय जतन यह कीजे, जड ओंगाकी खोद धरीजे ॥ जीभ नाक दांत अरु काना, इनका मल सब लेय समाना । पांचों पीस धरे निजपासा, यहविध करिये चेटक जासा ॥ एक हाथमें गुटिका रखिये, 'द्राविण द्राविण स्वाहा' जपिये। ऐसे जपत छुवत ही ताला, बिन तालीहि खुले ततकाला॥ अथ निगडभंजनचेटकः–दत्तात्रेयतंत्रे– ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हसहस नृत्य २ तद २ नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः॥ हस्तनक्षत्रमें सिंदुवारकी उस जडको लावे जो उत्तरकी तरफ गई हो पीछे मंत्र पढकरबेडीके लगावे तो तत्काल खुल पडे॥ प्राकृतग्रंथे–लाल कमल जटामांसी लावे, लाय तुल्य किरकिटे खवावे । ताको मल बेडीके लावे, तुरत बंद बेडी खुल जावे ॥ अथ द्वारभंजन चेटकः--दं हुं ॐ आयआय चिंचिटिचिटिहांलां वज्रनांदिके कालिके स्वाहा॥इति मंत्रः॥ इस मंत्रसे अभिमंत्रित करी हुई सफेद सरसोंको किवाडों पर मारे तो तत्काल ही बंदीगृहके किवाड खुल जाँयगे ॥ अथ राश्युत्थापनचेटकः–ॐ नमो हुंकालूं चौसठ योगिनी हुंकालूं बावनवीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं आगे चौंसठ वीर जलबंध बलबंध आकाशबंध पौनबंध दीनदेशकी दिशाबंध उत्तरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तवीर्यराजा आसमानमें बावन वीर गाजे नीचे तो चौंसठयोगिनी विराजें पीर तो राशि चलावै छपन्यां भैरूं राशि उडावै एक बंध आसमानमें लगाया दूजा बंध राशि धरमें ल्याया शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--दिवालीकी रात्रिको वनमें जाकर खुरसा (बकरा) की मैंगनी लावे अभिमंत्रित करके अन्नकी राशीके ऊपर धरे तो सब राशि उसके घर आजायगी ॥ २२ ॥ अथ तस्करग्रहणचेटकः--उद्‌मुद्‌जल्लज लाल पकड चोटी धर पछाड भेज कुद्दा लाव मुद्दा याकहु हारो या कहु हारो ॥ इति मंत्रः॥अस्य विधानम्--इस मंत्रकों नदीके किनारे अथवा कुएपर एकसौ इक्कीस दफे पढकरसो रहेतो सातही दिनमें सारा भेद मालूम होजायगा जो कोई चुरा ले गया होगा और जहां

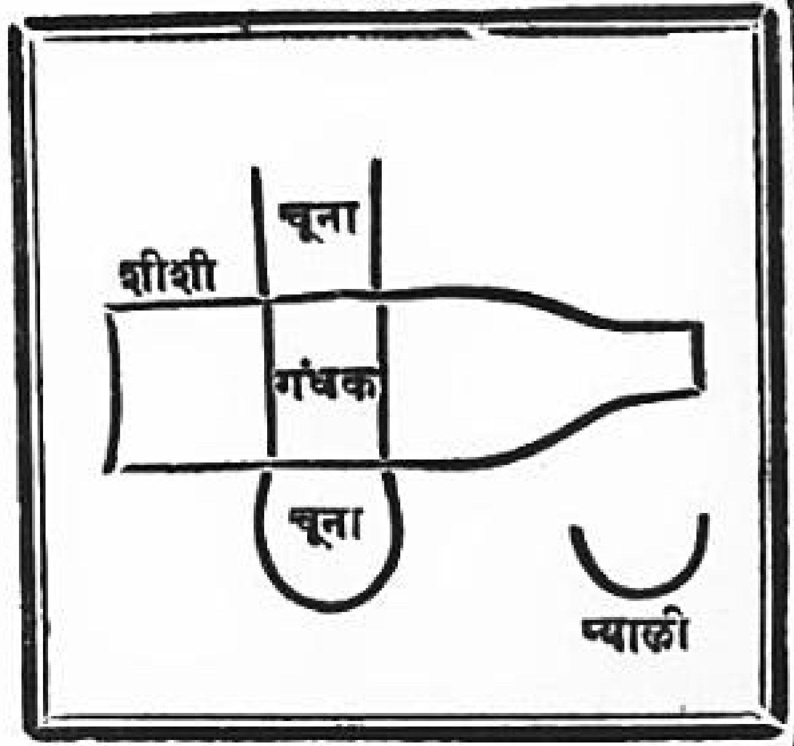
माल धरा होगा सब स्वप्नद्वारा मालूम होजायगा ॥२३॥ अन्यः--ॐ नमः किकिष्किधापर्वतपर कदलीवन तिस्के फल तोडनवाला चोर तेरे कुंजनको देनी पकड दे इतनी आज्ञा फुरो ॥ इति मंत्रः.॥ अस्य विधानम्--जिनपर संदेह हो उनका नाम लिखकर आटेमें गोली बनावे प्रति गोली इक्कीस मंत्र पढकर जलमें डालनेसे चोरका नाम तैरने लग जाता है ॥२४॥ अन्यः--ॐइंद्राग्निबंधबंध ॐ स्वाहा॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--रवि या शनिको लोगोंका नाम भोजपत्रपर लिखके प्रतिनाम एकसो आठ दफे मंत्रसे अभिमंत्रित कर अग्निमें डालनेसे चोरका नाम नहीं जलेगा ॥ अगर इसी मंत्रको लिखकर सफेद मुरगेके गलेमें बांध देवे और उस मुरगेको टोकरेके नीचे बंद करके लोगोंका हाथ धरावे तो चोरके हाथ धरते ही मुरग बोलने लगेगा ॥ अन्यः--रास्तीमुजुव्वेरजायेखुदाय कश्म दीदमगल कशुदमुजर्रात ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--लोगोंका नाम लिखके चमारकी सुतारीको उल्टी जूतीमें गाडकर दो अंगुलियोंपर उठावे चोरका नाम धरके मन्त्र पढे तो चोरका नाम धरते ही जूती चक्कर देने लगेगी । अनुभूतमेतत् ॥ अन्यत्--ॐ ह्रां चक्रेश्वरि चक्रधारिणि चक्रे वेगि काटि भ्रामिभ्रामि चोरग्रहणि स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ अन्यत्--ॐ नारसिंहवीर हरे कपडे ॐ नारसिंह वीर चावल चुपडे सरसोंके फक फक करै शाहको छोडै चोरको पकडै आदेस गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अन्यत्--ॐ नमो नारसिंह वीर ज्यूं [illegible] तूं चालै पवन चालै पानी चालै चोरका चित्त चालै चोरके मुखमें लोही चालै काया थांभै माथा परे करै जो चोरके मुखमें लोही [illegible]लावै तो गोरखनाथकी आज्ञा मेटै नौनाथ चौरासी सिद्धकी आज्ञा मेटै ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--चावल सवा पाव तीन [illegible] पानीसे धोकर गोमूत्रमें भिगोवे पीछे सुखाकर धर ले शनिवारके दिन प्रातःकाल धरती लीप कपडा बिछाकर चावलोंको उसके ऊपर [illegible]र चावलोंपर कोईसा एक मन्त्र पढ़कर एकसोआठ दफे फूंके पीछे चार यारी चौखुंटारूप या जिसमें सुलाख न हो लेकर दूधसे [illegible] चावल तोलकर सबको चबावे तो चोरके मुखसे लोही निकलेगा ॥ अथ मार्गचेटकः--ॐ ह्रीं आधारेश्वरि नित्यं [illegible] इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्--त्रिंशद्वारं जपित्वा शताभिमंत्रितेन सूत्रेण द्वौ पादौ बद्धा तदा पंचविंशतियोजनं गच्छेत् ॥

त्–श्वेतककोडा काकजंघा, सरफोंकाहू लेय । जड तीनोंकी सहतसंग, जाहि पिया कर देय ॥ अरु तीनोंकी पोटली, कटिसों
धाय । मारगमें हारै नहीं, उडयो पवनसो जाय ॥ अन्यत्–काले तीतलको तीनदिन, भूखा राखै कोय । चौथे दिन
ताहिको, पारा प्यावै जोय ॥ दुग्धभेय चावल तबहि, तीतलही खवावै । विष्ठा ताके गुटिका निकलै, मुखधर हार न आवै ॥
योजनवार्ताश्रवणचेटकः प्राकृतग्रंथे–चींट गीधकी लायके, तासम पीपर डारी । मालकांगनी छाल जु नींबू, पीस छानकर
ताहि पतालयंत्रमें, खैंच अरक पुनि लीजे । गेर कानमें योजनभरकी, तत्क्षण बात सुनीजे ॥ ॥ अथ गुप्तवार्ता
कृतग्रंथे--रविदिन जहांजु घुग्घू पावे, ताको काढ कलेजो लावे । ताको धूप दीप दे राखे, सोवत नरके
हिरदे ... गुप्त बात मनमें जो होई, ज्योंकी त्यों सबही कह देई ॥ ॥ अथ जललोपकरणचेटकः प्राकृतग्रंथे–रविदिन
...वस होय जब, चोंच हंसकी लाय । रेखा तासो खैंचिये, जहँ पनघटकी वाट । घटभर पनघटसों चलै, लांघ जाय
... । खाली घट दीखन लगै, विना नीरको पेष ॥ जो चालै फिर उलटिके, लांघै नहीं लकीर । भऱ्यो घडो दीखन लगै,
...वे जिय धीर ॥ ॥ अथ स्त्रीवीर्यपातनचेटको दत्तात्रेयतंत्रे–चटकमैथुनं पश्येद्यावद्द्वारं करोति च । तावद्बूंधश्च सूत्रेण
दीयंते कौतुकं महत् ॥ कृकलासस्य रक्तेन लेपितं ग्रंथिसूत्रकम् ॥ आगच्छति महारूपा वनिता स्वच्छंदचारिणी ॥ मध्यग्रंथि
विसृष्टा चेद्योषिद्वीर्यं सृजत्यलम् । विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ॥ अथ जलविहारचेटकः प्राकृत
ग्रंथे--होय सर्प जो दोमुह, ताको लोही लाय । तामें वस्त्र भिगोयके, धरिये धूप सुकाय ॥ फिर ताको गोला करे, मुखमें राखे मेल ।
दरियामें घुसके करे, जलभीतरकी सैल ॥ विद्या चेटक अति भलो, काऊ करके देख । गुरू विना नहि पाइये, गुप्त बातको भेद ॥ ॥
॥ अथ रसायनचेटको दत्तात्रेयतंत्रे--गोमूत्रं हरितालं च गंधकं च मनःशिला ॥ समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्यति पेषयेत् ॥ १ ॥
एकादशदिनं यावद्यत्नेनैव च रक्षयेत् ॥ मंत्रेण धूपदीपादिनैवेद्यैर्धूपसंयुतैः ॥ २ ॥ तत्र मंत्रः–ॐ नमो नमो हरिहराय रसायनसिद्धिं कुरु

कुरु स्वाहा ॥ पेषणसमये अयुतं जपेत् सिद्धिः । तं च मंत्र धूपादिकर्मणि योजयेत् । ततः–स वर्टी गोलकं कृत्वाऽऽवेष्ट्य वस्त्राणि यत्नतः॥ मृत्तिकां लेपयेत्तस्य च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ गर्तकुंडे विनिक्षिते पलाशकाष्ठवह्निना । अष्टप्रहरपर्यंतं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ४ ॥ तद्भस्म जायते सिद्धं सिद्धसिद्धीति नामकम् ॥ ताम्रपात्रे अग्निमध्ये बिंदुमात्रं विनिक्षिपेत् ॥ ५ ॥ तत्क्षणाज्जायते स्वर्णं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ देयोऽयं गुरुभक्ताय न दद्यादुष्टमानसे ॥ ६ ॥ सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रीलक्षजापकैः ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं शिवभक्तके ॥ ७ ॥ अग्निर्मुखं द्विजातीनां याचकानां विशेषतः ॥ गोप्यं गोप्यं महागोप्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८ ॥ वर्षं प्रति कृपां कृत्वा गोप्यं नैव प्रकाशयेत् ॥ वनितापुत्रमित्रादौ गोप्यं सिद्धिप्रदायकम् ॥ ९॥ अन्यत्–अथातः संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मवृक्षस्य कल्पनम् ॥ शृणु वत्स विधिं तस्य ब्रह्मवृक्षस्य यत्फलम् ॥ १० ॥ दारिद्र्यदुःखनिर्णाशो नराणां बुद्धिवर्द्धनम् ॥ तस्य पुष्पाणि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ११ ॥ अजाक्षीरेण तद्भाव्यं त्रिवारं हि पुनः पुनः ॥ वंगस्य षोडशांशेन प्रतितापं तु कारयेत् ॥ १२ ॥ तद्वंगं शोध्य नागेन पुनस्तैरवधार्यते ॥ जायते शोभनं तारं शंखकुंदसमप्रभम् ॥ १३ ॥ तस्य वृक्षस्य पुष्पाणि तद्रसे भाव्य तारकम् ॥ त्रिंशांशं वेधयेद्वंगं तेन तारं च नान्यथा ॥ १४ ॥ हिमकुंदेन्दुसदृशमष्टदोषविवर्जितम् ॥ जायते नान्यथा वत्स भक्तियुक्तस्य तद्भवेत् ॥ ॥ १५ ॥ ब्रह्मवृक्षफलं दृष्ट्वा गंधकं भाव्य यत्नतः ॥ शुक्लपत्रप्रलेपेन पुटेनैकेन कांचनम् ॥ १६ ॥ तस्य वृक्षस्य तैलेन भावयेद्रसगंधकम् ॥ नागं हेमं भवत्याशु द्वात्रिंशेन तु वेधयेत् ॥ १ ॥ शून्यभवनमध्ये तु कर्तव्यं तु यथोचितम् ॥ तस्य फलरसेनैव हेमं भवति निश्चितम् ॥ २ ॥ अन्यत्–पारा टंक ३ जस्त टंक ९ मट्टीके खपरेमें धर सागपत्ररस बंद २ दीजे तो भस्म होय । ततः–ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः वं आपदुद्धरणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय श्रीमहाभैरवाय नमः ॥ इति मंत्रेण सिद्धिद्वारा रौप्यपत्रपर लेपन करे अथवा रौप्य गलाकर डाले तो स्वर्णसिद्धिः ॥ ३ ॥ अन्यत्–पारेको तुलसी पत्रके रसमें घोटे जब दाना दाना होजाय उस वक्त चमगीदड नरके कमरमें कन्याका काता सूत इस मंत्रसे बांधे । कारण इस मंत्रके

प्रभावसे पारा अग्निमें उडेगा नहीं । तत्र मंत्रः-ॐ मोहनपारा अनतदुवारा काज करै हमारा जो अग्नि ऊपरथी जाय तो श्रीगुरुगोरख नाथकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ पीछे पारेको चमगीदडके मुखमें डालकर कंठतक पहुँचाय देवे तब मुख सी कपडमट्टी लगाकर खूब सुखावे और शरावसंपुटमें मुद्रा कर गजपुटमें फंक देवे जिसमें चमगीदडका हाड भी सबजलकर भस्म होजावे यह बात चारपांचोदन तक अग्निमें रहनेसे होगी जब अग्नि बुझनेलगे उस वक्त और छान देदिया करे स्वांग शीतल होनेपर पारेकी भस्म निकाल लब पीछे ताम्र गलाकर थोडीसी भस्म डाले तो सुवर्ण होवे रांगमें डाले तो सायत कोई वस्तु होजायगी यह चिकित्साचक्रवर्तीमें लिखा है ॥ ४ ॥ अन्यत्-सफेद हिंगुल अर्थात् रसकपूर तोला१ बिजौरे नींबके बीचमें रख कपडमट्टी करे और छाना सेर एकमें फूंक दे पीछे तांबेम डाले तो पानी सोखन होवे यह भावनाथजतीका प्रयोग है॥५॥ अन्यत्-हरताल तोला एक १ इन्द्रायणके फलमें धरके ४ कपडमट्टी करे और छाना सवासेरमें फूंके इसीतरह इकीस इन्द्रायणीमें फूंके तो पानी सोखनेवाली भस्म बने ॥ ५ ॥

ताम्रपात्र ।



अन्यत्-संभलखार हलदिया तोला तीन ३ ढाककी कोपल सेर १ के रसमें खरल कर उसीकी लुगदीमें धर कपडमट्टी करके फूंक दे पीछे रांग तोला तीन ३ में चावल चार ४ डाले तो सर्व काम बने सिद्ध हो यह विधान भी जतीलोगोंसे मिला है ॥ ६ ॥ अन्यत्-तबकिया हरताल हलदिया जहर पारा प्रत्येक डेढ तोला १॥ ग्वारपाठेके रसमें खरल घडी ४ पीछे टिकडी कर शरावसंपुटमें धर सीपके चूना तोला १० से मुख बंदकर कपडमट्टी दे छाना सेर २॥ म फूक ठंढा करके निकाले पीछे तांबापत्र तपा जरासा बुरकावे तो चक्कर खाकर सुवर्ण हो ॥ ७ ॥ अन्यत्-जंगली सअरके खवेका मांस डेढसेर १॥ तबकिया हरताल आधसेर ॥ कपडछान करके मिलावे मुखमुद्रा कर घूरेमें गाडे दिन ४० पीछे निकालकर उसमें जो पीत मुखके कीडे पडें

उनको शीशीमें भर खिचडी सीझते हुए बटलोहेमें धरे तो उन कीडोंका पानी होजायगा। वह पानी लेकर ताम्रपत्रपर लगावे और अग्निमें तपावे तो सुवर्ण हो अगर सुअरमांसके बदले गऊ जो पहले पहले ब्यावे उसके पहले या दूसरे दिनका खीस काममें लावे तोभी ठीक है कोई २ हरतालके बदलेमें आमलासार गंधक डालनेके वास्ते कहते हैं ॥ ८ ॥

॥ अन्यत्–एक महात्माने गंधकके तेल बनानेकी रीत इस प्रकार बताई है जैसे--एक ताम्रका बडा पात्र लेकर उसके दोनों बगलोंमें इतना बडा छेद करे जिसमें शीशी आजावे जिसका यंत्र इस चित्रमें देखो इस रीतिसे बना उसमें पत्थरका चूना तुर्तका फूंका हुआ भरो, पीछे शीशीमें गंधक भरके उस पात्रमें कुछ तिरछा अटकावो संधियोंको गेहूंके आटेसे खूब बंद करके सुखालो शीशीके ऊपर भी चूना ढक दो और पात्रका मुख खुला रक्खो, पीछे उस पात्रमें पानी डालनेसे जब चूना खदबदावेगा तो उसकी गरमीसे गंधकका तेल निकालकर बाहर पडने लगेगा उसको एक चीनीके प्यालेमें लेलो इस तेलकी सींक ताम्रपत्रपर लगाके अग्निमें तपानेसे सुवर्ण होजाता है। दूसरे महात्माने कहा है कि गंधक हरे वर्णकी होनी चाहिये उसको गूंदली अर्थात् प्याजपत्रके रसमें गोली बनाकर शीशीमें डालना चाहिये और ऐसा करनेसे पाताली यंत्रद्वारा अग्नियोगसे भी तेल निकाल आवेगा क्योंकि हरी गंधक अग्निमें विशेष गलती नहीं ॥ ९ ॥ अन्यत्–एक महात्मा बंगालीने गंधकके तेल निकालनेकी विधि इस प्रकारसे बताई है जैसे–आमलासार गंधकको जामुनकी छालके रसमें ४ पहर घोट कर गोला बनावे और एक तांबेका नारियल जिसके नीचे छिद्र हो उस नारियलमें तांबेकी



तिपाई धरके उसके ऊपर गंधकका गोला धरे पीछे ताम्रके नारियलका मुख ताम्रशत्रसे ही बंद करके मुद्रा करे इसके ऊपर अग्नि बालनेसे तेल टपक आवेगा पीछे इस तेलको ताम्रपत्रपर लगाकर अग्निमें देनेसे सुवर्ण होता है। कोई कोई बिजौरे नींबूके रसमें गंधक घोटनेके वास्ते कहता है॥१०॥ अन्यत्–रुद्रवंतीलक्षणम्–पत्ता चनेके पत्रसम, चपटा छत्ता गोल। जैसे मोटी रोटी होतीहै, याविध मोटा तोल॥ पृथ्वी नीचे चिकनी, जाबिच चींटी लाग॥ताका पत्र जिह्वा धरे, तीक्ष्णता अतिभाग॥निपजत हैं सबही जगह, मिलै भाग्यबिन नाहिं॥ ताम्रपत्र बुंद एक दे, तब सुवर्ण होजाहि॥११॥अन्यत्–संखियेकी डलीको दोलायंत्र द्वारा कडुवे तेलमें औटावे जब सींक घुसने लगे उसवक्त नकछिकनीके रस सहित कुल्हडेमें डालकर थोडासा शोराभी डाले और आंचपर धरे जब बोलनेसे बंद होजाय तब उतार ले पीछे तांबा मासा ६ सुहागेसे गलावे जब चक्कर खानेलगे तब संखिया रती १ गेरे तो तांबा सफेद होजायगा पीछे चांदी मासा ६ डाले जब चांदी भी चक्कर खानेलगे तब थोडासा शोरा डालकर धमावे पीछे रती १ संखिया और डाले तो अति चोखी चांदी बने॥ १२॥ अन्यत्–पारा तोला चार ४ संखिया तोला चार ४ दोनोंको दिन ७ नींबूके रसमें खरल करे जब गाढा होजाय सब चांदी तोला ४ के संपुटमें धर अत्यंत दृढ कपडमट्टी करे पीछे सुखाके एकांतमें तीस आरने उपलोंकी आंच दे तो आधी डिबिया समेत सब चीजोंकी चांदी होजायगी पीछे तांबा तोला दो २ गलाकर इस डिबियाकी चांदी रती ५ डाले तो वह तांबा शंखकुंद चन्द्रमाके समान सफेद होजायगा पीछे सफेद तांबेकी बराबर चांदी मिलावे और खूब धमावे तो सब चांदी होजायगी यह अनुभव कियाहुवा है मिथ्या नहीं ऐसा रसराजसुन्दरमें लिखा है॥ १३॥ अन्यत्–पीत धतूरापुष्परस, सीसा तोले आठ। लांगलीको लाय रस, और लेय रस पाठ॥ मर्दन करके खरलमें, गोला लेहु बनाय। गजपुटकी धर आगमें, फूंक सुवर्ण बनाय॥ अन्यत्–मधु घृत गुड अरु तांबो लाय, सोनामाखी पारामाहि। कीजे खरल इन्हे मिलवाय, दीजे तीव्र अग्नि जलवाय॥ मुसमांही रखकर मुखबंद, जासे रहे न पावे संध। दीजे अग्नि न बीच धराय, ऐसे चांदी सहज बनाय॥

वस्तुओंके मंदी तेजी देखनेकी सारणी.

वस्तु नाम	ध्रुवां क	वस्तु नाम	ध्रु वां.	वस्तु नाम	ध्रु वां.	संक्रांति	ध्रुवां क	वार नक्षत्र	ध्रुवां क	नक्षत्र	ध्रुवां क
सुवर्ण	९६	अफीम	११२	तूर	७२	मेष	३७	शुक्र	२४	विशाखा	३२०
चांदी	८१	तिल	५३	मूंग	५१	वृष.	८४	शनि	१४	अनुराधा	४९३
पीतल	५६	सरसों	८८	चणा	५६	मिथुन	६६	अश्वि.	१०	ज्येष्ठा	५५९
लोहा	५४	राई	७७	जुवार	१००	कर्क	१०९	भरणी	१०	मूल	५५२
शीसा	६०	कपूर	१०२	हींग	६२	सिंह	१२५	कृत्ति.	९६	पू. षा.	१४२
कांसी	१२७	अश्व	७००	कथीर	६७	कन्या	१०२	रोहि.	५६	उ. षा.	४१०
तांबा	१०	हांथी	६४	कुंकुम	२५	तुला	१४०	मृग.	२०	श्र०	५५०
मोती	६५	भैंस	६२	हरडे	७३	वृश्चि.	१४४	आर्द्रा	८६	ध०	७३६
कपास	१२७	गाय	७७	जीरा	७०	धन	१४४	पुनर्व.	२१	शतभि	५७६
सूत	६४	बैल	८७	कुळ.	६२	मकर	१९८	पुष्य	६४	पू. भा.	२७५
कपडा	१००	बकरी	६०	कांगनी	२०	कुंभ	१९०	श्लेषा	१३५	उ. भा.	१२६
घृत	५०	ऊंट	८५	साल	१४५	मीन	१८०	मघा	१५०	रेवती	२५६
तैल	१०	चावल	१७	सुपारी	२०४	वार रवि	४०	पू. फा.	२२०	तिथि एकम	१८
लूण	५६	चवला	८७	गिरी	८३	चंद्र	५०	उ. फा.	७२	द्विती.	२०
शक्कर	१०२	जव	५७	सूंठ	१००	मंगल	५७	हस्त	३३४	तृती.	२२
मिश्री	१०३	गेहूं	१४	मंजीठ	१४४	बुध	७२	चित्रा	२१	चौथ	२४
गुड़	४०	उडद	८०	नारेल	७८	बृहस्पति	६९	स्वाति	२१०	पंचमी	२६
रीति-मेषादिसंक्रांति जिस दिन बैठे उस दिनके सब ध्रुवांक जैसे संक्रांतिका तिथिका वारका नक्षत्रका इन सबोंके ध्रुवांकको जोडकर पीछे अभीष्ट वस्तुका ध्रुवांक मिलाकर ३ का भाग दे शेष १ बचे तो सस्ती २ बचे तो सम ० बचे तो अवश्य महंगी होवे।				छुहारा	१४४	षष्ठी	२५	दशमी	१७	चौदस	६
						सप्तमी	२३	एकादशी.	१५	पौर्णमासी	१६
						अष्टमी	२१	द्वाद.	१३	अमावस्या.	७
						नौमी	१९	त्रयोदशी.	११		

अथ समय ज्ञानचेटकः–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–कई वस्तु ओंको तोलकर इस मंत्रद्वारा गांठ बांध धरे प्रभातसमय तोले जो घटे वह महँगी होगी जो बढे वह सस्ती जानना ॥ अन्यत्–पूर्वलिखित चक्रके द्वारा सर्व वस्तुओंकी तेजी मंदीका ज्ञान हो जाता है ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे चेटकतंत्रे चतुर्थस्तरङ्गः॥४॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ निधिग्रहणाञ्जनतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ निधिस्थानलक्षणं कौतुकचिंतामणौ–पन्नगंधा भवेद्यत्र मृत्तिका तत्र जायते ॥ निधिः शावरमंत्रेण बलिना साधयेद्धनम् ॥ १ ॥ श्येनकाकबकाद्याश्च तथान्ये बहुपक्षिणः ॥ सततं यत्र तिष्ठंति निधिस्तत्र न संशयः ॥ २ ॥ यस्मिन्स्थाने प्रकुर्वंति काका मैथुनमादरात् ॥ सिंहस्थितिर्भवेद्यत्र निधिस्तत्र न संशयः ॥ ३ ॥ बहूनां यत्र वृक्षाणामेकस्मिन्सकलाः खगाः ॥ वसंति सकले काले निधानं तत्र लभ्यते ॥ ४ ॥ जीर्णोद्यानतडागेषु शून्यग्रामवनेषु च ॥ मातरो यत्र तिष्ठंति तत्र वित्तं न संशयः ॥ ५ ॥ कोमलः शाड्वलो रम्यो दृश्यते तृणसंचयः ॥ गोकुलैर्बहुधा लुब्धैः खाद्यमानोऽपि नित्यशः ॥ ६ ॥ पुनश्च तादृशो भूयो निधानं तत्र दृश्यते ॥ ७ ॥ शरद्धेमंतवर्षासु पवित्राः पत्रसंयुताः ॥ भवंति भूरुहा ग्रीष्मे तत्र स्थाने ध्रुवं निधिः ॥ ८ ॥ एकशीर्षेषु वृक्षेषु यदि शाखाद्वयं भवेत् ॥ तत्र वित्तं भवत्येव नासत्यं शाबरं वचः ॥ ९ ॥ विपरीतफलोपेता दृश्यंते यत्र भूरुहाः ॥ अवश्यं तत्र वित्तं स्यात्साधयेद्बलिना बुधः ॥ १० ॥ करिहस्तसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे ॥ रक्तं स्रवति भिन्नश्च तत्र वित्तं न संशयः ॥ ११ ॥ ध्वजमनिसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे ॥ शतसाहस्रकं वित्तं तदधो लभते ध्रुवम् ॥ ॥ १२ ॥ अनारोहेषु वृक्षेषु यथाधारो हि दृश्यते ॥ निधानं लक्षयेत्तत्र लभ्यं भाग्यवतां नृणाम् ॥ १३ ॥ ग्रीष्मसूर्यांशुभिर्दग्धा शोषं नायाति या मही ॥ दवानलेन दग्धा वा तोयसंपर्कवर्जिता ॥ प्रदेशः कुत्रचित्तस्याः पन्नगैः सेवितो यदि ॥ १४ ॥ इति निधिस्थाननिरीक्षणं कृत्वा लेपादिद्वारा निश्चयं कुर्यात् ॥ तथा च–गोमूत्रैर्घटमापूर्य निखनेच्छंकितस्थले ॥ सप्तरात्रे व्यतिक्रांते यदि जीर्यंति वै घटः ॥ तत्र तत्र धनं ज्ञेयं कुशलेनाथ भाषितम् ॥ १५ ॥ गोक्षीरेण तु संपेष्य तिलकोद्रवराजिकाः ॥ शणबीजं च

संपेष्य निशायां च निधिस्थलम् ॥ भ्रष्टलेपो भवेद्यत्र प्रातस्तत्र निधिं दिशेत् ॥ १६ ॥ अर्जुनस्य कदंबस्य वटस्य खदिरस्य च ॥ ब्रह्मवृक्षस्य पत्राणि कांजिकेनैव पेषयेत् ॥ निशायां लेपयद्भूमिं कल्कं मंत्रेण मंत्रयेत्॥प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्र वित्तं न संशयः ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य करंजस्य नारिकेलस्य पल्लवान् ॥ पेषयित्वारनालेन तेन भूमिं प्रलेपयेत् ॥ प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्रैव निधिमादिशेत् ॥ ॥ १८ ॥ बिल्वमक्षतमादाय कांजिकेनैव पेषयेत् ॥ संध्ययोर्लेपयेद्भूमिं विवर्णे धनमादिशेत् ॥ १९ ॥ उमादिमातृकायुक्तं किरातं तत्र पूजयेत् ॥ अत्र होमः प्रकर्तव्यो निशायां घृतगुग्गुलैः ॥ प्रभाते तद्विवर्णे चेन्निधिस्तत्र विनिश्चितम् ॥ २० ॥ तत्र मंत्रः– ॐ नमो भगवते रुद्राय कल्कलेपांजनं दर्शय दर्शय स्वाहा ठः ठः ॥ अनेन मंत्रेण कल्कलेपांजनमभिमंत्र्य लेपं कुर्यात् ॥ इति लेपांजन द्वारा निश्चयं कृत्वा नयनांजनेन निरीक्षयेत् ॥ अथ निधिग्रहणांजनं कक्षपुटौ–अंजनानां तु सर्वेषां मंत्रं साध्यमघोरकम् ॥ विना ऽघोरेण विघ्नाश्च नाशयंति पदे पदे ॥ २१ ॥ दक्षिणामूर्तिमासाद्य जपेदष्टसहस्रकम् ॥ ततः सर्वनिधानानि सुखसाध्यानि चाहरेत् ॥ २२ ॥ प्रार्थनामंत्रः–ॐ विश्वरूपं विरूपाक्षं विद्याधारं महेश्वरम् ॥ जपाम्यहं महादेवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ इति संप्रार्थ्य मंत्रं जपेत्–ॐ रुद्राय नमो रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वाय नमो विश्वरूपाय नमस्तत्पुरुषाय नमो यक्षाय नमो यक्षरूपाय नम एकाय नम एकयक्षाय नम एकनाथाय नम एकरोमाय नम एकेक्षणाय नमो वरदाय नमस्त्र्यक्षाय नमो नुद[1] नुद स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सोपवासो जितेन्द्रियो भूत्वा महेश्वरपूजां कृत्वा इमं मंत्रं जपेत् सिद्धिर्भवति ॥ अथ कज्जलपात्रं यथा– दीपकज्जलयोः पात्रं कर्तव्यं नरमुंडजम् ॥ सर्वेषां कज्जलानां तु सत्यं स्याच्छिवभाषितम् ॥ अथ कज्जलार्थे अग्निग्रहणमंत्रः--कज्जलानां पातनार्थं ग्राह्यो यत्नेन पावकः ॥ दीक्षितस्य गृहे श्रेष्ठश्चितायां तु विशेषतः ॥ रजकस्य गृहाद्वापि तक्षकस्य[2] गृहाच्च यः ॥ तत्र मंत्रः--ॐ ज्वलितविद्युति देहाय स्वाहा ॥ इति मंत्रेणाग्निं संगृह्य अग्निरक्षां कुर्यात् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[1] पाठांतरं छुदछुदेति । [2] पाठांतरं तस्करस्येति ।

धर २ वंध २ श्रीपते कुलपर्वते वसुमते स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण आग्निं रक्षयेत् ॥ अथ वर्तिमंत्रः--वर्तिबंधे दिशां बंधे पातालं बंध मंडलं बंधय स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण वर्तिमभिमंत्रयेत् ॥ अथ दीपमंत्रः--ॐ नमो भगवते सिद्धशाबराय ज्वल २ पातय२ बंध २ संहर २ दर्शय २ निधिं नमः स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण दीपं ज्वालयेत् ॥ अथ कज्जलग्रहणमंत्रः--ॐ ऐं सर्वसिद्धिभ्यो नमः विच्चे स्वाहा॥ अनेन मंत्रेण कज्जलं संग्राह्यम्॥ततः ॐ कालि कालि महाकालि रक्ष २ यदंजनं नमो विच्चे स्वाहा॥ इति मंत्रेण यत्किंचिदंजनद्रव्य मभिमंत्रयेत् ॥ ततः--ॐ ह्रीं सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं सर्वहिते सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमोनमः स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं क्षीं सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमो विच्चे स्वाहा ॥ तंत्रातरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्ननन्नमिहेन्नवि हेन्न २ मिहेन्न २ हरहररक्ष २ पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ एतदन्यतमेन मंत्रेणांजनयोग्यमूलिकामभिमंत्रयेत् ॥ ततः केवलहेमशला कया नेत्रे अंजयित्वा तया शलाकयांजनद्रव्यमभिमंत्र्यांजनं कुर्यात् ॥ २३ ॥ अंजयित्वांजनं पश्चात्ससाश्वत्थदलानि वै ॥ बंधयेत्प्रतिनेत्रं तु ह्यच्छिद्राधोमुखानि च ॥ पर्णोपरि सितं वस्त्रं पट्टजं वाथ बंधयेत् ॥ नांज्यादधिकहीनांगं श्वदष्टं चाग्निदग्ध कम् ॥ सम्पूर्णांगं शुचिं स्नातं द्विदिनं नक्तभोजिनम् ॥ क्षीरशाल्यन्नभोक्तारं द्विदिनांते ततोंऽजयेत् ॥ अंजितस्य शिखाबंध कर्तव्ये मंत्र उच्यते ॥ २४ ॥ अथ शिखाबंधनमंत्रः--ॐ नमो भगवते रुद्राय रुद्ररूपाय ॐ नमो लमहे ॐ लमहे--लुंडविविदुलु--[illegible]सुहुलु २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते तक्षकमारि सुलोचने स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय तुलु २ महेश्वरमाहेश्वल--विज्वलु २ मिज्वलु २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि--ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्न २ मिहेन्न--विहेन्न २ मिहेन्न २ हर २ यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥ एतदन्यतमेन मंत्रेण शिखां बध्नीयात् ॥ अस्य विधानम्--दक्षिणामूर्तिमाश्रित्य उदयास्तमयं जपेत्॥ सर्व एव समाख्यातः शिखाबंधः शिवोदितः ॥२५॥ अथ सर्वांजनविधिः--रोचनं कुंकुमं शखं वालमोदा तु चंदनम् ॥ राजावर्तकुमारी च सौवीरांजनपारदम् ॥ कट्फलं कांगनी चैव सितपद्मककेसरम् ॥ पावकं च घृतं क्षीरं समभागं च पेषयेत् ॥ श्मशान

तैलमादाय पूर्वपिष्टेन लेपयेत् ॥ तद्वर्तिघृतसंयुक्तं प्रज्वाल्य कज्जलं हरेत् ॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं पातालनिधिदर्शने ॥२६॥ अन्यत्—सप्तधा पद्मसूत्राणि भावयेदिक्षुजै रसैः ॥ तद्वर्त्या ज्वालयेद्दीपमंकुलीतैलसंयुतम् ॥ ग्राह्यं कृष्णचतुर्दश्यां कज्जलं निधिदर्शकम् ॥ सर्वांजनमिदं सिद्धं शंभुदेवेन भाषितम् ॥ २७ ॥ नवनीतं कृष्णकाकभोजनार्थं तु दापयेत् ॥ तद्विष्ठावर्तिकां कृत्वा कज्जलं पातयेद् बुधः ॥ सिद्धं सर्वांजनं प्रोक्तमंजनं निधिदर्शनम् ॥ रक्तपुच्छस्य ब्राह्मण्या रक्तं मैनशिलायुतम् ॥ पेषयित्वांजयेच्चक्षुर्निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ मासेन कृष्णरंगा वै सा श्यामां कुक्कुटीं नयेत् ॥ तद्रसां चांजयेन्नेत्रं निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ श्वेतगुंजारसैः सूत्रं दिनमेकं तु भावयेत्॥ वराह दंष्ट्राचूर्णं च सूत्रमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ दीपमंकुलतैलेन तद्वर्त्योद्धृतकज्जलम् ॥ सिद्धं सर्वांजनं प्रोक्तमंजनान्निधिदर्शनम् ॥ २८ ॥ शरत्काले तु संग्राह्य भूलतां रक्तवर्णिकाम् ॥ सिंदूरपूरितां कृत्वा रवितूलेन वेष्टयेत् ॥ अतिकृष्णतिलात्तैलं ग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ॥ तैल वर्त्योः प्रयोगेण कज्जलं चोत्तरायणे ॥ ग्राहयित्वांजयेच्चक्षुर्निधिं पश्यति पर्ववत् ॥ २९ ॥ अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वामांसं समाहरेत् ॥ वेष्टयेद्रवितूलेन वर्तिं तेनैव कारयेत् ॥ अजाघृतेन दीपं च प्रज्वाल्यादाय कज्जलम् ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पर्ववत् ॥ ३० ॥ नकुलस्य च मेषस्य लोचनानि समाहरेत् ॥ स्रोतोंजनसमायुक्तं मेषीतैलेन पेषयेत् ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ ३१ ॥ शृगालस्याक्षिचूर्णेन नेत्रयुग्मे तु रंजितः ॥ भूतं पश्यत्यभीतस्तु दर्शयेच्च महानिधिम् ॥ ३२ ॥ उलूकचक्षुरादाय कुंकुमं रोचनं शशी ॥ समांशं मधुना पिष्ट्वा एतत्सर्वांजनं परम् ॥ ३३ ॥ अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वाहृन्मांससंयुतम् ॥ घृतपक्वं तु तच्चूर्णं तद्दीपोद्धृतकज्जले ॥ अंजिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति साधकः ॥ ३४ रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनःशिलाम् ॥ तेन चांजितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ३५ ॥ सद्योहतमनुष्यस्य पित्तमादाय पूरयेत् ॥ शशिना रोचनेनैव मधुपाकेन शोषयेत् ॥ अष्टाहांते जले घृष्टमंजनं निधिदर्शकम् ॥ ३६ ॥ सूतं दारुनिशां चैव समभागानि पेषयेत् ॥ दिव्यांजनमिदं ख्यातं सर्वभूतवशंकरम् ॥ ३७ ॥ देवदालिरसैश्चक्षुरंजयित्वा तु तत्फलम् ॥ ३८ ॥ पुष्यार्के श्वेतगुंजाया विधिना मूलमाहरेत् ॥

उलूकाक्षेण मधुना सर्वांजनमिदं भवेत् ॥ ३९ ॥ रक्तागस्त्यस्य तैलेन धात्रीमूलं सुपेषितम् ॥ कर्पूरेण युतं चाज्यं सिद्धं सर्वांजनं परम् ॥ ४० ॥ अन्यत्–पुष्यार्के मानिवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा ॥ संघृष्य मधुना सार्द्धमंजयेल्लोचनद्वयम् ॥ ४१ ॥ राजावर्तं च कर्पूरं रक्तचंदनमूलिकम् ॥ रोचनं मधुसंयुक्तं भवेत्सर्वांजनं परम् ॥ ४२ ॥ पारदं मधु कर्पूरं काकमाचीफलं तथा ॥ समं पिष्ट्वा भवेत्सिद्धं दिव्यं सर्वांजनं परम् ॥ ४३ ॥ स्रोतोंजनमुलूकांडे तस्य जिह्वान्वितं क्षिपेत् ॥ सप्ताहांते समुद्धृत्य अंजनादीक्षते निधिम् ॥ ४४ ॥ आश्लेषायां तु कृष्णाहेरंतर्धूमेन कंचुकम् ॥ दग्धं स्रोतोंजनोन्मिश्रमंजनं निधिदर्शकम् ॥ ४५ ॥ स्रोतोंजनं सखद्योतमुलूकांडे विनिक्षिपेत् ॥ सप्ताहांते समुद्धृत्य पातालमधुनांजयेत्॥ दिवा नक्षत्रयुक्तानि दूरस्थानि च पश्यति ॥ ४६ ॥ हरितालं वचा लोध्रं रेणुका चांजनं तथा ॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् ॥ सम्पुटे ताम्रजे तत्र अघोरेणाथ मंत्रयेत् ॥ अंजिताक्षो नरः पश्येन्निधीन्नानाविधान्भुवि ॥ ४७ ॥ कुंकुमं रोचनं श्वेतकांचनस्यैव पल्लवाः ॥ सुश्वेतं च जयापुष्पं नंद्यावर्तसमं मधु ॥ सर्वांजनमिदं ख्यातं पातालनिधिदर्शनम् ॥ ४८ ॥ हंसपादी जटामांसी कर्पूरं च मनःशिला ॥ तेन चांजितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ४९ ॥ कृष्णाजपित्तं च मयूरपित्तमशोकमलं गतमुत्तराशाम् ॥ शशांकगोरोचनमाक्षिकं च सर्वांजनं नाम शिवोपदिष्टम् ॥ ५० ॥ एते सर्वांजनाः ख्याताः प्रसिद्धाः शिवभाषिताः ॥ अथ कुमारांजनं कक्षपुटौ–पुष्यनक्षत्रयोगेन पिंडीतगरुमूलिकाम् ॥ षडंगुलमितां कुर्याच्छलाकां रक्षयेत्ततः ॥ स्नापयेच्च शिलापृष्ठे कुमारं वा कुमारिकाम् ॥ ताच्छिलास्नानतोयेन रोचनं हैमगैरिकम् ॥ निघृष्टमंजयेन्नेत्रं मंत्रयुक्तं च पूर्ववत् ॥ रक्षिता या शलाका वै तयैवांज्य निधिं लभेत् ॥१॥ पुष्यार्केऽगस्त्यवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा ॥ पिष्टं पातालमधुना संयुक्तं निधिदर्शकम् ॥ २ ॥ पिंडीतगरजं मूलमुदीच्यां गतमुद्धरेत् ॥ चन्द्रसूर्योपरागेषु पातालमधुसंयुतम् ॥ पेषयित्वांजयेन्नेत्रे सम्यक्पश्यति भूनिधिम् ॥ ३ ॥ अथ पादजातांजनम्–तुलसीमूलिकां पुष्ये शनिवारे समुद्धरेत् ॥ निघृष्टं कांजिकेनाथ मधुना युतमंजयेत् ॥ पादजातं कुमारं वा कन्यकां वा यतो निधिः ॥ दृश्यते नात्र संदेहः पातालांतर्गतं तथा ॥ १ ॥ सुश्वेतकरवीरस्य पुष्यार्के मुलमुद्धरेत् ॥ पातालमधुना युक्तं

पादजातांजनं भवेत् ॥ २ ॥ पार्श्वपिप्पलजं मूलं पुष्यार्के विधिनोद्धृतम् ॥ पातालमधुना युक्तं पादजातांजनं भवेत् ॥ ३ ॥ ५० ॥ अथ पादुकायोगः—आगस्त्यवृक्षजां कृत्वा पादुकां निधिदर्शिकाम् ॥ पादुकांजनयोगेन सिद्धयोगा भवंति हि ॥ पादुकामंत्रो यथा--ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २ श्रमणेनामवैतालिनि स्वाहा ॥ अनेन पादुकामभिमंत्रयेत् ॥ ५१ ॥ इति निधानं निरीक्ष्य ततः उद्धरेत् ॥ तत्रादौ निधिखननमुहूर्तः कौतुकचिंतामणौ--अथ नक्षत्रवाराणि मूलमंत्रैर्यथोचितम् ॥ कथयामि विभागेन शिवेन कथितं यथा ॥ ५२ ॥ मणिनिधिलाभो वित्तमार्द्रायां नैव लभ्यते ॥ पुष्ये हस्ते चाविध्वंसो ध्रुवं सिद्धिः पुनर्वसौ ॥ ५३ ॥ आश्लेषायां भवेन्मृत्युर्विग्रहो वायभेदनम् ॥ फाल्गुन्यामर्थलाभः स्यान्मघायां मरणं ध्रुवम् ॥ ५४ ॥ चित्रायां कलहो भेद उत्तरा सिद्धिकृत्स्मृता ॥ विवादो जायते स्वात्यां विशाखा मृत्युदायिनी ॥ ५५ ॥ अनुराधाधना प्रोक्ता धनिष्ठा सिद्धिरुत्तमा ॥ पूर्वाषाढा शुभा प्रोक्ता मूले शोणितदर्शनम् ॥५६॥ ज्येष्ठायां च महाक्लेशः श्रवणे सिद्धिरुत्तमा ॥ पूर्वाभाद्रा ध्रुवं क्षेमं भरण्यां मरणं तथा ॥५७॥ अश्विनी रेवती पुष्टिः कृत्तिका कार्यनाशिनी ॥ रोहिण्यां सिद्धिमाप्नोति शाबरस्य वचो यथा ॥ ५८ ॥ क्रूरवारास्त्रयो वर्ज्या भौमादित्यशनैश्चराः ॥ व्यतीपाते त्र्यहं वर्ज्यं विष्ट्यां च प्रहरद्वयम् ॥ ५९ ॥ आषाढे नैव नक्षत्रे यावत्स्वपिति नो हरिः ॥ तावदंतरमाषाढे खन्यं कुर्वीत मंत्रवित् ॥ ॥ ६० ॥ मार्गशीर्षे शुभे मासे नक्षत्रे चंद्रदैवते ॥ खन्यं सर्वेषु कुर्वीत यावदाषाढमाहितम् ॥ ६१ ॥ कुर्याच्चोक्तेषु वै खन्यं नान्यथा सिद्धिभाग्भवेत् ॥ उच्यते मैत्रनक्षत्रमनुराधा शिवागमे ॥ ६२ ॥ मार्गशीर्षे च पौषे च प्रशस्तं खन्यकर्मसु ॥ सहायाः शोभनाः कार्याः सप्त पंच त्रयोऽपि वा ॥ असहायेन कर्तव्यं मंत्रेण निधिसाधनम् ॥ ६३ ॥ अथ ज्ञातनिधानस्य ग्रहणोपायः ॥ ब्रह्मचारिसहस्रेण शिलाशूलशतेन च ॥ रुद्राणां च सहस्रेण शिखाबंधो विधीयते ॥ ६४ ॥ तत्र मंत्रः—ॐ रक्ष रक्ष विच्चे स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण सर्वसहायानां शिखाबंधनं कृत्वा मंत्री शाबररूपं धारयेत् । तथा च--शाबरं धारयेद्रूपं मंत्री सर्वार्थसिद्धये ॥ गुणिनी या मृता नारी तत्केशैः रुपवीतकम् ॥ ६५ ॥ कृत्वा तद्धारयेत्तस्या भस्मनोद्धूलयेत्तनुम् ॥ नरमुंडधरो नग्नः शिखिपुच्छैः सुभूषणः ॥ इत्येवंरूपधृग्वीरः पूजां

कुर्यान्निधिस्थले ॥ ६६ ॥ तस्य प्रयोगः—चतुरस्रं चतुर्द्वारं तन्मध्येऽष्टदशांगुलम् ॥ कृत्वैव मंडलं मंत्री कुंकुमागुरुचंदनैः ॥ ६७ ॥ तन्मध्ये पूजयेच्छंभुं जलकुंभे शिवान्वितम् ॥ ६८ ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते ईशानाय इवाधिपतये आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा ॥ ६९ ॥ अनेन मंत्रेणार्चयेत् । ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण—ॐ नमो ब्राह्म्यै आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा इति मंत्रेण इति ब्राह्मीं संपूज्य माहेश्वरी२ कौमारी३ वैष्णवी४ वाराही५ इन्द्राणी ६ नारसिंही ७ चामुंडा ८ इत्यष्टौ मातृकास्तत्तन्नाम मंत्रोच्चारणेन पूजयेत् । ततः भूपुरे पूर्वादिक्रमेण—ॐ शक्राय आगच्छागच्छ बलिं गृहाण गृहाण नमो विच्चे स्वाहा ॥ एवं दशलोकपालान्त ज्ञायायुधानि च संपूजयेत् । ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ नंदिने आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ नमो विच्चे स्वाहा ॥ ७० ॥ एवं सर्वे द्वारपालाः पूज्याः । ते च यथा—नंदिनं च श्रियं पूर्वद्वारदेशे प्रपूजयेत् ॥ कीर्तिं चैव महाकालं दक्षिणे पश्चिमे पुनः ॥ सगणेशं कुमारं च उत्तरे दण्डिभृंगिणौ ॥ ७१ ॥ इत्येवं पूजनं कृत्वा अलिबल्युपचारकैः ॥ बलिं प्रदर्शयेन्मंत्री सहायांश्चाभिषेचयेत् ॥ ७२ ॥ बलिमंत्रो यथा--ॐ बलिं सुबलिं तृप्यंतु सिद्धिं मां दिशंतु ॐ नमो विच्चे स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण बलिं दद्यात् ॥ ७३ ॥ बलिं प्रदर्शयेन्मंत्री सहायाय समर्चितम् ॥ शिवकुंभांभसा सर्वान्मंत्रेणैवाभिषेचयेत् ॥ तत्र मंत्रः--ॐ नमो भगवते आरंभरे पिंगले२ लोहं धर २ विधर २ पापानि नाशय २ पच २ दुराचारान्हन २ अभिषेचितान्रक्ष २ अभिषेकपदमुपधारय २ कुरु २ समय २ भीषणे नमो विच्चे वौषट् ॥ ग्रंथांतरे अन्यमन्त्रः--ॐ नमो भगवते अर्भटे पिंगलोदराय पापं नाशय २ दुराचारं हन २ अभिषिक्तान्रक्ष २ अभिषेकपदमुपधारय २ कुरु २ समर २ भीषणे नमो विच्चे वौषट् ॥ इति अभिषेकमन्त्रः ॥ ७४ ॥ अथ भूमिखननोपायः—निधेः खननकाले तु जपंस्तिष्ठेदघोरकम् ॥ ध्यायेच्च शाबरं रूपं सर्वभूतभयावहम् ॥ ७५ ॥ मयूरपिच्छसंछन्नं गुञ्जाजालेन भूषितम् ॥ दंतुरोर्द्ध्वमतिश्याम रक्तोत्पलनिभेक्षणम् ॥ किरातमीश्वरं ध्यात्वा सर्वसिद्धिकरप्रदम् ॥ अथ अघोरमन्त्रः--ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरअघोरतरतरप्रस्फुर २ प्रकट २ कह २ शम २ जात २ दह २ पातय २ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रूं अघोरास्त्राय फट् ॥७६॥ इममघोरमंत्रं

जपेत्। पूर्वं सेवायुतं दशांशेन होमः गुग्गुलुमधुघृतैः सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ७७ ॥ खन्यमाने निधौ सर्पा निःसंरति भयानकाः ॥ औषधेन विना तेभ्यो भयं स्यान्मंत्रिणामपि ॥ तस्मादौषधयोगेन पादलेपेन तान्क्षिपेत् ॥ ७८ ॥ अर्कस्य करवीरस्य पनसस्य तु मूलिकाः॥ पिष्ट्वा पादप्रलेपेन दूरं गच्छंति पन्नगाः ॥ ७९ ॥ मल्लिका गिरिपर्णी च श्वेतार्कः कंटकारिका ॥ वचा च मूलिकां चैव पिष्ट्वा पादौ प्रलेपयेत् ॥ सर्पा यक्षगणाः क्रूरा ये चान्ये विघ्नकारिणः ॥ पलायंते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ ८० ॥ वह्निः कोशातकी वज्री श्वेतार्की गिरिकर्णिका ॥ वचा पाठा च निर्गुंडी कटुतुंब्याश्च मूलकम् ॥ निंबकेशरबीजानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम् ॥ अनेन पादलेपेन विघ्ना यांति दिशो दश ॥ एतन्नाराचयोगेन अपि पातालगं धनम् ॥ गृह्णाति नात्र संदेहः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥ ८१ ॥ कूष्मांडैरंडधत्तूरबीजानि पनसस्य च ॥ जातिदाडिममूलानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम् ॥ अनेन पादलेपेन सर्पा यक्षाः पिशाचकाः ॥ पलायंते न संदेहो निधिं संग्राहयेद्ध्रुवम् ॥ ८२ ॥ अथ धूपो दत्तात्रेयपटले–ईश्वर उवाच ॥ शिरीषवृक्षपंचांगं कटुतैलेन पाचितम् ॥ विषं चैव समायुक्तं धत्तूरबीजसंयुतम् ॥ पंचांगं करवीरस्य श्वेतगुंजासमन्वितम् ॥ उलूकविष्ठासंयुक्तं गंधकं च मनःशिलाम् ॥ धूपं दत्त्वा जपेन्मंत्रं निधिस्थाने विशेषतः ॥ पलायंते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ राक्षसा भूतवेताला देवदानवपन्नगाः ॥ निधिं सुखेन गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ धूपमंत्रः–ॐ नमो विघ्ननाशाय निधिग्रहणं कुरु २ स्वाहा ॥ इति मन्त्रस्य पूर्वमयुतं पुरश्चरणं कृत्वा अष्टोत्तरशतमंत्रेण कार्यं साधयेत् ॥ ८३ ॥ अथ दृष्टे निधौ मंत्री कीलकैः कीलयेद् द्रुतम् ॥ प्लक्षपालाशलोध्रोत्थपद्मनिंबकदंबजैः ॥ शम्युदुंबरकाश्वत्थजैः कीलैः पत्रसंयुतैः ॥ कीलनमंत्रः–पुनंतु मां देवजनाः पुनंतु वसवो धिया ॥ पुनंतु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ॥ अनेन मंत्रेण निधिं कीलयेत् ॥ ८४ ॥ अथ भूतबलिमंत्रः–ॐ सर्वभूताधिपतये नमः ॥ अनेन मंत्रेण मद्यमांसाभ्यां भूतबलिं दद्यात् ॥ ८५ ॥ पुष्पार्पणमंत्रः–ॐ ह्रीं हूं फट् ॥ अनेन मंत्रेण निधानस्यासनपुष्पाणि दद्यात्॥ ८६ ॥ अथ निधिग्रहणमंत्रः–ॐ नमो भगवति केतुमालिनि गरुडे शुभे ॐ ह्रीं कपालिनि उद्धारय २ गृहाण निधिं स्वाहा ॥ अनेन केतुमालिनीमंत्रेण निधिमुद्धरेत् ॥ ८७ ॥ चत्वारो निधयस्तत्र शंभुदेवेन भाषिताः ॥

कच्छपो मकरः शंखः पद्म इत्यभिधानतः ॥ ८८ ॥ कच्छपो मकरः श्रेष्ठः स्थिरचित्ता स्वभावतः ॥ सुखसिद्धया यथापूर्वं निधानेन समाहरेत् ॥ ८९ ॥ शब्देन तु मनुष्याणां शंखपद्मौ रसातलम् ॥ गच्छतो न तु दृश्येते तत्र मंत्रद्वयं स्मरेत् ॥ शैवं च वैष्णवं चैव ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ प्रथममंत्रः—ॐ नमो भगवते रुद्राय निधिमभितिष्ठमाणं चालय स्वाहा ॥ द्वितीयमंत्रः—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धर २ बंध २ श्रीपर्वते कुलपर्वते वसुमते निधानमुद्धर २ स्वाहा ॥ इति मंत्रद्वयं जपेत् ॥ ९० ॥ अथ पद्मसंज्ञकनिधिग्रहणोपयोगी मंत्रः—ॐ नमो भगवते शावररूपाय ॐ हूं फट् स्वाहा ॥ तंत्रांतरेऽपि—ॐ नमो भगवते शावररूपाय महाकिराताय कंकालरूपधराय हूं फट् स्वाहा ॥ अनेन सिद्धशावरमंत्रेण साध्यनिधिं साधयेत् ॥ ९० ॥ अथ द्रव्यशुद्धिकरणम्—मृत्काष्ठलोहभाण्डे त स्थितं द्रव्यं तु कालिकम् ॥ शैवालं वा समाश्रित्य तिष्ठेत्तं च विशोधयेत् ॥ ९२ ॥ कांजिकैर्लवणं पिष्ट्वा तस्मिन्द्रव्यं विनिक्षिपेत् ॥ यावल्लवणसंतुल्यं पाचयेन्मृदुवह्निना ॥ स्वर्णं च सर्वरत्नानि निर्मलानि भवंति वै ॥ करंजस्य विभीतस्य चित्रकस्य च पल्लवान् ॥ पिष्ट्वा लवणसंतुल्यानारनालेन लोलयेत् ॥ तल्लिप्तद्रविणाग्न्यग्नौ तापयेन्मलशांतये ॥ ९३ ॥ अथ समयदर्शनम्—केषां केषां प्रदातव्यं समयं शिक्षयेदमुम् ॥ यत्र क्वापि निधिं लब्ध्वा गुरवे तन्निवेदयेत् ॥ ९४ ॥ यद्ददाति गुरुस्तुष्टो गृह्णीयात्तत्समं समम् ॥ लब्धे न वचनं कार्यं यदि साक्षान्महानृपः ॥ गुरवे वा सहायेभ्यो यः कदाचिन्न यच्छति ॥ मंत्रो मंत्रांजनासिद्धिः क्रुद्धयंति किल देवताः ॥ ९५ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे निधिग्रहणाञ्जनतंत्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथादृश्यविद्यातंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादावासुरीकल्पे मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं क्लीं ऐं आसुरीरक्तवाससे अघोर अघोर कर्मकारिके अदृश्यं कुरु कुरु ह्रीं ऐं ॐ ॥ इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पुष्यार्के द्विमुखं सर्पं संगृह्य मंत्रसंयुतम् ॥ अरण्येऽथ श्मशाने वा शून्यागारे सुरालये ॥ १ ॥ ततो भूमिं विशोध्याथ भूरसीति च मंत्रवित् ॥ ततस्त्रिकोणं षट्कोणं भूरियंत्रं विलेपयेत् ॥ २ ॥ पूजयेन्मूलमंत्रेण ध्यानन्यासेन संयुतम् ॥ स्थापयेच्च शुभं कुंभं विधिवच्च ततो जपेत् ॥ ३ ॥ आजिघ्र कलशे मंत्रं विधिवत्कुंभपूजनम् ॥ महीद्यौरिति मंत्रेण मृत्तिकां निक्षिपेत्पुनः ॥ ४ ॥ नमो अस्तु सर्पेति तृचैः कुंभं प्रपूजयेत् ॥ पश्चात्संपुटयेत्कुंभं यंत्रं तस्योपरि लिखेत् ॥ ५ ॥ पाताले निक्षिपेत्कुंभं हस्तत्रयप्रमाणतः ॥ स्थंडिलं चतुरस्रं च स्थापयेत्तदुपर्यथ ॥ ६ ॥ तत्रैव यंत्रमालेख्य भुजंगाकारशोभितम् ॥ एवं विलिख्य तद्यंत्रं तन्मध्ये मूलमुच्चरेत् ॥ ७ ॥ मूलमंत्रं लिखित्वाथ पूजयेद्विधिपुर्वकम् ॥ द्वितीये सप्तके वत्स पूजनं कथयाम्यहम् ॥ ८ ॥ आगमोक्तेन कर्तव्यं मूलमंत्रेण चिंतयेत् ॥ साधकश्चैकभक्ताशी ह्येकविंशदिनानि च ॥ ९ ॥ भूमिशाय्यर्चयेन्मंत्रं ब्रह्मचर्ययुत शुचिः ॥ दंतजिह्वाविशुद्धश्च प्रातःस्नानं सुरार्चनम् ॥ १० ॥ जपं कृत्वायुतं त्रीणि त्रिकालं यंत्रपूजनम् ॥ रक्तचन्दनगंधाद्यैर्धूपदीपैस्तथोत्तमैः ॥ ११ ॥ नैवेद्यं विधिना कृत्वा अलिना पिशितैः सह ॥ नमोऽस्तु रुद्रेति ऋचा मंत्रैः शंभुं प्रपूजयेत् ॥ १२ ॥ अंबेंऽबिकेति मंत्रेण ततो गौरीं प्रपूजयेत् ॥ एवंविधां कृतां पूजां सप्ताहे च द्वितीयके ॥ १३ ॥ तृतीये सप्तके वाले शृण्वेकाग्रमनाः शुचिः ॥ समयाचारयोगेन पूजनीयं सदा बुधैः ॥ १४ ॥ महादेवं तु संपूज्य कृष्णाजिनधरः स्वयम् ॥ अश्वस्तु परितो मंत्रैः पूजयित्वा महेश्वरम ॥ १५ ॥ विधिना चागमोक्तेन एकविंशतिमे दिने ॥ मातङ्गीं पजयेत्पश्चाल्लज्जाबीजेन संयुतः ॥ १६ ॥ पपिकावटिकाक्षीरा बलिना पिशितैरपि ॥ विधिवन्मुलमंत्रेण मूर्ध्यष्टकमथार्चयेत् ॥ १७ ॥ पुनः कुंभं प्रपूज्याथ पर्वोक्तैरेव मंत्रकैः ॥ पश्चादासुरिमाराध्य ततो गृह्णीत सर्पकम् ॥ १८ ॥ तद्भुजंगास्थि संमृह्य पंचगव्येन क्षालयेत् ॥ अंजयेन्मूलमंत्रेण अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १९ ॥ अंजनं त्रिविधं प्रोक्तं देवदानवमानवम् ॥ देवा वा दानवा येन नालं द्रष्टुं च मानवाः ॥

॥ २० ॥ कर्तव्योऽयं द्वितीयश्च योगोऽदृश्यत्वकारकः ॥ प्रथमं शाल्मलीमूलं मंत्रिभिर्मंत्रवत्फलम् ॥ २१ ॥ पद्मिनीतनुसंयुक्तं कार्पासमस्थिवर्जितम् ॥ कृत्वैकत्र च तत्सर्वं वर्तिं यत्नेन कारयेत् ॥ २२ ॥ शिवलिंगोपरि स्थाप्य कपाले दीपकं ज्वलेत् ॥ तद्दीपे कज्जलं गृह्य ह्यंजयेल्लोचनद्वयम् ॥ २३ ॥ मूलमंत्रेण कर्तव्यमदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां रविवारेण प्राप्यते ॥ काष्ठशूलसमारूढो म्रियते वापि तस्करः ॥ २४ ॥ वितद्धि (?) च भवेत्साधु एकाकी दृढचित्तवान् ॥ मध्यरात्रे शुचिर्देहे तत्तत्स्था नेऽपि जायते ॥ २५ ॥ यतो यतेतिमंत्रेण तत्तत्स्थानं प्रपूजयेत् ॥ आगमोक्तेन पजायां मांसेन सुरया सह ॥ २६ ॥ क्षीरखण्डादि नैवेद्यैर्विशाले खर्परे कृते ॥ वामे खर्परमुद्धृत्य पूजयेन्मंत्रसंयुतम् ॥ २७ ॥ मंत्रजाप्ये ततो जप्त्वा यावत्कर्म समाप्यते ॥ वर्तिं कुर्यात्प्रयत्नेन तारमष्टोत्तरं शतम् ॥ २८ ॥ जप्त्वा कुर्यात्ततो मंत्री धृते नरकपालवत् ॥ वामे करे च तत्पात्रं दक्षिणे दीपधारणम् ॥ २९ ॥ आसुरीपदमागत्य तमोरस्यसारस्तितः ॥ नैवेद्यं भक्षणार्थाय साधकस्य हितार्थकम् ॥ ३० ॥ तच्चोरदक्षिणे पादे तलकज्जलमुच्यते ॥ संगृह्य कज्जलं वेगात्पुनः पूजां प्रकारयेत् ॥ ३१ ॥ नमस्कारं प्रकुर्वीत तन्मुद्रां च प्रदर्शयेत् ॥ स्फोटयेत्खर्परं तत्र पश्चाद्दृष्टिं न कारयेत् ॥ ॥ ३२ ॥ अंजयेन्मलमंत्रेण अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ नेत्रं प्रक्षाल्य गोमुत्रैः प्रत्यक्षो भवति क्षणात् ॥ ३३ ॥ इति आसुरीकल्पे अदृश्ययोगः ॥ कक्षपुटौ मंत्रो यथा—ॐ नमो निशाचर महामाहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि बंध बंध देव्याज्ञापयति स्वाहा ॥ इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—निशाचरं निशि ध्यात्वा जप्त्वा वामेन पाणिना ॥ अदृश्यकारिणी विद्या लक्षजप्ये प्रयच्छति ॥ ३४ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानस्य शिवालये ॥ अलिबल्युपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ ततो दीपांकुलीतैलैर्वर्तिः स्यात्प्रेततंतुभिः ॥ प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्रोद्भूतकज्जलम् ॥ ३६ ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते ॥ महाश्चर्यकरी विद्या सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३७ ॥ अन्यत्—ॐ ह्रीं फट् फट् स्वाहा कालि कालि महाकालि मांसशोणित

१ अंकोलतैलमंकोलतत्रमवलोक्य तैलं पातयेत् ।

भोजने रक्तकृष्णमुखे देवि मां मा पश्यंतु मानुष इति हुं फट् स्वाहा॥ इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्-अयुतं जपेत् सिद्धिः। सिद्धे मंत्रे मंत्री अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य प्रयोगान्कुर्यात्। ततः सिद्धो भवति। प्रयोगो यथा-अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टसूत्रभवतंतुभिः ॥ पंचभिर्नृकपालैश्च वर्तिकाभिश्च पंचभिः ॥ नरतैलेन दीपाः स्युः कज्जलं नृकपालकैः ॥ ग्राहयेत्पंचभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ॥ ३८ ॥ पंचस्थानेषु तज्जालमेकीकृत्य च तत्पुनः ॥ मंत्रयित्वांजयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ॥ ३९ ॥ अंकुलीतैलसंसिक्ता वचा सप्तदिनावधि ॥ त्रिलोहवेष्टिता सा तु गुटिकां कारयेत्ततः ॥ ४० ॥ अदृश्यकारिणी ख्याता मुखस्था नात्र संशयः ॥ तत्तैलैः सर्षपाः श्वेतास्त्रिलोहेन च वेष्टिताः ॥ ४१ ॥ गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी ॥ पद्मचूर्णकपत्राणां सुरभिपत्रसंयुतम् ॥ ४२ ॥ धत्तूरस्य रसे पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्दृढाम् ॥ सा लिप्तांकुलतैलेन मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ४३ ॥ काकोलूकस्य पक्षाश्च आत्मकेशास्तथैव च ॥ अंतर्धूमगतं दग्धं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ४४ ॥ अंकोलतैलाद्गुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् ॥ अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ४५ ॥ तालकं कृष्णमहिषीक्षीरमंकोलतैलकम् ॥ तल्लिप्तांगो नरोऽदृश्यो जायते शंकरोदितम् ॥ ॥ ४६ ॥ अंकोलतैलसंसिक्तं मलं पारावतोद्भवम् ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ ४८ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां चतुर्भिः सह साधकैः ॥ एकांते वा श्मशाने वा खड्गहस्तैर्महाबलैः ॥ ४८ ॥ अर्चयेत्कृष्णमार्जारं गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ बलिं कृष्णमजं दद्यात्तस्य मेदः समाहरेत् ॥ ४९ ॥ उपोषिताय तस्मै तन्मेदो देयं त भक्षणे ॥ तृप्यते तन्तु मार्जारं गृहीत्वा पश्चिमौ पदौ ॥ ॥ ५० ॥ चालनाद्भ्रामयेद्भाण्डे जलपूर्णे समार्चिते ॥ तद्भ्रामं तापयेदग्नौ दीपं तेनैव दीपयेत् ॥ ५१ ॥ वर्तीनां विंशतिं कृत्वा ज्वालयेन्नृकपालके ॥ तत्पात्रे कज्जलं ग्राह्यं रात्रौ देवीं च पूजयेत् ॥ ५२ ॥ परस्पराश्लिष्टकराश्चत्वारः खड्गपाणयः ॥ दीपमावृत्य रक्षेयुः पंचमस्तु जपेत्सुधीः ॥ ५३ ॥ महाकालीयमंत्रोऽयं सर्वयोग उदाहृतः ॥ तत्रत्यं कज्जलं यत्नात्पंचभिर्ग्राहयेत्समम् ॥ ५४ ॥

१ पाठांतरे नारतैलकम् । २ त्रिलोहो यथा-''दश हेम द्विषट् ताम्रं रौप्यं षोडशभागिकम् । एषा संख्या त्रिलोहस्य सा ज्ञेया सर्वकर्मसु ॥

अदृश्यकारकं चांज्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ अन्यत्–शुनकस्यातिकृष्णस्य गले सत्रं निबंधयेत् ॥ ततः–ॐ नमः आकाशे कांतिं परम कांतिं कटुयति कटुकारीं मे नेत्रे ॐ नमः ॥ अनेन मंत्रेण कृष्णशुनो दक्षिणाधोदंष्ट्रामूलमांसं संग्राह्य पंचोपचारैः पजयित्वा घृत मध्ये क्षिपेत् । तस्माद्दिनत्रयादुद्धृत्य पूर्वमंत्रेण अष्टाधिकशतजाप्येनाभिमंत्रयेत् । पुनः पाटलीपुष्पैरावेष्ट्य सवितुः कराशौ भौमवारे क्षिपेत् । अपरभौमवारे समुद्धरेत् । ततः पूर्वमंत्रेणाष्टोत्तरशतेनाभिमंत्रयेत् । ततो निर्गुंडीपत्रैर्वेष्टयित्वा दक्षिणहस्ते धारयेत् । असा वदृश्यो भवति न संदेहः ॥ ५५ ॥ इति सिद्धयोगः ॥ अन्यत्–अमावास्याथवा पूर्णा पंचमी वा त्रयोदशी ॥ श्वेतपुष्पैर्गंधधूपैर्बलिदीपोपहा रकैः ॥ ५६ ॥ रात्रौ पूज्या ततो ग्राह्या देवदाली सुमंत्रिता ॥ तत्र मंत्रः–ॐ अमृतगणपरिवृते रुद्रगणाय ॐ नमः स्वाहा ॥ इति मंत्रेण पूजयित्वाभिमंत्रयेत् । ततः–ॐ नमो भगवते रुद्राय फट् ठः ठः ठः ॥ अनेन मंत्रेण ग्राहयत् ॥ तद्रसैः पारदं मर्द्यं दिनमेकं ततोऽञ्जयेत् ॥ अदृश्यो जायते जंतुः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥ ५७ ॥ तद्रसं देवदाल्युत्थं केतकीसूतसंयुतम् ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलमंतर्धानकरं परम् ॥५८॥ अन्यत्–ॐ अश्वले अश्वकर्णे अरिदुर्बले अर्द्धकेशे दंष्ट्राकराले ढकारवे भेरुंडे चांडालिनि स्वाहा ॥ इति पंचत्रिंश दक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अजमोदस्य मूलं त तुरगीगर्भजारया ॥ सह तालकसंपिष्टं तिलकोऽदृश्यकारकः ॥ ५९ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां लांगलीमूलमुद्धरेत् ॥ श्वेतच्छाग॥लंकागर्भशय्यायां नरतैलकम् ॥ ६० ॥ एकीकृत्यांजयन्नेत्रे अदृश्यः खेचरो भवेत् ॥ ॥ ६१ ॥ अन्यत्–ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलि २ चिलि २ व्याघ्रचर्मपरिधानाय मरुल २ कुरु २ चंडप्रचंड किलि २ स्वाहा ॥ इति सप्तपंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–खंजरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ॥ पंजरे रक्षये त्तावद्यावद्भाद्रपदं लभेत् ॥ तदा स पंजरेऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥ खंजरीटशिखा ग्राह्या हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ६२ ॥ आदाय तच्छिखां हस्ते त्रिलोहे वेष्टितां कुरु ॥ गुटिकायां मुखस्थायामदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ६३ ॥ अदृश्यो जायते सत्यं शक्रेणापि न दृश्यते ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ॥ ६४ ॥ श्वेतापराजितामूलं ग्राह्यं चन्द्रग्रहे सति ॥ बलाक्षौद्रेण संयुक्तां

गुटिकां मूर्ध्नि धारयेत् ॥ ६५ ॥ वक्त्रे हस्ते च संग्राह्य देवैरपि न दृश्यते ॥ पुत्रजीवोत्थितं तैलं वर्ति कृत्वा प्रतंतुभिः ॥ रोचनासह
दर्वीभ्यां नरमुंडं प्रलेपयेत् ॥ दीपं प्रज्वाल्य चैकस्मिन्परिग्राह्यं च कज्जलम् ॥ ६६ ॥ तदंजनांजितो मर्त्यो विश्वेनापि न दृश्यते ॥
जरायुं श्वेतमार्जार्याः कृष्णाया वाथ चूर्णयेत् ॥६७॥ त्रिलोहे वेष्टित कृत्वा वक्त्रस्थादृश्यकारिणी ॥ पर्वस्थां ग्रहणे भानोर्नंद्यावर्तप्रमूलकम् ॥
॥ ६८ ॥ गृहीत्वा तत्स्त्रियाः स्तन्यैर्घृष्ट्वा त वटिका कृता ॥ त्रिलोहे वेष्टिता नूनं वक्त्रस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ६९ ॥ भोजयेत्कृष्ण
काकं तु महिषीनवनीतकम् ॥ तद्विष्ठा रवितलेन वेष्टिता वर्तिका कृता ॥ ७० ॥ दीपमंकुलतैलेन नृकपाले च पूर्ववत् ॥ श्मशाने
कज्जलं ग्राह्यं तद्वत्स्यात्फलमुत्तमम् ॥ ७१ ॥ पारावतस्य कुक्षिस्थं पक्षं स्रोतोंऽजनान्वितम् ॥ कृष्णमार्जाररक्तेन भावितं रक्ततंतुभिः ॥
॥ ७२ ॥ वर्तिस्तत्कपिलाज्येन नृकपाले च पूर्ववत् ॥ ग्राहयेत्कज्जलं दिव्यमदृश्यकरणं स्मृतम् ॥ ७३ ॥ दरदो देवदारुश्च चितामांसं
नरस्य च ॥ स्रोतोंऽजनयुतं कुर्यादंजनं दृष्टिबंधनम् ॥ ७४ ॥ उलूकस्य शृगालस्य सूकरस्याक्षिरक्तकम् ॥ नीलांजनयुतं पिष्ट्वा रुद्ध्वा
श्रावपुटे दहेत् ॥ तेनांजितो नरोऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥ ७५ ॥ अन्यत्—ॐ इडापिंगलायै स्वाहा ॥ इति
नवाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—कृष्णमृत्पूरिते वाप्यं कृष्णगुंजां नृमुंडके ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां बलिधूपोपहारकैः ॥ ७६ ॥
नित्यं कुर्याद्बलिं पूजां जलैः सिंच्यात्सदा निशि ॥ पश्चात्फलति सा गुंजा ततः कृष्णमजं बलिम् ॥ ७७ ॥ कृत्वा योगीश्वरान्पंच
भोजयेद्बलिपूर्वकम् ॥ ततश्चाष्टोत्तरशतं ग्राह्यं गुंजाफलं क्रमात् ॥ ७८ ॥ सूच्या तु प्रोतयेत्सूत्रे सा मालाऽदृश्यकारिणी ॥ धारयेन्मूर्ध्नि
कंठे वा तद्युतश्च न दृश्यते ॥ ७९ ॥ उपवासत्रयं कृत्वा ततः पुष्ये निवापयेत् ॥ नृकपाले यवान्कृष्णान्कृष्णमृत्पूरिते निशि ॥ ८० ॥
निशायां सेचयेन्नित्यं सुपक्वान्ग्राहयेन्निशि ॥ तैर्बीजैस्तु कृता माला शिरःस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ८१ ॥ भजेदृतुमतीं कन्यां श्मशाने
मैथुनेन तु ॥ तच्छुक्रशोणितं ग्राह्यं शिलातालकमिश्रितम् ॥ ८२ ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ संप्राप्ते ह्यष्टमे
मासि यदि गर्भः पतेत्स्त्रियः ॥ ८३ ॥ तस्य नेत्रे च कर्णौ च जिह्वाहृन्मांसनासिकम् ॥ गुदमेढ्रं च पादांश्च संध्यायां तत्र पेषयेत् ॥

॥ ८४ ॥ चन्द्रे वाथ ग्रहे सूर्य्ये गुटिकां चाभिमंत्रयेत् ॥ महाकालीयमंत्रेण यावन्मोक्षो भवेद्गृहे ॥ ८५ ॥ गुटिकां धारयेद्यस्तु अदृश्यो जायते नरः ॥ नृकपाले तु या लग्ना शीर्षकोद्भवमृत्तिका ॥ ८६ ॥ चांडालीस्तन्यसंमिश्रा हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ वापयेत्तुलसी बीजं कृष्णकाकस्य पृष्ठतः ॥ ८७ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यामन्यानि परितो वसेत् ॥ तुलसी काकपृष्ठे या दृश्यते सा न केनचित् ॥ ॥ ८८ ॥ तदर्थं वापिता ग्राह्ये तुलसी जायते यदा ॥ तदा काकोद्भवा ग्राह्या बलिं दद्याच्च कुक्कुटम् ॥ ८९ ॥ सुपक्कं सप्तधान्यं च वटपत्रे बलिं दिशेत् ॥ समूलां तुलसीमंज्याददृश्यो जायते नरः ॥ ९० ॥ कृष्णाषाढे चतर्दश्यां कृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ वापयेन्नरमुंडे तु नासारंध्रे समांसके ॥ ९१ ॥ निखनेत्कृष्णभूम्यां तु स्वोच्छिष्टैः सेचयेत्सदा ॥ संक्रांतिदर्शपर्णासु दीपं दद्याद्घृतेन तु ॥ ९२ ॥ वर्तिश्च रक्तसूत्रस्य यावत्तस्य फलोदयः ॥ कृष्णाष्टम्यां फलं ग्राह्यं बलिं दत्त्वा तु कुक्कुटम् ॥ ९३ ॥ तद्बीजैर्गुटिका कार्या मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ शरेण निहते मर्त्ये दग्धे तल्लोहमाहरेत् ॥ ९४ ॥ काकोलूकस्य नीलस्य ग्राह्ये वै तस्य लोचने ॥ तल्लोहेनांजयेच्चक्षुरदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ९५ ॥ मयूरवानरास्थीनि पाचयेन्महिषीघृते ॥ पिष्ट्वा तदंजयेन्नेत्रे अदृश्यो जायते नरः ॥ ९६ ॥ अश्विन्यां कुशबुध्नं तु पूजां कृत्वा समाहरेत् ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थं चेददृश्यकृत् ॥ ९७ ॥ हृदयं कृकलासस्य ग्राहयेद्विधिपूर्वकम् ॥ गोरोचनासमं पिष्टं तारयंत्रेण वेष्टयेत् ॥ ९८ ॥ समंत्रा गुटिका सा च मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ कौतकचिंतामणौ–कंकनेत्रं समादाय ततो नेत्रेऽजनं चरेत् ॥ अदृश्यो भवति क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ९९ ॥ कृष्णोत्वस्थि समादाय नृकपाले विनिक्षिपेत् ॥ तद्गंधलेपनं कुर्याल्ललाटे दर्पणे धृते ॥ १०० ॥ प्रतिबिंबं न पश्येत आत्मनो वदनं ततः ॥ तदा मार्गेण गंतव्यं देवैरपि न दृश्यते ॥ १०१ ॥ यावच्च तिलकं भाले सर्वदैव हि साधकः ॥ १०२ ॥ मयूरं च शिलातालं भोजयेद्दिनसप्तकम् ॥ तद्विष्ठालिप्तहस्तस्थं द्रव्यं शक्रो न पश्यति ॥ १०३ ॥ कृष्णमार्जारांतरस्थं रक्तं संगृह्य भावयेत् ॥ नक्तमालस्य[१] तैलेन तत्र श्वेतार्कसूत्रजाम् ॥ १०४ ॥ वर्तिं प्रज्वाल्य

१ नक्तमाल=करंज ।

वज्रस्य[1] दले संगृह्य कज्जलम् ॥ तेनांजनेन मनुजस्त्वदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १०५ ॥ सुकृष्णं चैव मार्जारं मारयित्वा चतुष्पथे ॥ प्रोक्षणं कारयित्वा तु दिनानि पंचविंशतिः ॥ १०६ ॥ तत्संगृह्य प्रयत्नेन क्षालयेच्छीतवारिणा ॥ यदस्थि श्रोत्रभेदि स्याद् ग्राह्यं वै यत्नतोऽथ च ॥ १०७ ॥ पूजयित्वा महाकालीं गोरोचनसमन्विताम् ॥ नकुलस्य तु पित्तेन भावयित्वा प्रपेषयेत् ॥ १०८ ॥ तद्वर्ति तिलकं कृत्वा नरोऽदृश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥ नृमांसं च शिवा[2]मांसं यत्नतो ग्राहयेद्बुधः ॥ १०९ ॥ आदौ रजस्वलायाश्च रुधिरेण वर्टीं कुरु ॥ त्रिलोहे वेष्टिता सा तु मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ११० ॥ कृष्णमार्जारमुंडे तु कृष्णगुंजां प्रवापयेत् ॥ तत्फलं वदनस्थं हि भवेत्साक्षाददृश्यकृत् ॥ १११ ॥ कोकिलानयनं वामं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ॥ सा वटी मुखमध्यस्था ह्यदृश्यं कुरुते ध्रुवम् ॥ ११२ ॥ दि[3]वाभीतस्य नयनं त्रिलोहेन प्रवेष्टितम् ॥ मुखस्थं कुरुतेऽदृश्यं यथेच्छं विचरेन्महीम् ॥ ११३ ॥ चिताग्निः खंजरीटस्य विष्ठा फेनो हयस्य च ॥ सो[4]भांजनमयं नेत्रे नर एतेन धूपितः ॥ ११४ ॥ अदृश्यस्त्रिदशैः सर्वैः किं पुनर्मनुजैः प्रिये ॥ अथ तुल्यदृष्टिकरणम्—मार्जारमीनपित्तं च तैलं मषकाविट् तथा ॥ रजस्वलाया वस्त्रेण मार्जनं त्रिश्च कारयेत् ॥ ११५ ॥ मूषिकामलतैलेन यत्नेन परिमर्दयेत् ॥ अंजयेन्मूलमंत्रेण तुल्यदृष्टिप्रदं भवेत् ॥ ११६ ॥ रजस्वलाया वस्त्रस्य मर्षीं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ अंजनं गोघृतयुतं तुल्यदृष्टिप्रदायकम् ॥ ११७ ॥ प्राकृतग्रंथे—दांत दाहिनी ओर, चर्ब ले बाजू बांधे । काहू दीखे नांहि, फिरे धर गठडी कांधे ॥ ११८ ॥

इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डेऽदृश्यविद्यातंत्रे षष्ठस्तरङ्गः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ वज्र-सेहुँड। २ शिवा-शृगालः। ३ दिवाभीत उलूकः। ४ सहँजनेका बीज।

॥ अथ षट्कर्मतंत्रप्रारंभः॥तत्रादौ षट्कर्मलक्षणानि॥षट्कर्माणि यथा शारदातिलके–अथो विधास्ये तंत्रेऽस्मिन् सम्यक् षट्कर्मलक्षणम्॥ सर्वतंत्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥१॥ शांतिवश्यस्तंभनानि विद्वेषोच्चाटने ततः ॥ मारणं तानि शंसंति षट् कर्माणि मनीषिणः ॥२॥ रोगकृत्यग्रहादीनां निवासः शांतिरीरिता ॥ वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम्॥३॥ प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तंभनं तदुदाहृतम्॥स्निग्धानां द्वेषजननं मिथो विद्वेषणं मतम् ॥ ४ ॥ उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ॥ प्राणिनां प्राणहरणं मारणं तदुदीरितम् ॥ ५ ॥

(षट्कर्मोपयोगिनिर्णयचक्रे द्वितीयकोष्ठके ऋतुशब्दोपरिस्था टिप्पणी)

१ अगर किसी ऋतुमें किसी कर्मकी अत्यंत आवश्यकता हो तो ऋषियोंने एक दिनकी दश दश घडी बांट कर छः ऋतु बनायीं हैं जैसे दिनके पहले भागमें वसंत, मध्याह्न में ग्रीष्म, तीसरे पहरमें वर्षा, संध्यामें शिशिर, रात्रिमें शरद और प्रातःकालमें हेमन्त इस प्रकार जानना।

॥ अथ षट्कर्मयोगिनिर्णयचक्रम् ॥

नामानि	ऋतु१	पक्ष२	तिथि३	वार४	स्थान ५	आसन ६	दिग् ७	मालापदार्थ ८	मालामणि संख्या. ९	अंगुली १०	यंत्रलेखन पत्रं ११	यंत्रलेखनद्रव्याणि १२	लेखनीयं १३
शांति कर्म०१	हेमंते	शुक्लपक्षे	२-७-५-३-	बु.बृ.	काली०वा दुर्गामंदिरे	गोचर्म	पश्चिमे उत्तरे वा	शंख:	५४-२७-१०-	मध्यमास्थितां मालामंगुष्ठेनभ्रामयेत्	भूर्जपत्रे	चंदनं	हैमं-रौप्यं-जाती-
वशी करणे२	वसंते	शुक्ल पक्षे	४-९-६-१३-	बृ.चं.	शिवालये आ.नि.ना	खड्ग चर्म	पश्चिमेवा	पद्मबीजं	५४-२७-१०-	मध्यमास्थितां अंगुष्ठेन भ्रामयेत्	भूर्जपत्रं	रोचनंरक्तचंदनंवा	दूर्वा-राज वृक्षोवा
स्तंभने ३	शिशिरे	कृष्ण पक्षे	-८-१५	र.मं.श	नियमोनास्ति	गज चर्म	पूर्वे	निंबबीजं	१५-	अनामिकांगुष्ठ-योगेन	द्वीपिचर्म	हरिद्रा	अर्गास्तवृक्ष
विद्वेषणे४	ग्रीष्मे	शुक्ल पक्षे	८-९-१०-११	श.शु.	श्मशाने	शृगाल चर्म	नैर्ऋत्ये	निंबफलं	१५-	तर्जन्यंगुष्ठ-योगेन	खरचर्म	गृहधूम:	करंजवृक्ष
उच्चाटने५	वर्षासु	कृष्ण पक्षे	१४-८-	र.श.	शून्यदेवालये	मेषचर्म	वायुकोणेऽग्निकोणेवा	फेनिस्तत्फलजा	१५-	तर्जन्यंगुष्ठ योगेन	ध्वजवास:	चितांगार:	बिभीतक:
मारणे ६	शरदि	कृष्ण पक्षे	८-१५	र.मं.श	श्म.का.क्षे. प्रेतारू.वा.	माहिष चर्म	दक्षिणे	बाहेर निकलाहुवा अश्वदंत	१५-	कनिष्ठिकांगुष्ठ योगेन	नरास्थिप्रेत वस्त्रंवा	त्रिकटु-३श्येनविष्ठा४चित्रकं ५ गृहधूम: ६मत्सरस: अर्थात धत्तूररस: ७ लवणं- इत्यष्ट विष्ठाभिर्लिखेत्	नरास्थिकीलं लौहंवा

नामानि	कुंडप्रमाणं १४	कार्यपरत्वेनहोमपदार्थाः	स्रुवा	होमसंख्या	काष्ठं	अग्निः
शांतिकर्मणि १	वृत्तकुंडं पश्चिमायां	दूर्वासमिधौ घृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पालाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
वशीकरणे २	पद्माकारं उत्तरे	दाडिमसमिधौ अजाघृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पलाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
स्तंभने ३	चतुष्कोणं पूर्वे	राजवृक्षसमिधौ मेषीघृतंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब धत्तूरावा	वटकाष्ठोत्थाग्नौ
विद्वेषणे ४	त्रिकोणंनैर्ऋत्ये	धत्तूरसमिधोअलसीतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	विभीतकजाताग्नौ
उच्चाटने ५	षट्कोणं वायव्ये	आम्रसमिधः सर्षपतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ
मारणे ६	अर्द्धचन्द्राकारं दक्षिणे	खदिरसमिधः कटुतैलंच.	लोहमयः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ

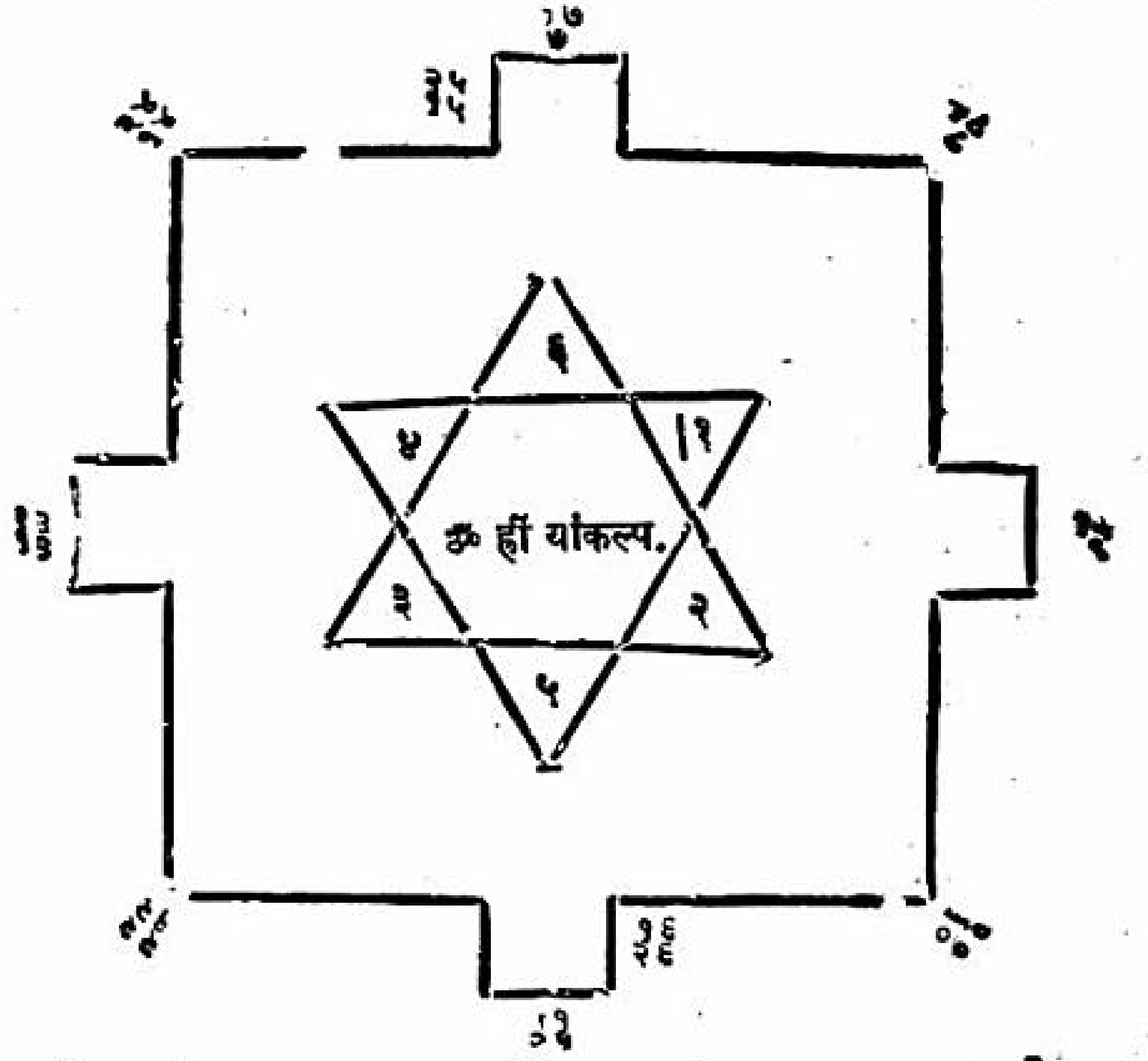
नामानि	तर्पणेद्रव्याणि	तर्पणेपात्रं	तर्पणेआसनं	तर्पणाभिमुख्यं	मार्जनं
शांतिकर्मणि १	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रंताम्रपात्रंवा	मृदासनं	ईशानाभिमुखः	तर्पणदशांशतः
वशीकणे २	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रं	मृदासनं	उत्तराभिमुखः	एवम्
स्तंभने ३	मरिचाद्यंकवोष्णं	मृत्तिकापात्रं	जानुभ्यामुत्थितः	पूर्वाभिमुखः	एवम्
विद्वेषणे ४	मेषरक्तयुतंतोयं	खदिरकाष्ठनिर्मितंपात्रं	एकपादास्थितः	नैर्ऋत्याभिमुखः	एवम्
उच्चाटने ५	मेषरक्तयुतं तोयं	लौहपात्रं	एकपादस्थितः	वायुकोणाभिमुखः	एवम्
मारणे ६	मरिचाद्यंकवोष्णं	कुक्कुटांडपात्रं	एकपादस्थितः	अग्निकोणाभिमुखः	एवम्

नामानि	ब्राह्मणभोजनार्थमन्त्रंयथा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याउत्तमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्यामध्यमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याधमा
शान्तिकर्मणि १	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पंचविंशांशेन	होमशतांशतः
वश्ये २	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पंचविंशांशेन	होमशतांशतः
स्तंभने ३		होमपंचांशतः	होमात् द्वादशांशेन	होमात् पंचशतांशेन
विद्वेषणे ४		होमपंचांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
उच्चाटने ५		होमपंचांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
मारणे ६		होमसंख्यायामशक्तश्चेत् पंचांशतो वा भोजयेत्	होमार्थमशक्तश्चेद्दशांशतो वा भोजयेत्	होमात् पंचांशेन अशक्तश्चेत् विंशांशेन वा भोजयेत्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शांतितंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ प्रत्यंगिरामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ–अथ प्रत्यंगिरां वक्ष्ये परकृत्याविमर्दिनीम् । मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं यां कल्पयति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव ह्रां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ह्रीं ओं ॥ इति सप्तत्रिंशदक्षरो मंत्रः॥अस्य विधानम्-अस्य प्रत्यंगिरामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप् छंदः । देवी प्रत्यंगिरा देवता । ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ देवीप्रत्यंगिरादेवतायै नमः हृदि ३ ॐ बीजाय नमः लिंगे ४ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां तर्जनीभ्यां नमः २ ॐ ह्रीं वधूमिव मध्यमाभ्यां नमः ३ ॐ ह्रीं ह्रां ब्रह्मणा अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्त्तारमृच्छतु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः हृदयाय नमः १ ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा २ ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट् ३ ॐ ह्रीं ह्रां ब्रह्मणा कवचाय हुं ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ ह्रीं यां ह्रीं शिरसि १ ॐ ह्रीं कल्पयंति ह्रीं भ्रूमध्ये २ ॐ ह्रीं नो ह्रीं मुखे ३ ॐ ह्रीं अरयः ह्रीं कंठे ४ ॐ ह्रीं क्रूरां ह्रीं दक्षहस्ते ५ ॐ ह्रीं कृत्यां ह्रीं वामहस्ते ६ ॐ ह्रीं वधू ह्रीं हृदि ७ ॐ ह्रीं मिव ह्रीं नाभौ ८ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रीं दक्षिणोरौ ९ ॐ ह्रीं ब्रह्मणा ह्रीं वामोरौ १० ह्रीं अपनिर्णुद्मः ह्रीं दक्षजानुनि ११ ॐ ह्रीं प्रत्यक् ह्रीं वामजानुनि १२ ॐ ह्रीं कर्तार ह्रीं दक्षपादे १३ ॐ ह्रीं मृच्छतु ह्रीं वामपादे १४ ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः॥ ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ आशांबरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा ॥ दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहितान्वया प्रत्यंगिरा शंकरतेजसेरिता॥१॥इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः'इति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्॥तथा च पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः१–ॐ विजयायै नमः २ ॐ अजितायै नमः३ ॐ अपराजितायै नमः४ ॐ नित्यायै नमः५ ॐ विलासिन्यै नमः६ ॐ दोग्ध्र्यै नमः७ ॐ अघोरायै नमः८ मध्ये ॐ मंगलायै नमः९ इति पूजयेत्॥

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे पद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा–पुष्पांजलिमादाय–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्विदिक्षु मध्ये दिक्षु च–ॐ ह्रीं यां कल्पयंति नोऽरयः हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ इति सवत्र । ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ ॐ ह्रीं ह्रीं ब्रह्मणा कवचाय हुं कवचश्रीपा० ४ ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ । इति षडंगानि पजयेत् ।

प्रत्यंगिरापूजनयन्त्रम् ।



ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततो भूपुरे पर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्का

रांतं संपूज्य इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः स्वस्वमंत्रद्वारा दशदिक्षु च माषभक्तबलिं दद्यात् । अथ इन्द्रादिदशदिक्पालबालमंत्रमहि–ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन इन्द्राय प्राच्यां दिशि बलिं दद्यात् ॥१॥ ॐ यो मे ह्यग्निगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ अग्निस्तं तेजोराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेनाग्नये अग्निकोणे बलिं दद्यात् ॥ २ ॥ ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्यनं चास्तु ॥ इति यमाय दक्षिणदिशि बलिं दद्यात् ॥ ३ ॥ ॐ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा ॥ निर्ऋतिस्तं रक्षोराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयत मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्यनं चास्तु ॥ अनेन निर्ऋतये नैर्ऋत्ये कोणे बलिं दद्यात् ॥ ४ ॥ ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । वरुणस्तं जलराजो भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन वरुणाय पश्चिमदिशि बलिं दद्यात् ॥ ५ ॥ ॐ यो मे वायुगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । वायुस्तं भुवनराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन वायवे वायुकोणे बलिं दद्यात् ॥ ६ ॥ ॐ यो मे उदग्गतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । कबेरस्तं यक्षराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कालिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन कुबेरायोत्तरदिशि बलिं दद्यात् ॥ ७ ॥ ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । ईशानस्तं विद्याराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु ॥ अनेन ईशानाय ईशानकोणे बलिं दद्यात् ॥ ८ ॥ ॐ यो मे इन्द्रेशानमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । ब्रह्मा तं ब्रह्माण्डराजो भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्य

यनं चास्तु ॥ अनेन इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्मणे बलिं दद्यात् ॥ ९ ॥ ॐ यो मे वरुणनिर्ऋतिमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । अनंतस्तं नागराजो भञ्जयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शांतिः स्वस्त्ययनं चास्तु॥ अनेन अनंताय वरुणनिर्ऋतिमध्ये बलिं दद्यात् ॥ १० ॥ इति बलिं दत्त्वा जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः ॥ अपामार्गसमिदाज्य हविर्भिर्दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत् ॥ तथा च–ध्यायन्नेवं जपेन्मंत्रमयुतं तद्दशांशतः ॥ अपामार्गेध्मराज्याज्यहविर्भिर्जुहुयात्ततः ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत् ॥ जुहुयाच्च शतं दिक्षु दशमंत्रैर्हरेद्बलिम् ॥ २ ॥ इत्थं कृते शत्रुकृता कृत्या क्षिप्रं विनश्यति ॥ ३ ॥ इति प्रत्यंगिरासप्तत्रिंदशक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अन्यत् अथ प्रत्यंगिरामालामंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा–ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यंगिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमंत्रोत्सादिनि सर्वभूतदमने सर्वदेवान् बंध बंध सर्वविद्याश्छिधि छिंधि क्षोभय क्षोभय परयंत्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृंखलास्त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यंगिरे ह्रीं नमः॥ इति पञ्चविंशित्यधिकशताक्षरो मंत्रः॥ अस्य विधानम्–अस्य प्रत्यंगिरामालामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । देवी प्रत्यंगिरा देवता । ॐ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । देवीप्रत्यंगिरादेवतायै नमः हृदि ३ । ॐ बीजाय नमो लिंगे ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्य्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ सिंहारूढातिकृष्णा त्रिभुवनभवकृद्रूपमुग्रं वहंती ज्वालावक्त्रा वसाना नववसनयुगं नीलमण्याभकांतिः ॥ शूलं खड्गं वहंती निजकरयुगले भक्तरक्षैकदक्षा सेयं प्रत्यंगिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मिताञ्शोऽभिचारान् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पूर्वोक्तं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुत

जपः । तिलराजिकाभिर्दशांशतो होमः । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सहस्रं तिलराजिकाः ॥ हुत्वा सिद्धममुं मंत्रं प्रयोगेषु शतं जपेत् ॥ १ ॥ ग्रहभूतादिकाविष्टं सिंचेन्मंत्रं जपञ्जलैः ॥ विनाशयेत्परकृतं यंत्र मंत्रादिकर्मजम् ॥ २ ॥ इति प्रत्यंगिरापञ्चविंशत्यधिकशताक्षरमालामंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥ अथ नारायणास्त्रम्–हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्रीपुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टिं प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं पंचविषूचिकां हन हन ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्ठान् अष्टादशक्षयरोगान् हन २ सर्वदोषान् भंजय २ तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ शत्रून् मारय २ उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नैर्हन २ दह २ मथ २ विध्वंसय २ चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय २ भेदय २ चतुःशीतानि विस्फोटय २ अर्शवातशूलदृष्टिसर्पसिंहव्याघ्रद्विपदचतुष्पदपदबाह्यान्दिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्येऽपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन २ विद्युन्मेघनदीपर्वताटवीसर्वस्थानरात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरु कुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः ॥ इति नारायणास्त्रमंत्रः॥अस्य विधानम्–

एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते ॥ असुराञ्जितवान्सर्वाञ्छक्रस्तु बलदानवान् ॥ १ ॥ यः पुमान्पठते भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना ॥ तस्य सर्वाणि सिद्ध्यन्ति यच्च दृष्टिगतं विषम् ॥ २ ॥ अन्यदेहविषं चैव न देहे संक्रमेद्ध्रुवम् ॥ संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयते क्षणात् ॥ ३ ॥ अतः सद्यो जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते ॥ किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसंपदः ॥ ४ ॥ लभते नात्र संदेहो नान्यथा तु भवेदिति ॥ गृहं नो यदि वा येन बलिना विविधैरपि ॥ ५ ॥ शतिं समुष्णतां याति चोष्णं शीतलतां व्रजेत् ॥ अन्यथा न भवेद्विद्यां यः पठेत्कथितां मया ॥ ६ ॥ भूर्जपत्रे लिखेन्मंत्रं गोरोचनजलेन च ॥ इमां विद्यां स्वके बद्ध्वा सर्वरक्षां करोतु मे ॥ ७ ॥ पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्ध्वा विचक्षणः ॥ विद्रवंति च विघ्नानि न भवंति कदाचन ॥ ८ ॥ न भयं तस्य कुर्वंति गगने भास्करादयः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रामग्राही तु डाकिनी ॥ ९ ॥ शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः ॥ राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा

बलिनो हि ये ॥ १० ॥ असुराश्च सुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता ॥ सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठेन्मंत्रोच्चारणमात्रतः ॥ ११ ॥ सर्वहत्याः प्रणश्यंति सर्वं फलति नित्यशः ॥ सर्वे रोगा विनश्यंति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥ १२ ॥ उच्चाटनेऽपराह्णे तु संध्यायां मारणे तथा ॥ शांतिके चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्वकामिकः ॥ १३ ॥ इदं मंत्ररहस्यं च नारायणास्त्रमेव च ॥ त्रिकालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥ १४ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमम् ॥ चिंतितार्थं सुखप्राप्तिं लभते नात्र संशयः ॥ १५ ॥ इति नारायणास्त्रम् ॥ अथ चोरनिवारणम्-जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः ॥ अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातुः केशवः ॥ १ ॥ जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः ॥ अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शंकरः ॥ २ ॥ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ॥ बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनंजयः ॥ ३ ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती ॥ तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥ ४ ॥ कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः ॥ इति पठित्वा शयनं कार्यं तेन चोरो निष्फलो गच्छेत् ॥ ॥ अथ ग्रहनाशनभूतेश्वरमंत्रः-ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशंगललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूलखट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमंडिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरंजितविग्रहाय उग्रफणिकालकटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शय दर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बंधबंध-हुंकारेण त्रासयत्रासय-वज्रदंडेन हनहन-निशितखड्गेन छिंधिछिंधि शूलाग्रेण भिंधिभिंधि-मुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय-स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्-गुग्गुलं मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत् ॥ मंत्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रहपीडितम् ॥१॥ ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः ॥ मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च ॥ २ ॥ इति ॥ अथ भूतोपद्रवनाशका उड्डीशमंत्राः॥ॐनमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याडंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रौं ह्रौं क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय २ मोहय२ द्रंभि २ क्षोभय २ आभि २ साधय २ ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बंधय २ ह्रीं हृदये स्तंभय २ किलि २ ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादय

प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय २ भूतं प्रच्छादय २ प्रभूतं प्रच्छादय २ स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय २ ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय २ सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय २ डाकिनीग्रहं साधय २ शाकिनीग्रहं साधय २ अनेन मंत्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्यैकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकचातुर्थिकपंचवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातकेसारिडाकिनीग्रहादीन्मुंच मुंच स्वाहा ॥ गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–लोहेकी सेलसे २१ वार झाड दे अथवा छप्परके तीलेसे झाड दे तो उन्मादादिक भूतबाधा दूर हो ॥

॥ अथ डाकिनीसे बालक छुडानेका मंत्र–ॐ काला भैरव कपिली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भैरव भस्म मुसाण जेहि मांगूं सो पकडी आन । डंकिनी संखिनी पटसिहारी जरख चढंती गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिनी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया ॥ इति मंत्रः ॥ विधानम्–तीरसे झाड दे और पानी अभिमंत्रित करके पिलावे तो बालक डाकिनीसे छूटे ॥ अथ प्रेतादि रोगादि झाडनेका उत्तम मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरुको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुंड घोर धोबीका कुंड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बिखेरता चल परकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोडता चल सारका किंवाड तोडता चल कुनकुनसो बंद करता चल भूतको पलीतको देवको दानवको दुष्टको मुष्टको चोटको फेटको मेलेको घेरेलेको उलकेको बुलकेको हिडकेको भिडकेको ओपरीको पराईको भूतनीकोपलीतनीको डंकिनीको स्यारीको भूचरीको खेचरीको कलुएको मलबेको उनको मथवायके तापको तिजारीको माथाकी मथवायको मगरांकीपीडाकोंपेटकी पीडाकोसांसको कांसको मरेकोमुसाणकोकुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीडी चौपटाका मुसाण नुह्या मुसाण इन्होंको बंदकरि एडीकी एडी बंध करि पीडाकी पीडी बंध करि जांघकी जाडी बंधकरि कटथांकी कडी बंधकरि पेटकी पीडा बंधकरि छातीकी शूल बंधकरि सारिकी सीस बंधकरि चोटीकी चोटी बंध करि नौनाडी बहत्तर कोठा रोमरोममें घर पिंडमें दखलकर देश बंगालाका मनसारा मसेबडा आकर मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरू उस्तादसे लाजे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–मद्य मांस छडछरीला अतर

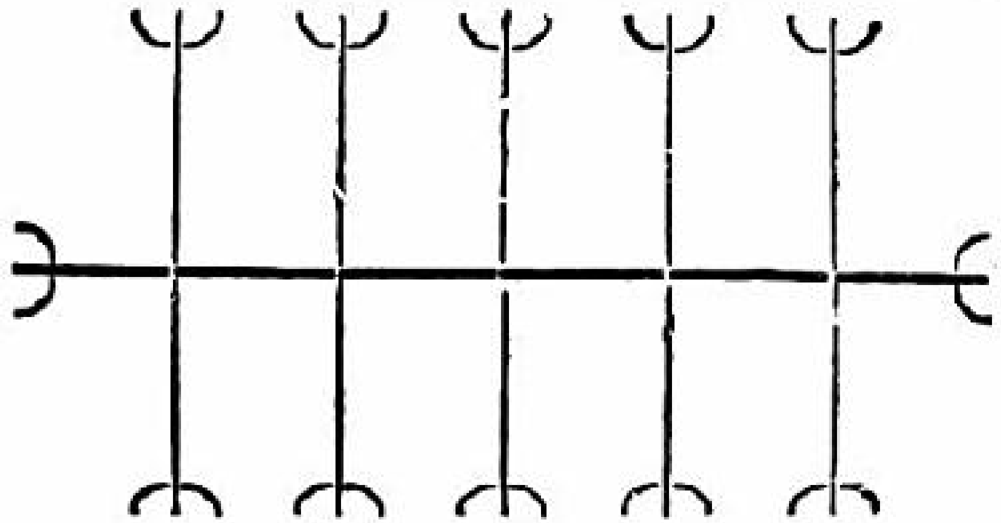
तेलदीपक प्रत्येक रविवारको भांग सुलफा चोडना सिद्ध हो पीछे मंत्र सात बार पढकर झाड दे तो सर्वोपद्रव दूर हो कर सुखी हो इसमें संदेह नहीं ॥ ३ ॥ नजर झाडनेका मंत्र–ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोले छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहांकी ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उडी कहांको जाया अबही बसकर ले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहडी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके शिर पडे जाहर पीर नजरसे रक्षा करे मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मंत्रद्वारा मोरपंखसे झाड दे तो आराम हो ॥ अन्यत्–इस यंत्रको कागजपर लिख पलीता सुलगाकर सुँघावे तो प्रेत बकुरे बात करे जो पूछे उसका जवाब दे ॥

पलीतायन्त्रम्.

द	मू	सि	ज	जं	त्र	०	०	०
अ	च	जा	पै.	नि.	स्थै	०	०	०

डाकिनीके चोट मारनेका मंत्र–ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदंडेन साधय२ मारय २ चूरय २ अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूँ हूँ हैं ह्रौं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–इस मन्त्रसे सात दफे गूगलको पढकर ओखलीमें डाल मूसलसे कूटे तो वह मूसलकी चोट डाकिनीको लगेगी, अगर इस मन्त्रसे अपना घोंटू मूंडे तो डाकिनीका सिर मुंड जायगा,किसी चीजपर मन्त्र पढकर जिसके घरमें डाले उसके घरमें जाके डाकिनी बोलैगी। इस मन्त्रको पढकर आखोंमें जल मारे तो खेल उठे ॥ अथ डाकनभक्षितका मंत्र–ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरो यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय पराया तके तिस पापनका भंडारा फूटे नरसा टूटे पाप न छूटे गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सात बार झाड दे तो डाकनके खाये हुएको आराम हो ॥ अथ डाकिनी दूर करनेका मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरूका डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमंतने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमंतने देखी सातवें पाताल गई

सातवें पातालसे कौन पकड लाया जती हनमंत पकड लाया एक ताल दे एक कोठा तोडा दो ताल दे दो कोठा तोडा तीन ताल दे तीन कोठा तोडा चार ताल दे चार कोठा तोडा पांच ताल दे पांच कोठा तोडा छः ताले दे छः कोठा तोडा सात ताल दे सातवां कोठा खोल देखै तो कौन खडी है डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चले जती हनुमंतसेरे झाडे सूं चले ॐ नमो आदेश गुरूका गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ मोरपंख अथवा लोहेसूं झाड दे तो सर्वोपद्रव दूर हो ॥ अन्यत्-ॐ नमो आदेश गुरूका गिरह बाज नटनीका जाया चलती बेर कबूतर खाया पीवे दारू खाय जो मांस रोगदोषको लावे फांस कहां कहांसे लावेगा गुदगुदमें सुत्रावेगा बोटी बोटीमेंसे लावेगा चामचाममेंसे लावेगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसे लावेगा मारमार बंदी करकर लावेगा न लावेगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरेगा मेरा भाई मेरा दिखा दिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः॥ मोरकी पंखसे झाडे तो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी सब भाग जायँ ॥ अथ डाकिनी के बकुरानेका मन्त्र-'ॐ नमो आदेश गुरूका ॐ नमो जय नरसिंह तीन लोक चौदह भुवनमें हाथ चाबी और होठ चाबी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड मार भगतनको प्राण राखि आदेश आदि पुरुषको॥' इति मंत्रः ॥ इस मन्त्रसे पानी पढकर पिलावे पीछे पूछे तो डाकिनी शाकिनी बोले सही ॥ इस यंत्रको कागजपर लिख लोबानकी धूप देकर ओखलीमें धरे और मूसलसे कूटे तो डाकिनीका माथा फूटे और बकुरे सही ॥

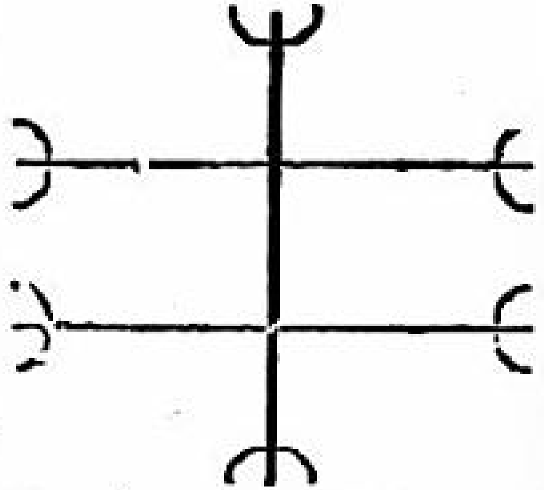


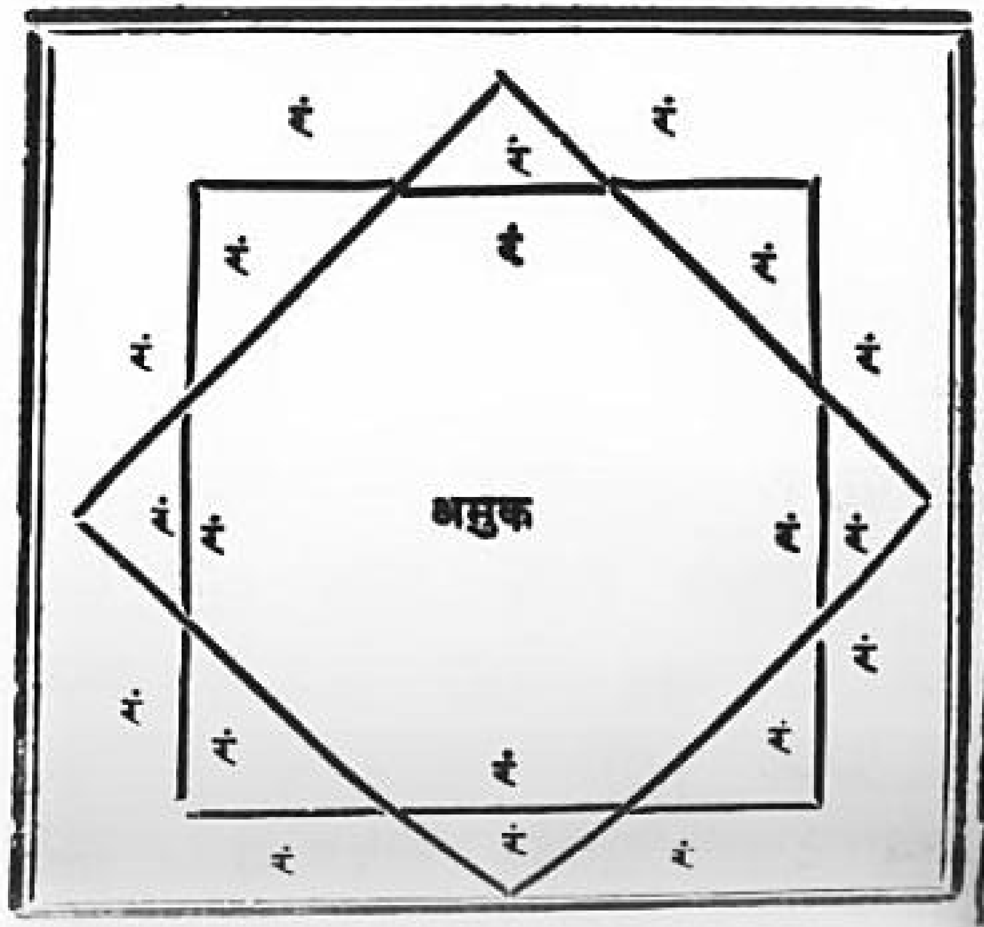
॥ प्रेतादि झाडनेका मंत्र-ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलाय स्तंभोद्भवाय समस्तदोषान् हर २ विसर २ पच २ हन२ कंपय २ मथ २ ह्रीं ३ फट् २ ठः ठः एहि २ रुद्र आज्ञापयाति

स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे सरसों पढ पढकर मारे तो सर्व दोष दूर हो ॥ कर्तव्य उलटा फिरानेका मंत्र–एक ठोसरसों सोला राई मोरो पटवलको रोजाई खाय खाय पडे भार जे करे ते मरे उलट विद्या ताहीपर परे शब्द साचा पिंड काचा तो हनूमानका मंत्र साचा फूरो मंत्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे राई लोन उतारकर अग्निमें डाले तो की हुई विद्या करनेवाले पर उल्टी जाय पडे ॥ अथ सर्वज्वरे बलिदानविधानं भावप्रकाशपरिशिष्टे–नौ ९ मुट्ठी चावलोंका भात करके उसका पुतला बनावे उसको खसकी चटाईपर बिठाकर पुतलेके सम्पूर्ण शरीरमें हल्दीका लेप कर देवे पीछे उसके चारों तरफ पीले रंगकी चार ४ पताका गाड चंदन पुष्प चढा धूपदीपसे पूजनकर पीपलके पत्तोंकी चार पुडिया जिसमें हल्दी भरी हो पुतलेके चारों कोनोंमें स्थापन करे पीछे–देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुकशर्म्माहं मम (अथवा मम यजमानस्य) ज्वरनिवृत्त्यर्थं बलिदानमहं करिष्ये ॥ इस प्रकार संकल्प करके पीछे"ॐ ज्वरस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः ॥ भस्मप्रहरणो रुद्रः कालांतकयमोपमः ॥ १ ॥" इस मंत्रसे ज्वरका ध्यान करके–"ॐ अमुकज्वर इहागच्छ इहातिष्ठ ॥" इस प्रकार आवाहन कर और नौ ९ फूटी कौडी उसके आगे धरके गंधादि पंचोपचारसे पूजन करे पीछे संध्याके समय रोगीके घरसे दक्षिणकी तरफ श्मशानमें अथवा श्मशानवृक्षके नीचे या चौराहेमें उस पुतलेको लेकर जावे और ज्वरवाले रोगीको उसके आगे खडा करके–"ॐ नमो भगवते गरुडासनाय त्र्यंबकाय स्वस्त्यस्तु वस्तुतः स्वाहा ॥ ॥ १ ॥ ॐ कं टं पं शं वैनतेयाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ठः ठः भो भो ज्वर शृणु शृणु हल हल गर्ज गर्ज एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक अर्धमासिक मासिक नैमित्तिक मौहूर्तिक फट् फट् हुं फट फट् हल हल मुंच मुंच भूम्यां गच्छ गच्छ स्वाहा॥" इस मंत्रसे बलिदान करके विसर्जन कर देवे। इस प्रकार तीन दिन करे तो सर्व प्रकारका महादुष्ट ज्वर भी शांत हो जाता है इसमें संदेह नहीं. हमारा अनुभव किया हुआ प्रयोग है॥अन्यमंत्रः–"ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमिततेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सान्निपातिकं संततज्वरं तत्क्षणं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं सर्वान् छिंधि छिंधि। भिंधि भिंधि

किरि किरि सर्वान् ज्वरान् ग्रस ग्रस पिब पिब ब्रह्मज्वरं भीषय भीषय विष्णुज्वरं त्रासय त्रासय माहेश्वरज्वरं निघातय भूतज्वरप्रेतज्वराप स्मरादिमहाव्याधीन्नाशय नाशय सर्वान् दोषान् घातय घातय महावीरवानर ज्वरान् बंध बंध ॐ ह्रां ह्रीं हुं हुं फट् स्वाहा॥इति मंत्रः॥इस मंत्रसे इक्कीसबार झाड दे तो सर्व जातिका ज्वर दूर हो ॥ अन्यत्—ॐ नमो भगवते छिंधि २ अमुकस्य ज्वरस्य शिरः प्रज्वलितपरशु पाणये पुरुषाय फट् ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको लिखकर धारण करनेसे सर्व जातिका ज्वर शांत हो जाता है ॥ अन्यत्—ॐ विद्यु दानन हुं फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको चूने कत्थेसे पानपर लिखकर खावे तो तीन दिनमें ज्वर शांत हो ॥ अन्यत्—इस यंत्रको श्मशानके ठीकरेपर धतूरेके रससे लिखे कृष्णपक्षकी अष्टमी या चतुर्दशीको पूजन करके श्मशानमें गाडे और पूजन करे तो बालकोंका ज्वर तत्काल शांत हो जाता है ॥ इस त्रिशूली अथवा नवकोष्ठके यंत्रको कागज पर स्याहीसे लिखकर कंठ अथवा भुजामें बांधे तो ज्वर दूर हो ॥ अथ मंथरज्वरनिवारणतंत्रम्—

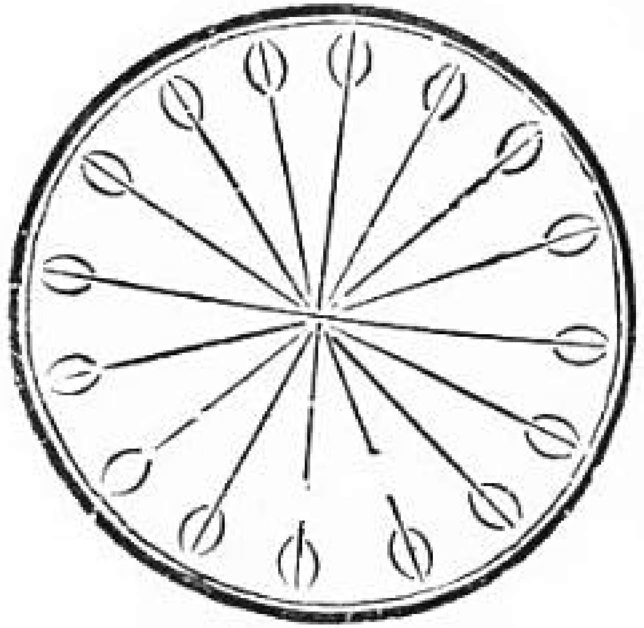
६	१४	५३
६	॥६	१
४१	४५	८





ॐ नमो अंजनीपूत ब्रह्मचारी वाचा अविचलस्वामी उन काज सारिवां क्षां क्षः मगधदे शराय वडस्थान कितिहां मुसलीकंद ब्राह्मण तिणे मधुरो कियो ॥ इति मंत्रः ॥ करवा समेत गागर तीन ३ पानीसे भरे उसमें चंदन घिसकर डाले अगरकी धूप दे सफेद फूल चढावे पीछे मंत्रको एकसो आठ दफे पढे इस प्रकार सात दिन करे रोगीको हनुमानजीके

प्रसादकी भागी दाल खवाव तो आराम हो ॥ अथ संततज्वरतंत्रम्–कुत्तेके मतमें मट्टीकी गोली बनाकर घाममें सुखावे । इस गोलीको गलेमें बांधनेसे ज्वर उतर कर दुबारा नहीं चढता और तंत्रांतरोंमें लिखा है कि मकडीके जालेको गलेमें लटकानसे बुखार छूट जाता है ॥ ॥ अथ शीतज्वरतंत्रम्–सफेद कनैलकी जडको दाहिने हाथमें बांधनेसे शीतज्वर छूट जाता है ॥ अन्य द्युष्कज्वरानिवारणतंत्रम्–ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः ॥ ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ॥ इति मत्रः ॥ इस मंत्रसे पानके बीडेको एकसो आठ बार अभिमंत्रित करके खवावे तो एकही दिनमें एकांतर ज्वर जाता रहेगा ॥ अन्यत्–ॐ गंगाया उत्तरे तीरे अपुत्रस्तापसो मृतः ॥ तस्मै तिलोदकं दद्यान्मुंचत्वैकाहिको ज्वरः ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे हाथमें पीपलका पत्ता लेकर उसमें तिल डालकर जलसे तर्पण करे तो ऐकाहिक ज्वर छोड देवे ॥ ॥ अन्यत्–ॐ बाणबुद्धे महा घोरे द्वादशार्कसमप्रभे ॥ जातोऽसौ सुमहावीर्यो मुंचत्वैकाहिको ज्वरः ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको पीपलके पत्तपर लिखकर धारण करनेसे ऐकाहिक ज्वर छोड देता है ॥ ॥ तंत्रम्–औलकं दक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ बध्नाति वामकर्णे तु हरत्यैकाहिकज्वरम् ॥ इति ॥ अन्यत्–कर्कटस्य[1] बिलोद्भूतमृदा तत्तिलकं कृतम् ॥ ऐकाहिकज्वरं हंति नात्र कार्या विचारणा ॥ यंत्रम्–इस सोलह त्रिशूलवाल यंत्रको शनिवारके दिन डंडी सुधा नीचे पडे हुए पीपलके पत्तेपर स्याहीसे लिखकर तीन तारके लाल सूतसे गलेमें बांधे तो एकांतर ज्वर छोड देता है इसमें संदेह नहीं हमारा सहस्रों वार परीक्षा किया हुआ है॥ ॥ अन्यत्–इस षट्कोण यंत्रको हल्दीद्वारा पानपर बबूलके कांटेसे लिखे



पजन करक रोगीको खवावे तो एकांतर दूर हो जायगा ॥ ॥ तृतीयज्वरनिवारणम्–अपामार्ग जटां[2] कटयां लोहितैः सततुभः ॥

---

१ कर्कटस्य–केकडा जंतु । २ जड ।

बद्ध्वा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हंति तृतीयकम् ॥ यन्त्र–इस यन्त्रको लिखकर गलेमें बांधनेसे तिजारी दूर होजाती है॥ इस नवकोष्ठके यन्त्रको लिखकर बांधे तो तिजारी दूर हो ॥ चातुर्थिकज्वर निवारणतन्त्रम्–सहदेईकी जड नग्न होकर लावे इसको कानमें बांधनेसे चौथिया ज्वर दूर होजाता है ॥ रात्रिज्वरनिवारणतंत्रम्– काकेमाचीभव मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम् ॥ निहंति नात्र संदेहो यथा सूर्योदयस्तमः ॥ १ ॥ अथवा भांगरेकी जड डोरेसहित कानमें बांध तो रात्रिज्वर दूर हो ॥ २॥ अथ अर्शोनिवारणतंत्रम्–



६	।४	५२
६	।।६	१
४।	४५	८



ॐ काकाकता क्रोरीकर्ताॐकरतासे होय य रसना दशहूंस प्रकटे खूनी वादी बवासीर न होय।मन्त्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करे तो उसके वंशमें न होय शब्द सांचा पिंड काचा तो हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा॥ इति मंत्रः॥ इस मन्त्रसे बासी पानीका इक्कीस बार अभिमंत्रित करके आबदस्त ले तो बवासीरकी पीडा दूर होकर कभी नहीं होगी और जो कोई इस मन्त्रका एक लाख जप करता है उसक वंशमें कभी बवासीरका रोग नहीं होता । और मन्त्र जानकर अर्शरोगीको जल पढा लेजानेक वास्ते नहीं कहता, उस मंत्रीको बारह ब्राह्मण मारनेकी हत्या लगती है । इसवास्ते जल पढा लेजानेकी सूचना अवश्य कर देनी चाहिये । कहेपर नहीं पढाकर लेजावे तो मंत्री दोषभागी नहीं होता । यह मन्त्र हमारा कई बार अनुभव किया हुआ है ॥ ॥ अन्यत्–ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ इस मन्त्रको २१ दफे पढकर लाल सूतमें

१ मकोय ।

गांठ दव इसीतरह तीन गांठ देकर दहिने पैरके अँगूठेमें बांधे तो खूनी बवासीरकी पीडा दूर होजायगी । अनुभूतमेतत् ॥ डाढके कीडा झाडनेका मन्त्र–ॐ नमो आदेश गुरूको वनमें ब्याई अंजनी, जिन जाया हनुमंत । कीडा मकडा माकडा, ए तीनो भस्मत । गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ अस्य विधानम्–दिवालीकी रातसे एक लक्ष जपे तो सिद्ध हो पीछे पीछे नीमकी डालीसे झाड दे तो दर्दको तत्काल दूर करे । अगर इस मन्त्रसे कटाईके बीजोंका धूंवा डाढोंमें पहुँचावे तो सब कीडे पानीमें जा पडेंगे ॥ अन्यत्–ॐ नमो कीडरे तु कुंडकुंडाला,लालपूंछ तेरामुख काला, मैं तोहि पूंछूं कहां ते आया,तोड मांस सबको क्यों खाया,अब तू जाय भस्म होजाय, गोरखनाथके लागूं पाय,शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मन्त्रः ॥ नीमकी डालीसे सात बार झाड दे तो सर्व जातिका कीडा मर ॥ ॥ धरण ठिकाने आवे ॥ मंत्रो यथा–ऊंची नीची धरणी श्रीमहादेव की सरनी टली धरन आनूं ठौर सतसत भाखे श्रीगोरखराव ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–झाड कर सवा तीन मासाकी मुंदडी पहरावे तो धरन ठिकाने आवे ॥ अन्यत्–ॐ नमो नाडीनाडी नौसे नाडी बहत्तरसो कोठा चले अगाडी डिगे न कोठा चले न नाडी रक्षा करे जती हनुमंतकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ नौ गांठ सूतमें लगाकर छल्लेके माफिक बना ले उसको नाभिपर रखके मंत्र पढे उसके भीतर फूंक मारे तो थोडी देरमें धरन ठिकाने आ जायगी ॥ अन्यत्–वनमें संखाहूली फूले उसको हल्दीरंगे चांवलोंसे शनिवारको न्योता दे आवे, रविदिन प्रातःकाल जाकर सात प्रदक्षिणा करे हाथ जोडे शिर नवावे स्तुति करे सूर्यकी तर्फ मुख करके पीछे उसकी जडमें दूध डाले, पीछे खोद लावे इसको कमरमें बांधते ही धरण ठिकाने आ जाती है इसमें संदेह नहीं ॥ हूकका मंत्र–ॐ नमो सारकी छूरी धारका बान हूक न चले रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्दसाचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–इक्कीस वार पढता जाय पैनी छूरीसे पृथ्वीपर लकीर निकालता जाय तो हूक बंद हो॥ अथ प्लीहनिवारणमंत्रः–ॐ नमो हुताश पर्वत जहां सुरह गाय सुरहगायके पेटमें बच्छा बच्छाके पेटमें तिल्ली दबा दबा कर तिल्ली कटे

सरकंडा बढे फीहा कटे हरो फुरो ॥ इति मंत्रः ॥ छूरीसे पृथ्वीमें लकीर करकर काटता जावे मंत्र पढता जावे तो तिल्ली कटे ॥ कखलाईनिवारणार्थ मंत्र—ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमंता आई पके न फूटे चले न पीडों रक्षा करे हनुमंत वीर. दुहाई गुरू गोरखनाथकी शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा, सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—नीमकी डालीसे २१ दफे झाड कर पृथ्वीकी मट्टी उसपर लगा दे तो तीन ही दिनमें बैठ जायगी ॥ ॥ मंत्र रींघनबायका—ॐ नमो आदेश गुरुको ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायल जोगी इसमायल जोगीके पुत्री तीन एक तोडे एक पिछोडे एक रींघनबाय तोडे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ मंगल और शनिवारको मनिहारीकी मोगरीसे झाड दे आराम हो सही ॥ ॥ सुखप्रसवमंत्रो यथा—ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ॥ मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—इस मंत्रसे आठ बार जलको अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्रीको पिलावे तो सुखसे बालक पैदा होजायगा ॥ अन्यत्—इस चक्रव्यूहयंत्रका कांसीकी थालीमें लिख धोकर पिलावे तो कष्टित स्त्री खलास हो ॥ ॥ इसे तीसके यंत्रको लिखकर स्त्रीको दिखानेसे तत्काल बालक उत्पन्न हो जाता है ॥ अन्यत्—ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा ॥ अन्यत्—ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इन दोनों मंत्रोंमेंसे किसी एकके द्वारा दूधको अभिमंत्रित करके स्त्रीको पिलावे तो बालकका जन्म सुखपूर्वक हो ॥ नेत्रपीडानिवारणमंत्रः—ॐ नमो श्रीरामकी धनुही लक्ष्मणका बाण आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमारकी आन ॥ इति मंत्रः ॥ नीमकी डालीसे इकीसवार झाड दे तो तीन दिनमें आंखकी

तीसायंत्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

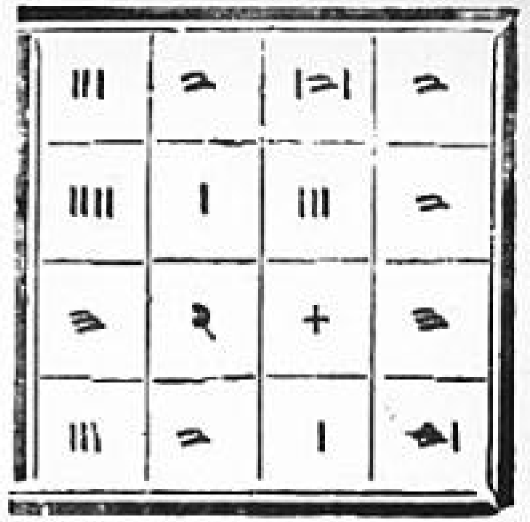
चक्रव्यूह



पीडा दूर होजायगी इसमें संदेह नहीं, अनुभूतमेतत्॥ अन्यत्–ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमंता जाई फूटै न पाके करै न पीडा जती हनुमंत हरे पीडा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः॥ यह मंत्र पढ नीमकी डालीसे झाड दे तो दर्द मिटे ॥ मंत्र कंठबेलका–ॐ नमो कंठबेल त द्रुमद्रुमाली सिरपर जकडी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घट गई बेल बढन नाहिं पावे बैठी तहां उठन नहिं पावे फूटे और पीडा करे तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ सात दिन चाककी नोकसे झाडे २१ बार धरतीपर लकीर निकाले तो कंठबेल मिटे ॥ अदीठमंत्रः–ॐ नमो सिर कटा नख कटा विष कटा अस्थिमेदमज्जागत फोडा फुनसी अदीठदुंबल दूखना रैत्यावरोगरींघणवायजाय चौंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरू रक्षा कीजे आय शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–मोरपंखसे पृथ्वी साफ करके सात बार मंत्र पढे और चुटकी१धूलकी उठाकर फोडेके चारोंतरफ लगादेवे ऐसेसातदिन करे तो अदीठ जाय॥ ॥ बिच्छू झाडनेका मंत्र–ॐ नमो आदेश गुरूको कालो बिच्छ कांकरवालो उत्तर बिच्छू न कर टालो उतरै तो उतारूं चढे तो मारूं गरुडमोरपंख हकालूं शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इस मंत्रसे झाड दे तो बिच्छूका विष उतरे ॥ ॥ अन्यत्–काला बिच्छू कंकरवाला हरी पूंछ भैंराला सोनाका गाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार बिच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वैद मानुषपर गया खाते जाते लागी बार उतर रे बिच्छू तुझे ख्वाजममंदीनचिरागतृष्टीकी आन ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्–जहांतक विष चढा हो वहां पकडकर बुहारीसे झाड दे जैसे जैसे उतरे आप भी नीचे पकडता रहे जगहपर आवे तब झाडना बंद करके डंकके ऊपर तेलिया मोहरा पानीमें घिसकर लगावे तो डंक भी अच्छा होवे॥ ॥ सर्प झाडनेका मंत्र–खं खः ॥ इति द्व्यक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–जो कोई सर्प काटनेकी खबर दे

तो पानीको एकसो आठ बार अभिमंत्रित करके खबर देनेवाले मनुष्यको देकर कह दे कि जाकर पिलादे इस पानीके पीनेसे सर्पका जहर उतर जाता है ॥ अन्यत्—ॐ नमो भगवति वज्रमये हन हन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकरांचिते पर्वां दिशं बंध बंध ॐ दक्षिणां दिशं बंध बंध ॐ पश्चिमां दिशं बंध बंध ॐ उत्तरां दिशं बंध बंध ॐ नागान् बंध बंध ॐ नागपत्नीं बंध बंध ॐ असुरान् बंध बंध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बंध बंध ॐ प्रेतभूतगंधर्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्ष रक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्ष रक्ष ॐ अधो रक्ष रक्ष ॐ क्षुरिके बंध बंध ॐ ज्वल महाबले घट घट ॐ मोटि मोटि सटावलि वज्रांगि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं ह्रः फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्ष रक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा ॥ इति मंत्रः॥ अस्य विधानम्—जलको तीन बार अभिमंत्रित करके पिलावे तो विष उतरे सही ॥ अन्यत्—ॐ हुं सं ॐ नालकांतिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्तलोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुंडे कट कट हन हन महोज्ज्वले चिलि चिलि मुंडमालाधारिणि स्फोटय स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जंगमं विषं नाशय नाशयॐमहारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनि वनवासीनि पर्वतविचारिणि कहकह ॐ हसहस नमनम दहदह क्रुधक्रुध ॐनीलजीमतवर्णेविस्फुरविस्फुर ॐघंटानादिनि ललजिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष२विषं धनधन हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महाकाये अमुकस्य स्थावरजंगमविषं छिन्धि २ किटि२ सर्वविषनिवारिणि हुंफट् ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—पहाड के पत्थरका एक नीलवर्ण टुकडा अभिमंत्रित करके सर्पके डंकपर चिपका देवे और मंत्रको पढता रहे तो जबतक विष रहेगा तबतक पत्थर वहांहीं चिपका रहेगा । विष निःशेष होनेपर आपही आप पत्थर अलग होजायगा इसमें संदेह नहीं ॥ अन्यत्--इस मंत्रको कागजपर स्याहीसे लिखकर धोवे और सर्प काटे हुए मनुष्यको पिलावे तो सर्पका विष तत्काल उतर जायगा, चढेगा नहीं ॥ सर्पकीलनमंत्रः--ॐ नमो सर्पा रे तू थूलमथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बांधूं तेरी दादीभुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया

सर्पविषनाशकयन्त्रम्.



सर्पा रे सर्पा बांधूं तेरा रतन कटोरा जामें तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो घाव तेरी डाढ भस्म होजाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको शिवरात्रिसे प्रारंभ करके वर्ष दिनपर्यंत सवा प्रहर तक असंख्य जपे तो सिद्ध हो ॥ पीछे आरनेकी भस्म सातबार मंत्रसे सर्पपर डाले तो सर्पकी डाढ बंद होजायगी पीछे खिलौनेके माफिक उठा लेवे ॥ सर्पकीलनमंत्रः—वजरी बजरी बजरकिवाड बजरी कीलूं आस पास मरे सांप होय खाख मेरा कीला पत्थर कीले पत्थर फूटे न मेरा कीला छटे मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः॥इस मंत्रसे सांपके एक कांकरी मारे तो सांप कील जाय ॥ ॥ सांप खोलनेका मंत्र--कीलन भई कुकीलनि, वाचा भया कुवाच । जाहु सर्प घर आपने, चुग फिर चारों मास ॥ इति मंत्रः ॥ अन्यत्— पहरे भगवे कपडे कर मरदाना भेस बंधीबंधी पन छुटगई फिरिआ चारो देश मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रको पढ कांकरी मारे तो कीला हुआ सांप छूट जाय ॥ सर्पोंको भगानका मंत्र--ॐ ग्लः सपकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे सात बार मृत्तिकाको अभिमंत्रित करके घरमें डाले तो सर्प भाग जायँगे ॥ बावले कुत्तेका मंत्र--ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायल जोगी इसमायलजोगीका झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंडा बंदर नाचे रीछ बजावे सीता बैठी औषध बांटे कूकरका विष भाजे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ इस मंत्रसे झाड दे तो बावले कुत्तेका विष उतर जायगा पीछे किसी तरहकी पीडा नहीं होगी ॥ ॥ तंत्रांतरेऽपि— ॐ नमो आदेश गुरूको आदेश कामरू देशकाझबरा कुत्ता हुकनबुके सुषपसुसे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—मोरपंखसे १०९ बार झाड दे और शनिदिन तोले ३ चावल भिगोवे रविको पीसकर दो गोली

वनाव पीछे लीपकर रोगीको बिठावे और सूर्यकी तरफ मुख करके गोली फेरे मंत्र पढता रहे तो कुत्तेके दंशके बाल गोलीमें निकलेंगे–पीछे मंत्र पढ दूसरी गोली फेरे तो उसमें भी निकलेंगे–इसी प्रकार रविवारसे ३ दिन झाड देवे–वर्ष दिन पर्यन्त दर्पण न देखे–उडद तेलकी वस्तु–खटाई–अचार न खाय--पानीमें मुख न देखे--इति ॥ ॥ आधासीसीका मंत्र–ॐ नमो वनमें ब्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय ॥ कुद कुद शाखानपै, कच्चे वनफल खाय ॥ आधा तोडे आधा फोडे, आधा देय गिराय ॥ हंकारत हनुमानजी, आधाशीसी जाय ॥ इति मंत्रः ॥ वनमें ब्याई अंजनी, कच्चे वनफल खाय ॥ हांक मारी हनुमंतने, इस पिंडसे आधासीसी उतर जाय ॥ इति मंत्रः ॥ विभूतिसे झाड दे तो आधासीसीसे सिर दुखना अच्छा हो ॥ इस नवकोष्ठके यंत्रको लिखकर सिरमें बांधे तो आधासीसी दूर हो ॥ इस चार कोठेवाले यंत्रको स्याहीसे कागजपर लिखके माथेमें बांधे तो निश्चयपूर्वक अधासीसी नष्ट हो जाती है। यह यंत्र गुप्त था ॥ कमल झाडनेका मंत्र–ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहै न नेकनिशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंतकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ रोगीके सिरपर काँसेकी कटोरीमें तेल भरकर धरे मंत्र पढकर कुशासे चलाता जावे तेल पीला होजाय तब उतार लेवे तो सब पीलिया तीन दिनमें उतर आवेगा ॥ ॥ अथ दर्द और थनयलका मंत्र–ॐ वनमें जाई वानरी, जिन जाया हनुमंत ॥ सज्जा खधा ठाकिया, होगया भस्मीभूत ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–छानेकी राखसे स्त्रीका दाहिना स्तन दुखे तो अपना बायां अगर स्त्रीका बायां स्तन दुखे तो अपना दाहिना स्तन सात ७ बार झाडे तो उस स्त्रीका स्तन आराम हो जायगा ॥ जमोगाका मंत्र–सुन रे जमोगे मतिकर अभिमान, तेरा नहीं दुनियामें ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान। बचोगे नहीं तू जिमी आसमान, दुहाई औघडकी छू खेदके मारता हूं ॥ इति मंत्रः॥ रामसरकी

५६	१	४४
२०	३८	४९
२८	६२	१४

५३	४२
३११	७०

तीर कमान बनावे और मंत्र पढके तीर बालकके मारे तो जंभुवेकी पीडासे छूट जाय। अनुभूतमेतत् ॥ मंत्र डब्बा पसली झाडनेका—सत्य नाम आदेश गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतो गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करेगा सवा भार कोइला करेगा सवाभार कोइला कर कहा करगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढेगा नव चन्द्रहास खड्ग गढ कहा करेगा जानवा डौरू पांसलीबाय काटकूट खारी समुद्र नाखेगा जगद्गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इति मंत्रः ॥ तिलका तेल और सिंदूरसे झाड दे तो आराम होवे ॥ अथ द्यूते विजयकरणं दत्तात्रेयतंत्रे—गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुंजां च मूलकम् ॥ धारयेद्दक्षिण हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत् ॥ अन्यत्— धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम् ॥ हरितालसमायुक्तं तिलकं सदिने कृतम् ॥ अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी ॥ विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शंकरोदितम् ॥ अन्यत्—हस्तनक्षत्र होय रवि, ता दिन ऐसा करे उपाय ॥ न्योतै पेड पवाडका, दिन पहले ही जाय ॥ रविदिन ताको लायके, बांध दाहिनी बांह ॥ खेले जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि ॥ ॥ अन्यत्— इस यंत्रको अरंडके पत्तेपर कौवेके परसे स्याहीद्वारा रात्रिके समय शुद्ध होकर लिखे इस चौंसठ कोठेके यंत्रको 'मेखैरकंदयेरूपाकजिजनंदनीचनः छदा वींयमंत्रंतेषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम् ॥' इस बत्तीस अक्षरके मंत्रको अनुलोम और विलोम रीतिसे लिखके भुजामें धारण करे पीछे जुवा खेले तो जीतेही

द्यूतविजयकरणयन्त्रम् ।

मे	खै	र	कं	द	ये	रू	पा
क	जि	ज	दं	द	नी	च	तः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्ठि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्ठि	हे
य	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
तः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रू	ये	द	कं	र	खै	मे

जीतेगा ॥ इस सोलह कोठेके यंत्रको अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिख धूप देकर भुजामें बांधे पीछे जुवा खेले तो कभी हारे नहीं जीतेही जीते ॥ अथ विक्रयवर्धनोपायः– भँवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठै जो डंडी बिकै जो माल भँवरवीर सोखे नहि जाय ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–रविवारके दिन काला उडद लेकर उसपर इक्कीस बार मंत्र पढक दुकानमें डाल देवे तो तीन रविवारोंमें बिक्री चौगुनी होजायगी । अनुभूतमेतत् ॥ अन्यत्–याअववाविर्रिज्कुल्फतहदुकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगद्दीवहकयाफताहोयावासितो॥इति मंत्रः । अस्य विधानम्॥ शुक्ल पक्षकी पहिली बृस्पतिको सात यंत्र लिखे पंचोपचार पूजन करे लोबान देवे मंत्रको एकसो आठदफे पढे पीछे प्रतिदिन एक यंत्रकी बत्ती बनाकर मीठे तेलके साथ दुकानपर जलावे तो सात ही दिनमें बंद हुई बिक्री जारी होजायगी इसमें संदेह नहीं ॥ अथ गोमहिषीणां दुग्धवर्धनोपायो वीरभद्रोड्डीशतंत्रे–ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं ठं ठः ॥ इति पंचदशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अनेन मंत्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अतिक्षीरदास्ता भवंति ॥ अथास्य यंत्रम्–इस यंत्रको केसर अथवा गोरोचन अथवा कुंकुमसे भोजपत्रपर लिखकर गौके गलेमें और भैंसके सींगमें गूगलकी धूप देकर बांधे तो वह बच्छा लगाने लगेगी और दूध बहुत देवेगी ॥ अथ फलवृद्धियंत्रम्–इस यंत्रको जंभीरी नींबूके रससे भोजपत्रपर या कागजपर लिखकर अनारके पेडमें बांधे तो उसमें अनार बहुत लगेंगे और भी जिस वृक्षमें बांध दोगे उस वृक्षमें फल बहुत आवेंगे ॥ कन्यायाः पतिगृहे वासोपायः–ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरई जोइ जोइ देखे ॥६६९॥

विक्रीयवर्द्धकयन्त्रम् ।

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

धूतेविजयकरणयन्त्रम् ।

१	२५।	२३।	२३।
३२॥।	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	९॥	२४॥	१९॥
२६।	९॥।	५॥।	४॥।

दुग्धवर्धकयन्त्रम् ।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	९	३०	३१

मारकर तासो सो दीखे पाव परंता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–सांभरलोनकी एकसो आठ कांकरी मंत्रित करके खिलावे तो लडकी सासुरेमें रहे रूठकर आवे नहीं ॥ अथ कलहनाशनं दत्तात्रेयतंत्रे–तालकं तक्रपिष्टेन मृत्तिकायुक्तपुत्तलीम् ॥ निखनेद्यद्गृहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात् ॥ अथ अनावृष्टिकाले वृष्टिकरणं वीरभद्रोड्डीशतंत्रे–ॐ काली काली स्वाहा ॥ इति मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अननाश्वत्थसमिधं घृताक्तां जुहुयात् सहस्राहुतिहोमेन महावृष्टिर्भवति ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे उत्तरखण्डे षट्कर्मतंत्रे शान्त्याख्यः सप्तमस्तरंगः ॥७॥

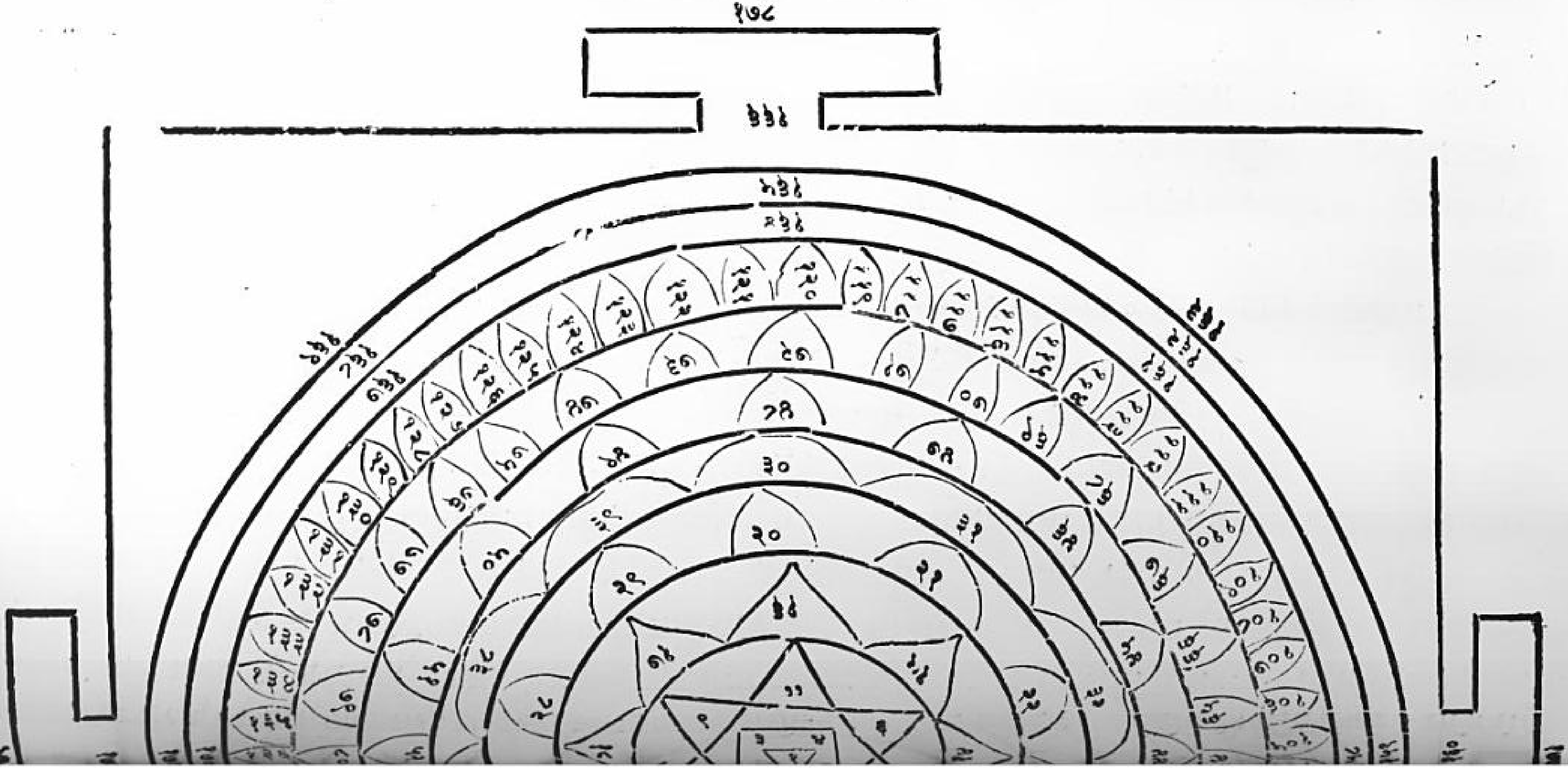
फलवृद्धियं

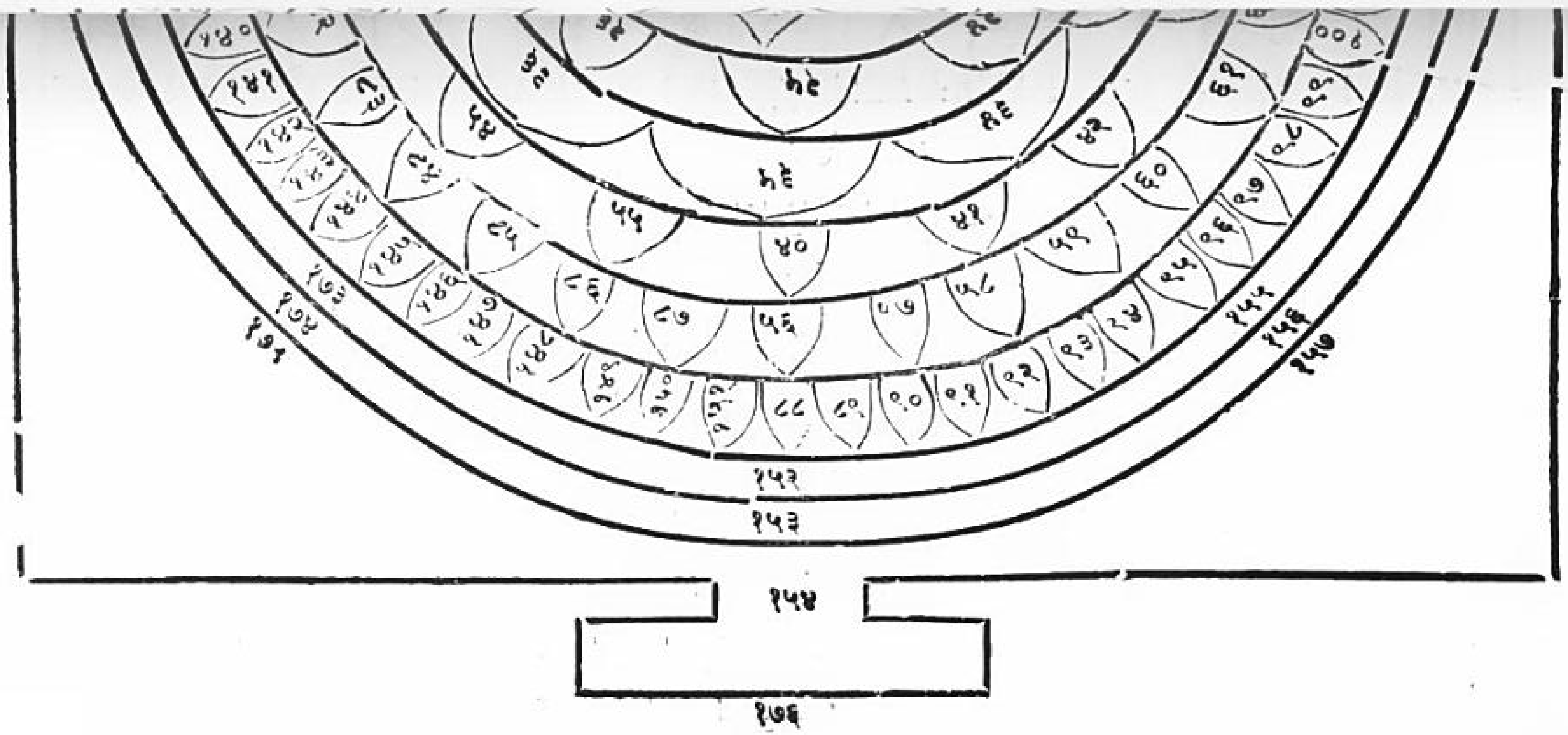
८७	१४	२	८
७	३	११	११
१३	८८	१०	१
४	६	८६	१२

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वशीकरणादितंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ स्वयंवरकलामंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ—अथोच्यते विवाहार्थे स्वयंवर
कला शिवा ॥ मंत्रो यथा—ॐ ह्रीं योगिनि २ योगेश्वरि २ योगभयंकरि सकलस्थावरजंगमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा ॥
इति पंचाशदक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य स्वयंवरकलामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । जगती छंदः । देवी गिरिपुत्री स्वयंवरा देवता । ममा
भीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १ । जगतीच्छंदसे नमः मुखे २ । देवीगिरिपुत्रीस्वयंवरादेवतायै नमः
हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्य
वश्यमोहिन्यै तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै अनामिकाभ्यां
नमः ४ । ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति
करन्यासः ॥ ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्य हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै
शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रीं
सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ इति विन्यस्य मूलमंत्रेण पादादिमूर्द्धांतं व्यापकं कुर्यात् ॥ इति न्यासं
कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ शंभुं जगन्मोहनरूपपूर्णं विलोक्य लज्जाकुलितां स्मिताढ्यम् ॥ मधूकमालां स्वसखीकराभ्यां संबिभ्रतीमद्रिसुतां
भजेयम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ आं आधार
शक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु—ॐ
जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विला
सिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततस्त्रिकोणचतुरस्रषट्
कोणाष्टदलद्विदिग्दलं षोडशद्वात्रिंशच्चतुःषष्टिदलं च तद्बाह्ये वृत्तत्रयं त्रिरेखात्मकं भूपुरं च स्वर्णादिपत्रे यंत्रं निर्माय ताम्रपात्रे संस्थाप्य

घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये स्वयंवरे
एह्येहि नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य
देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि
परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां
कुर्य्यात् ॥ तत्र क्रमः—त्रिकोणे ॐ पार्वत्यै नमः । पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्र ॥ इति संपूज्य ततः पुष्पांजलि
मादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पां
जलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं
प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमण चतुष्कोणे ॐ मेधायै नमः । मेधाश्रीपा० १ । ॐ विद्यायै नमः । विद्या
श्रीपा० २ । ॐ लक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ३ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ४ । इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्या
दिति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयाय नमः ।
हृदयश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै वषट् । शिखा
श्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रय
श्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृती
यावरणम् ॥ ३ ॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण—ॐ अं आं नमः १ । ॐ इं ईं नमः २ । ॐ उं ऊं नमः ३ । ॐ ऋं ॠं नमः ४ ।
ॐ ऌं ॡं नमः ५ । ॐ एं ऐं नमः ६ । ॐ ओं औं नमः ७ । ॐ अं अः नमः ८ ॥ इति स्वरान्संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥
इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥ ततः प्रथमदिग्दले इन्द्रादिदशदिक्पालान् द्वितीयदिग्दले वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं

स्वयंवरकला-पूजनयन्त्रम् ।





॥६७२॥

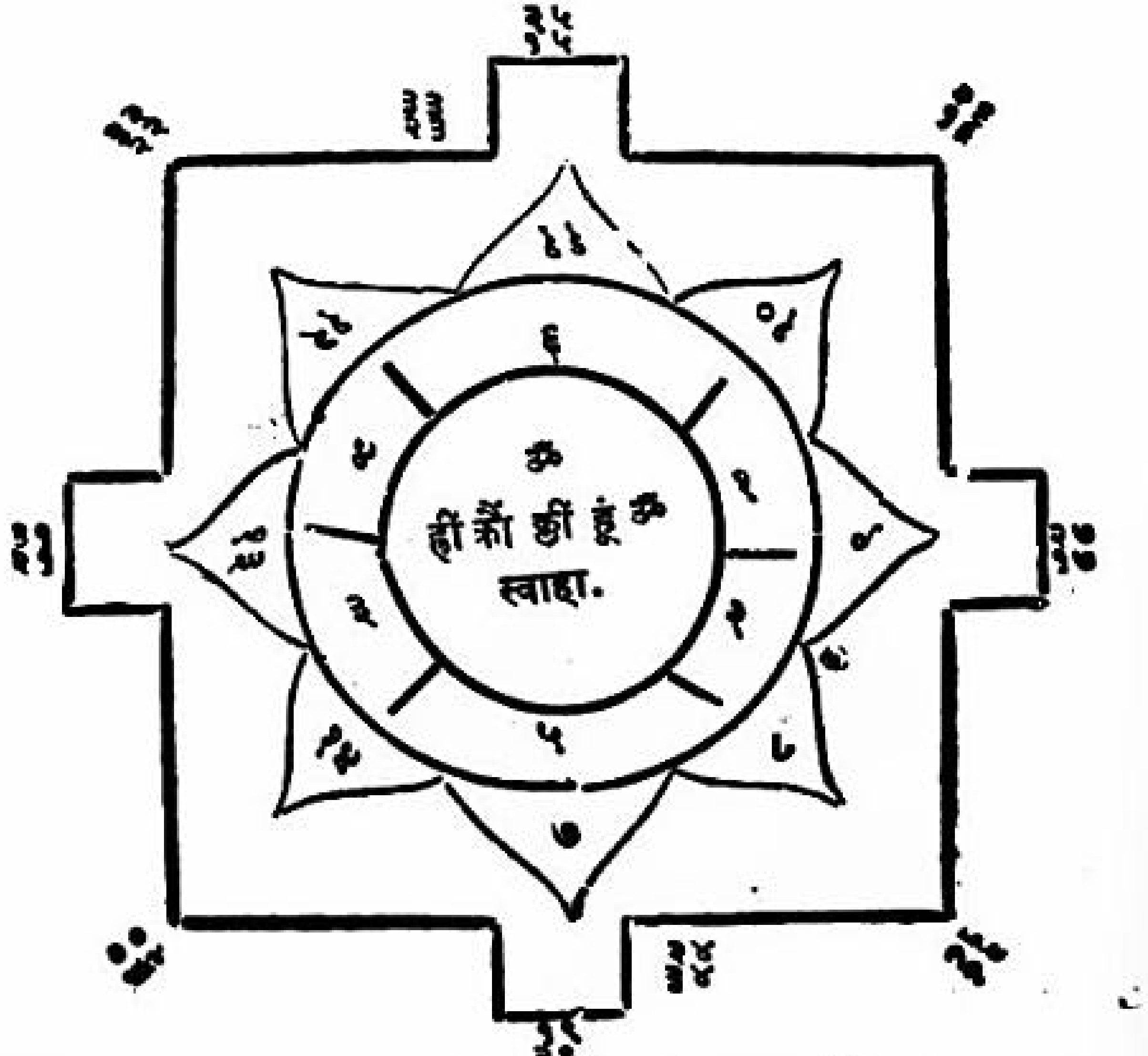
दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ ५ ॥ ततः षोडशदले ॐ श्रीं रमायै नमः । रमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति मंत्रेण षोडशदले रमां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥ ततो द्वात्रिंशद्दले ॐ ह्रीं क्लीं शिवायै नमः । शिवाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ इति द्वात्रिंशद्दले शिवां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥ ततश्चतुःषष्टिदले श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै नमः । त्रिपुराश्रीपा० ॥ इति मंत्रेण चतुःषष्टिदले त्रिपुरां पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ ८ ॥ ततो वृत्तत्रये प्रथमवृत्ते ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० १ ॥ द्वितीयवृत्ते ॐ भवान्यै नमः । भवानीश्रीपा० २ ॥ तृतीयवृत्ते ॐ पुष्पसायकायै नमः । पुष्पसायकाश्रीपा० ३ ॥ इति पूजयेत ॥ ततो भपुरे चतुर्द्वारे पूर्वादिक्रमेण ॐ विघ्नेशाय नमः । विघ्नेशश्रीपा० १ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपालश्रीपा० २ । ॐ भैरवाय नमः । भैरवश्रीपा० ३ । ॐ योगिन्यै नमः ॥ योगिनीश्रीपा० ४ ॥ इति द्वारपालान् संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति नवमावरणम् ॥ ९ ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ पायसान्नेन जुहुयात्पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥ १ ॥ एवं यो भजते देवीं वश्यास्तस्याखिला जनाः ॥ लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयादयुतं तु यः ॥ २ ॥ लभते वांछितां कन्यां धनमानसमन्विताम् ॥ ३ ॥ इति पंचाशदक्षरस्वयंवरामंत्रप्रयोगः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मधुमतीमंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ–आं ह्रीं क्रौं क्लीं हुं ॐ स्वाहा ॥ इत्यष्टाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य मधुमतीमंत्रस्य मधुर्ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । मधुमती देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ मधुऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । मधुमतीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्रौं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ हूं

कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः ॥ ॐ आं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्रौं शिखायै वषट् ३। ॐ क्लीं कवचाय हुं ४। ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अहिलतादलनीलसरोजयुक्करयुगां माणिकांचनपीठगाम् ॥ अमरनागखगणसेवितां मधुमतीमखिलार्थकरीं भजे ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ' ॐ आधारशक्त्यादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु—ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य' ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये मधुमत्येह्येहि नमः ' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ॐ आं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २। ॐ क्रौं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३। ॐ क्लीं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४। ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रौं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पां

जलिं च दत्त्वा पजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण—ॐ निद्रायै नमः । निद्राश्रीपादुकां० १ । ॐ छायायै नमः । छायाश्रीपा० २ । ॐ क्षमाय नमः । क्षमाश्रीपा० ३ । ॐ तृष्णायै नमः । तृष्णाश्रीपा० ४ । ॐ कांत्यै नमः । कांतिश्रीपा० ५ । ॐ आर्य्यायै नमः । आर्य्याश्रीपा० ६ । ॐ श्रुत्यै नमः । श्रुतिश्रीपा० ७ । ॐ स्मृत्यै नमः । स्मृतिश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो भूपुरे इंद्रादिदशदिक्पालान् वज्रायायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः । बिल्वपत्रैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—प्रजप्य वसुलक्षं तद्दशांशं जुहुयाद्दलैः ॥ बिल्वोत्थैः पजयेत्पीठे जयादिनवशक्तिके ॥ १ ॥ य इत्थं सेवते देवीं स समृद्धेः पदं लभेत् ॥ रक्तांभोजैर्हुतैर्मंत्री भूपतिं वश्यतां नयेत् ॥ नानाभोगान्पायसेन तांबूलैर्वामलोचनाम् ॥ २ ॥ इत्यष्टाक्षरमधुमतीमंत्रप्रयोगः ॥ अन्यः—ऐं ॥ इत्येकाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानं सर्वं पूर्ववत् ॥ तथा च—पूर्ववद्यजनं चास्य ध्यायेद्देवीं कुमारिकाम् ॥ कोटयर्द्धं तु जपं कुर्वन्विद्यापारंगमो भवेत् ॥ मधुमत्या

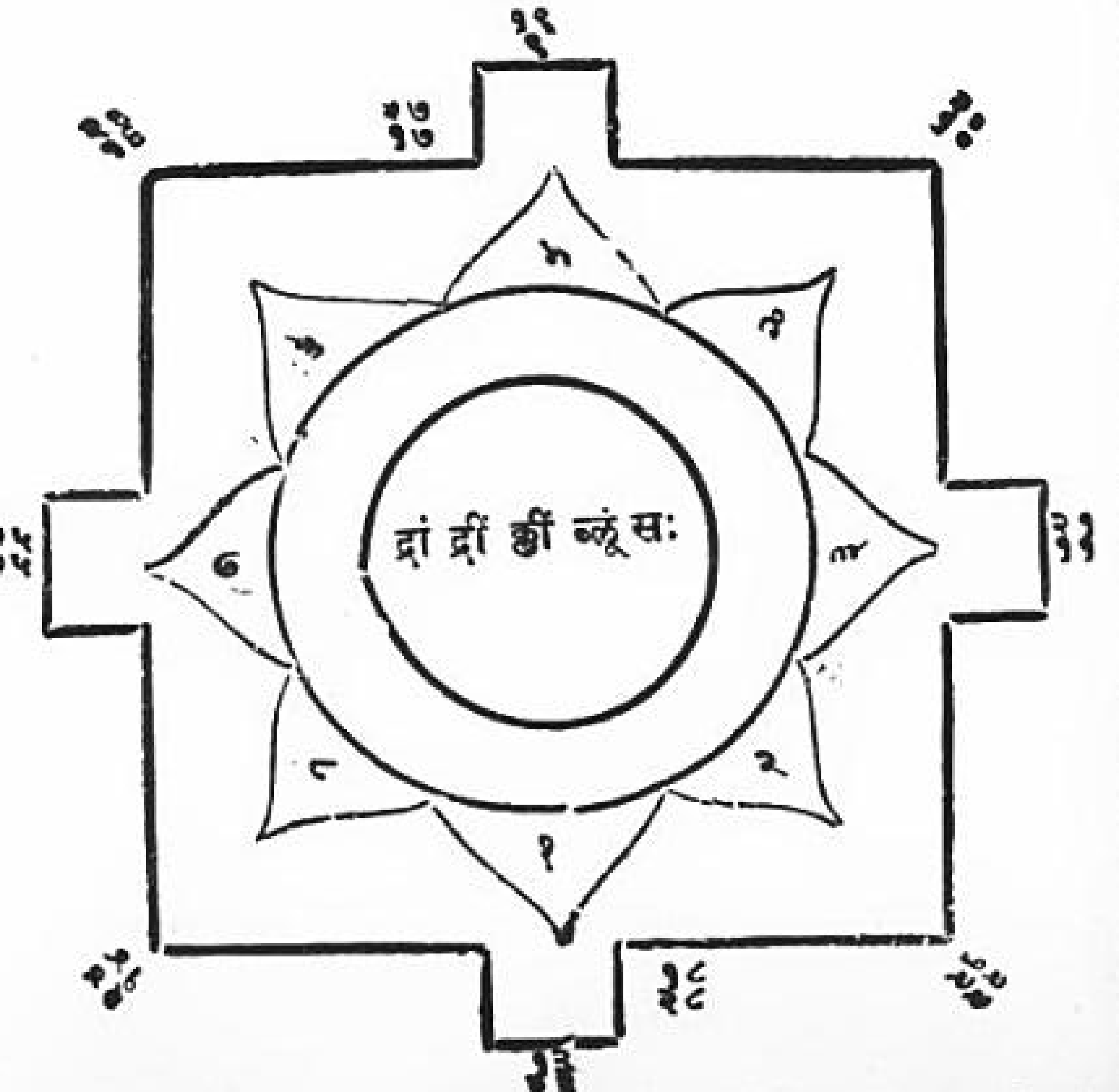
मधुमतीपूजनयन्त्रम् ।



समा नान्या नानाभोगसुखप्रदा ॥ इत्येकाक्षरमधुमतीमंत्रप्रयोगः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ बाणेशीमंत्रप्रयोगो मंत्रमहोदधौ–द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य बाणेशीमंत्रस्य संमोहन ऋषिः । गायत्री छंदः । बाणेशी देवता । ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ संमोहनऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २ । बाणेशीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ द्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । द्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४ । सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ द्रां हृदयाय नमः १ । द्रीं शिरसे स्वाहा २ । क्लीं शिखायै वषट् ३ । ब्लूं कवचाय हुं ४ । सः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादि षडंगन्यासः ॥ द्रां द्राविण्यै नमो मूर्ध्नि १ । द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः २ । क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे ३ । ब्लूं कर्षिण्यै नमो गुह्ये ४ । सः मोहिन्यै नमो हृदि ५ ॥ इति पंचदेवतान्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ उद्यद्भास्वत्संनिभा रक्तवस्त्रा नानारत्नालंकृतांगी वहंती ॥ हस्तैः पाशं चांकुशं चापबाणौ बाणेशी नः कामपूर्तिं विधत्ताम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मंमंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठ देवताः संपूज्य पीठशक्तीः पजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु–ॐ मोहिन्यै नमः १ । ॐ क्षोभिण्यै नमः २ । ॐ त्रास्यै नमः ३ । ॐ स्तंभिन्यै नमः ४ । ॐ कर्षिण्यै नमः ५ । ॐ द्राविण्यै नमः ६ । ॐ ह्लादिन्यै नमः ७ । ॐ क्लिन्नायै नमः ८ । मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ९ ॥ इति नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः बाणेशीयोगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय–ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि बाणेशि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा

पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वाऽऽवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तद्यथा देव्यंगे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—द्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः :१ ॥ इति सर्वत्र ॥ द्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । क्लीं शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ब्लूं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । सः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ दिक्ष्वग्रे च ॐ द्राविणीमुख्यै नमः । द्राविणीमुखीश्रीपा० ७ ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मलमुच्चार्य्य—अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥१॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ अनंगरूपायै नमः । अनंगरूपाश्रीपा० १ । अनंगमदनायै नमः । अनंगमदना श्रीपा० २ । ॐ अनंगमन्मथायै नमः । अनंगमन्मथाश्रीपा० ३ । ॐ

बाणेशीपूजनयन्त्रम् ।



अनंगकुसुमायै नमः । अनंगकुसुमाश्रीपा० ४ । ॐ अनंगमदनपरायै नमः । अनंगमदनपराश्रीपा० ५ । ॐ अनंगशिशिरायै नमः । अनंगशिशिराश्रीपा० ६ । ॐ अनंगमेखलायै नमः । अनंगमेखलाश्रीपा० ७ । ॐ अनंगदीपिकायै नमः । अनंगदीपिकाश्रीपा० ८ । इत्यष्टौ शक्तीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च

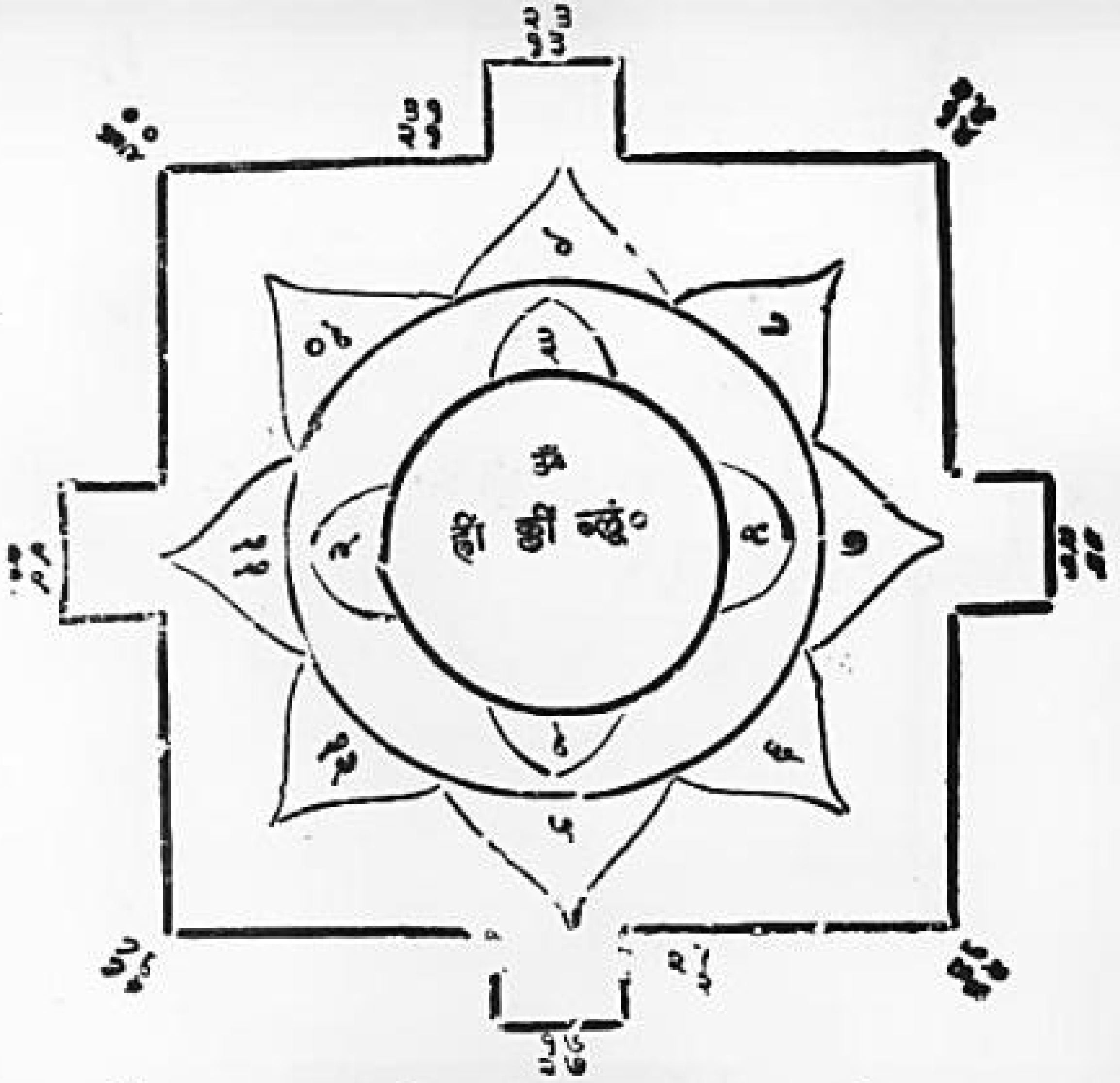
संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्॥इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। पंचकं दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात्॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं पंचकं तद्दशांशतः ॥ हुत्वा वाणेश्वरीं देवीं पजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मंत्री काम्येषु विनियोजयेत्॥ दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् ॥ सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥ २ ॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मंत्री कन्यामवाप्नुयात् ॥ कन्यापि वरमाप्नोति मासद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन ससंपातं हुत्वा साष्टशतं नरः ॥ आज्यं संपातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रियै ॥ ४ ॥ सा तदाज्यं निजं कांतं भोजयित्वा वशं नयेत् ॥ सुगंधकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति वाणेशीपंचाक्षरीमंत्रप्रयोगः ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कामेशीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ मंत्रो यथा—ह्रीं क्लीं ऐं ब्लं स्त्रीं ॥ इति पंचाक्षरो मंत्रः॥ अस्य कामेशीमंत्रस्य संमोहन ऋषिः। गायत्री च्छंदः। कामेशी देवता॥ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः॥ ॐ संमोहनऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमो मुखे २। कामेशीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ए मध्यमाभ्यां नमः ३। ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४ । स्त्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ह्रीं हृदयाय नमः १ । क्लीं शिरसे स्वाहा २ । ऐं शिखायै वषट् ३ । ब्लूं कवचाय हुं ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ पाशांकुशाविक्षुशरासबाणौ करैर्वहंतीमरुणांशुकाढयाम् ॥ उद्यत्पतंगाभिरुचिं मनोज्ञां कामेश्वरीं रत्नचितां प्रणौमि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु—ॐ

१ संपातम्- आहुतिशेषस्य पात्रांतरे प्रक्षपः संपातः तद्युतं हुत्वा संपाताज्यं स्त्रियै दद्यात् ॥ किंभूतायै-विश्राणितश्रियै दत्तदक्षिणायै-दक्षिणामादावादाय पश्चादाज्यं दद्यादित्यर्थः। अन्यथा फलाभावः।

मोहिन्यै नमः १। ॐ क्षोभिण्यै नमः २। ॐ त्रास्यै नमः ३। ॐ स्तंभिन्यै नमः ४। ॐ कर्षिण्यै नमः ५। ॐ द्राविण्यै नमः ६। ॐ ह्लादिन्यै नमः ७। ॐ क्लिन्नायै नमः ८। मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ९॥ इति पीठशक्तीः पूजयेत्॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य' ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं कामेशीयोगपीठाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्॥ तद्यथा पुष्पांजलिमादाय—ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥ अनुज्ञां देहि कामेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा देव्यंगे आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १॥ इति सर्वत्र॥ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। ऐं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ब्लूं कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६॥ इति षडंगानि पजयेत्॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्॥ इति प्रथमावरणम्॥ १॥ ततः पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्षु दिक्षु—ॐ मकरध्वजाय नमः। मकरध्वजश्रीपा० १। ॐ कंदर्पाय नमः। कंदर्पश्रीपा० २। ॐ मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० ३। ॐ कामदेवाय नमः। कामदेवश्रीपा० ४॥ इति मनोभवान् संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम्॥ २॥ ततोऽष्टदले प्राचीक्रमेण ॐ अनंगरूपायै नमः। अनंगरूपाश्रीपा० १। ॐ अनंगमदनायै नमः। अनंगमदनाश्रीपा० २। ॐ अनंगमन्मथायै नमः। अनंगमन्मथाश्रीपा० ३। ॐ अनंगकुसुमायै नमः। अनंगकुसुमाश्रीपा० ४। ॐ अनंगमदनपरायै नमः। अनंगमदनपराश्रीपा० ५। ॐ अनंगशिशिरायै नमः। अनंगशिशिराश्रीपा० ६। ॐ अनंगमेखलायै नमः। अनंगमेखलाश्रीपा० ७। ॐ अनंगदीपिकायै नमः। अनंगदीपिकाश्रीपा० ८॥

इति संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पंचलक्षजपः । पालाशकुसुमैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् । एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च—भूतलक्षं जपित्वैनामर्द्धलक्षं पलाशजैः॥कुसुमैर्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम् ॥ एवं सिद्धमनुर्मंत्री पूर्वोक्तं योगमाचरेत् ॥ १ ॥ दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् ॥ सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥ २ ॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मंत्री कन्यामवाप्नुयात् ॥ कन्यापि वरमाप्नोति मासद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन ससंपातं हुत्वा साष्ट शतं नरः ॥ आज्यं संपातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रियै ॥ ४ ॥ सा तद्वाज्यं निजं कांतं भोजयित्वा वशं नयेत् ॥ सुगंधकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति कामेशीपंचाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कामेशीपूजनयन्त्रम् ।

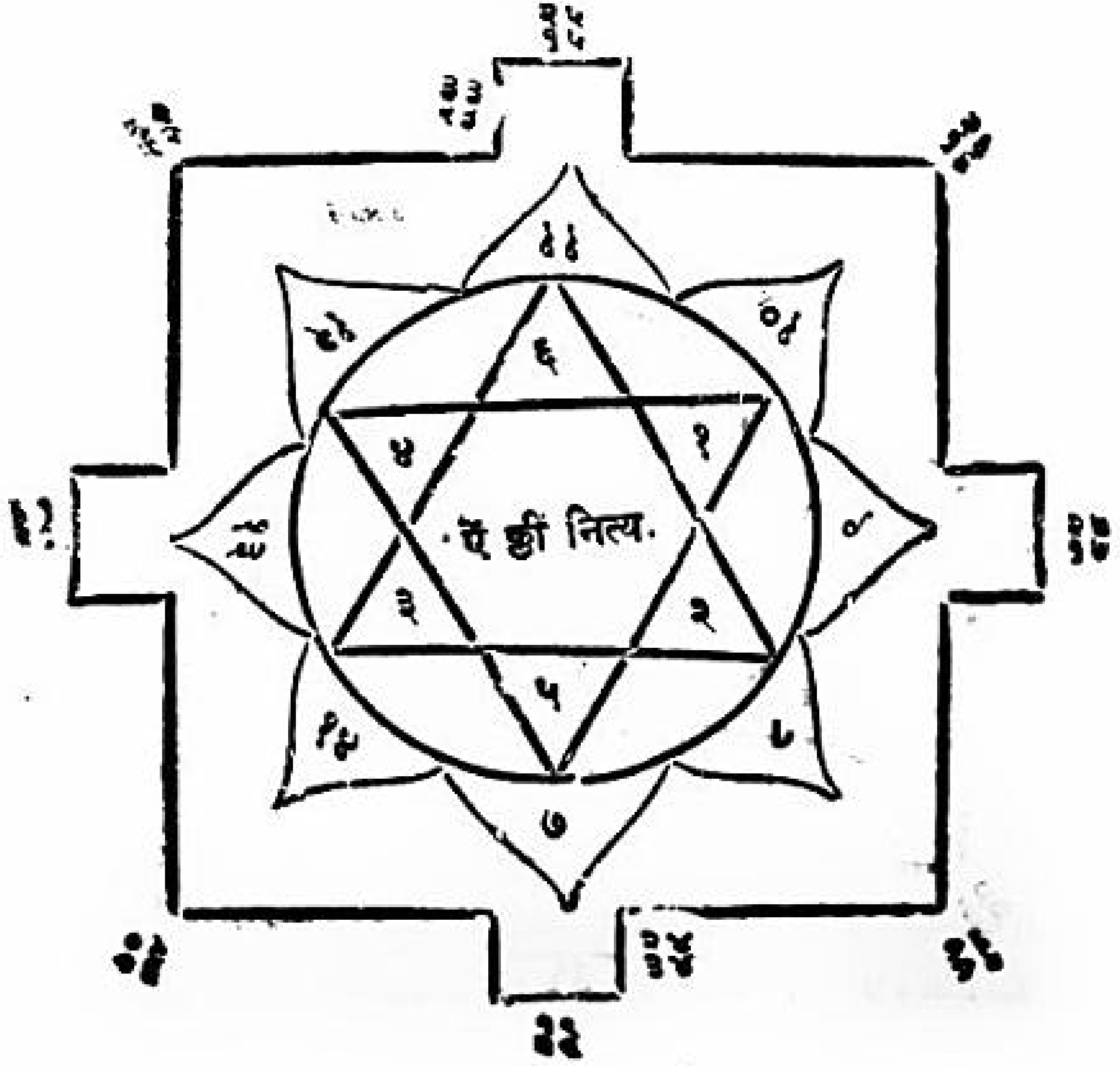


अथ नित्यामंत्रप्रयोगः शारदातिलके—ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्—अस्य मंत्रस्य सम्मोहन ऋषिः । निवृत्तिश्छंदः । नित्या देवता । रुयाकर्षणे विनियोगः ॥ ॐ सम्मोहनऋषये नमः शिरसि १ । निवृत्तिच्छं

१ ससंपातम्—आहुतिशेषस्य पात्रांतरे प्रक्षेपः संपातः—तद्युतं हुत्वा संपाताज्यं स्त्रियै दद्यात् ॥ किं भूतायै—विश्राणितश्रियै दत्तदक्षिणायै दक्षिणामादावादाय पश्चादाज्यं दद्यादित्यर्थः। अन्यथा फलाभावः ।

दसे नमः मुखे २ । नित्यादेवतायै नमः हृदि ३ । त्रानयोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ऐं हृदयाय नमः १ । ऐं शिरसे स्वाहा २ । ऐं शिखायै वषट् ३ । ऐं कवचाय हुं ४ । ऐं नेत्र त्रयाय वौषट् ५ । ऐं अस्त्राय फट् ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एव न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ अर्द्धेन्दुमौलिमरुणाममराभिवन्द्यामंभोज पाशसृणिपूर्णकपालहस्ताम् ॥ रक्तांगरागवसनाभरणां त्रिनेत्रां ध्यायेच्छिवस्य वनितां मदविह्वलांगीम् ॥१॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वां तपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वादिक्रमेण—ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु अग्नि

नित्यापूजनयन्त्रम् ।



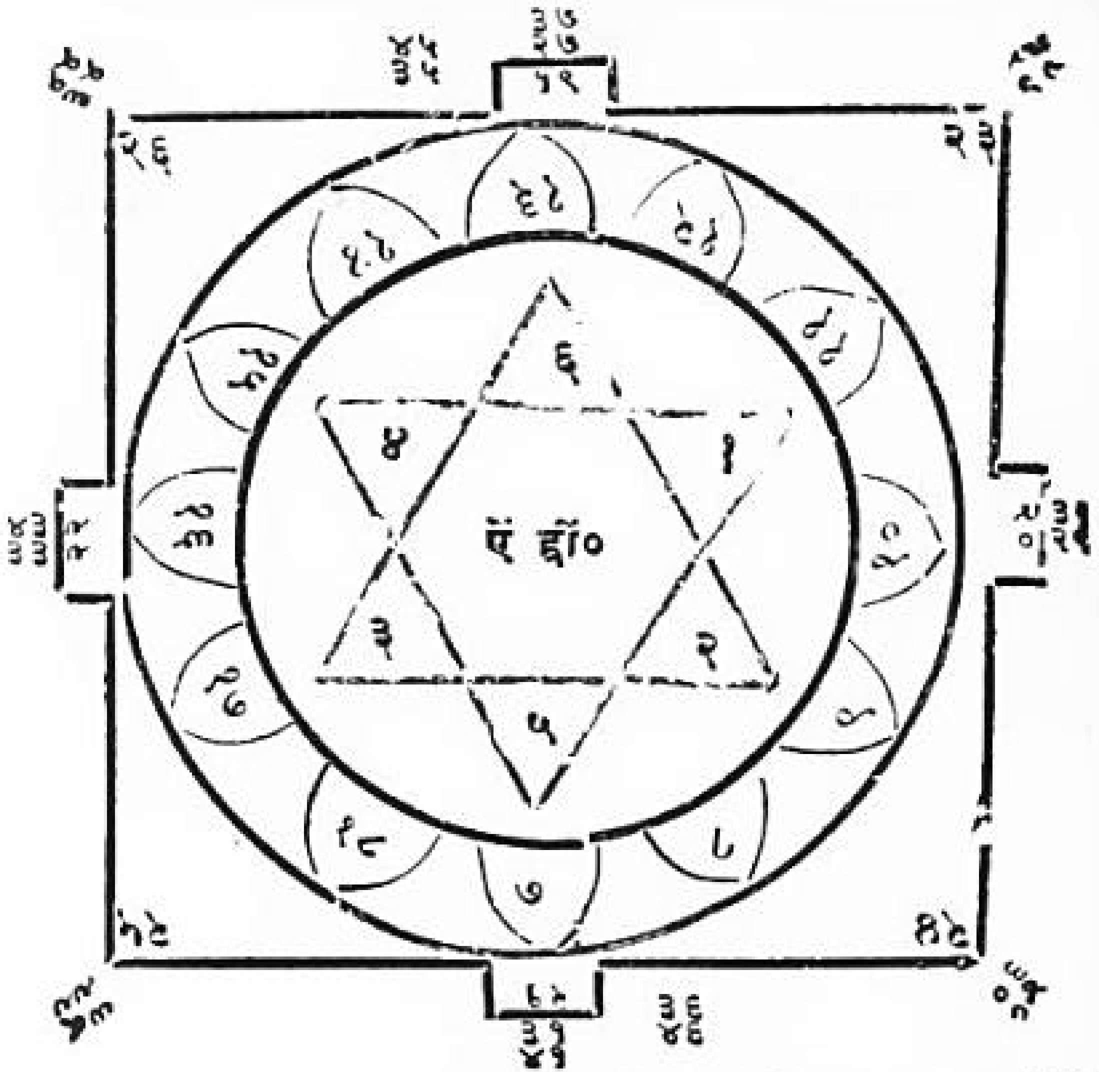
कोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा शिरःश्रीपा० २। वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ३। ईशानको० ॐ ऐं कवचायै हुं कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देवीपश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य–ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च–ॐ नित्यायै नमः। नित्याश्रीपा० १। ॐ निरंजनायै नमः। निरंजनाश्रीपा० २। ॐ क्लिन्नायै नमः। क्लिन्नाश्रीपा० ३। ॐ क्लेदिन्यै नमः। क्लेदिनीश्रीपा० ४। ॐ मदनातुरायै नमः। मदनातुराश्रीपा० ५। ॐ मदद्रवायै नमः। मदद्रवाश्रीपा० ६। ॐ द्राविण्यै नमः। द्राविणीश्रीपा० ७। ॐ आकर्षिण्यै नमः। आकर्षिणीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९। वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥३॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दंडाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पां पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं जपं कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः ॥ मध्वक्तैर्मधूककुसुमैरयुतहोमः ॥ तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री

१ मध्विति मधुघृतशर्कराणामुपलक्षणम् । २ महुवापुष्प ।

प्रयोगान् साधयेत् तथा च– चतुर्लक्षं जपित्वांते मधुराक्तैर्मधूकजैः ॥ कुसुमैरयुतं हुत्वा तोषयेद्गुरुमात्मनः ॥ १ ॥ सिद्धमंत्रं जपेन्मंत्री सहस्रं शयनस्थितः ॥ यां चिंतयेत्स्त्रियं रात्रौ सा समायाति तत्क्षणात् ॥ २ ॥ इति द्वादशाक्षरनित्यामंत्रप्रयोगः ॥

॥ अथ वज्रप्रस्तारिणीमंत्रप्रयोगः–ऐं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्--अस्य मंत्रस्य अंगिरा ऋषिः । त्रिष्टुप् छंदः । वज्रप्रस्तारिणी देवता । सर्वजनवशीकरणे विनियोगः ॥ ॐ अंगिरर्षये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छंदसे नमः मुखे २ । वज्रप्रस्तारिणीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुं ४ । ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्--ॐ रक्ताब्धौ रक्तपोते रविदलकमलाभ्यंतरे सन्निषण्णां रक्तांगीं रक्तमौलिस्फुरितशशिकलां स्मेरवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥ बीजापूरेषुपाशांकुशदमनधनुःसत्कपालानि हस्तैर्बिभ्राणामानतांगीं स्तनयुगलभरादंबिकामाश्रयामः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् ॥ ततः सर्वभद्रतोमंडले ' ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तथा च पूर्वादिक्रमेण--ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रमग्न्युत्तारणपूर्वकम् 'ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः–षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै

वज्रप्रस्तारिणीपूजनयन्त्रम्.



वषट् ३ । ऐशान्ये ॐ ऐं कवचायै हुं ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । देव्याः पश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति षडंगानि पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम्॥१॥ ततो द्वादशदले प्राच्यादिक्रमेण ॐ ह्लेखायै नमः । ह्लेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ एवं सर्वत्र ॥ ॐ क्लेदिन्यै नमः । क्लेदिनीश्रीपा० २ । ॐ क्लिन्नायै नमः । क्लिन्नाश्रीपा० ३ । ॐ क्षोभिण्यै नमः । क्षोभिणीश्रीपा० ४ । ॐ मदनातुरायै नमः । मदनातुराश्रीपा० ५ । ॐ निरंजनायै नमः । निरंजनाश्रीपा० ६ । ॐ रागवत्यै नमः । रागवतीश्रीपा० ७ । ॐ मदनावत्यै नमः । मदनावतीश्रीपा० ८ । ॐ मेखलायै नमः । मेखलाश्रीपा० ९ । ॐ द्राविण्यै नमः । द्राविणीश्रीपा० १० । ॐ वेगवत्यै नमः । ॐ वेगवतीश्रीपा० ११ । ॐ स्मरायै नमः । स्मराश्रीपा० १२ ॥ इति शक्तीः पूजयेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुराभ्यंतरे दिग्विदिक्षु च पूर्वे ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । दक्षिणे ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । पश्चिमे ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । उत्तरे ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा० ४ । अग्निकोणे ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा० ५ । निर्ऋतिकोणे ॐ इंद्राण्य नमः । इंद्राणीश्रीपा० ६ । वायुकोणे ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा० ७ । ईशानकोणे ॐ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपा० १ । ॐ रं

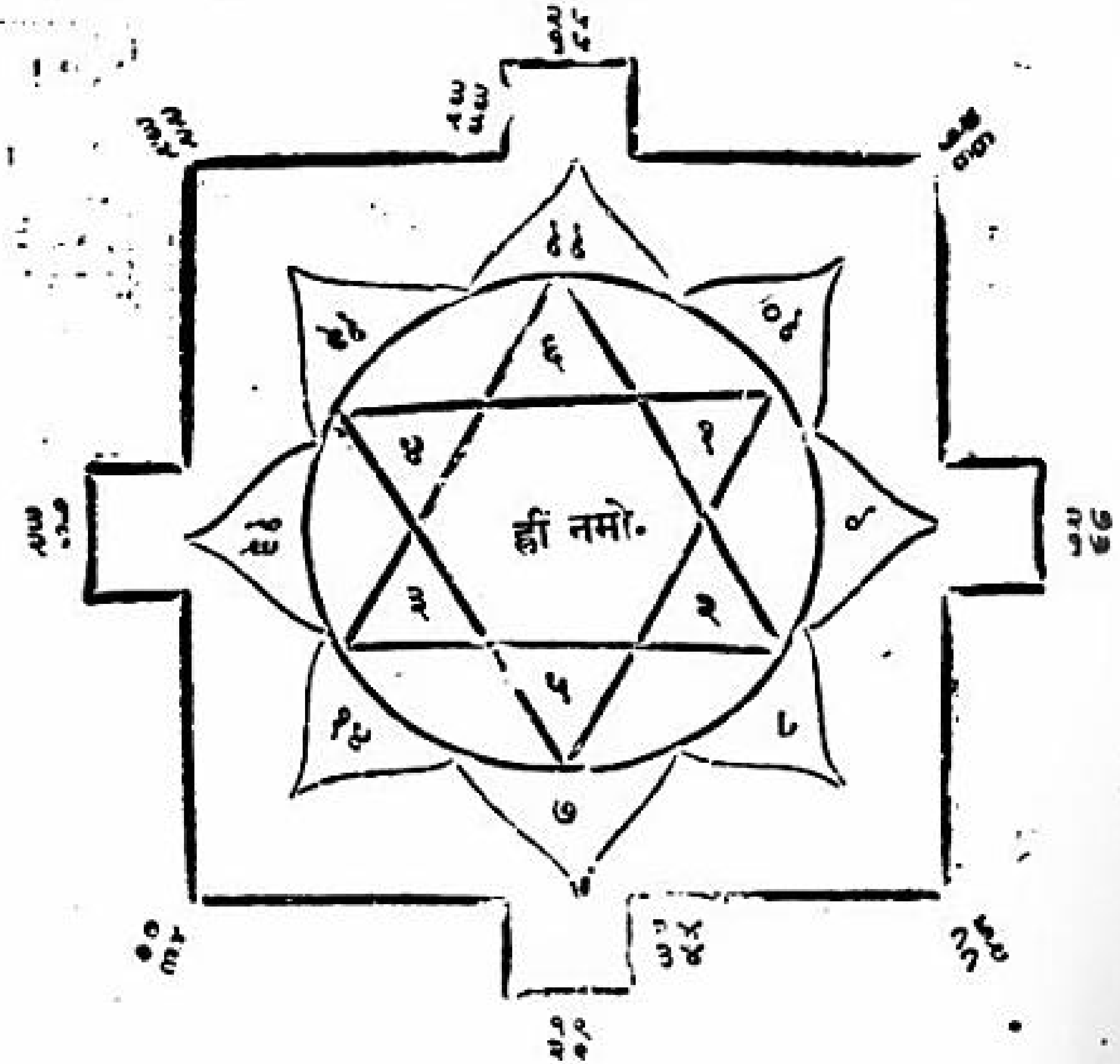
अग्नये नमः । अग्निश्रीपा० २ । ॐ मं यमाय नमः । यमश्रीपा० ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । निर्ऋतिश्रीपा० ४ । ॐ वं वरुणाय नमः । वरुणश्रीपा० ५ । ॐ यं वायवे नमः । वायुश्रीपा० ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः । कुबेरश्रीपा० ७ । ॐ हं ईशानाय नमः । ईशानश्रीपा० ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्मश्रीपा० ९ । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्तश्रीपा० १० ॥ इति दश दिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये ॐ वं वज्राय नमः १ । ॐ शं शक्तये नमः २ । ॐ दं दंडाय नमः ३ । ॐ खं खड्गाय नमः ४ । ॐ पां पाशाय नमः ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः ६ । ॐ गं गदायै नमः ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ । ॐ पं पद्माय नमः ९ । ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य जप कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः । तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च–मंत्री मंत्रं जपेल्लक्षं जपांते जुहुयात्ततः ॥ अयुतं राजवृक्षोत्थैर्घृतसिक्तैः समिद्वरैः ॥ १ ॥ भजेन्मंत्री मनुं नित्यमर्चनादिभिरादरात् ॥ दारिद्र्यरोगनिर्मुक्तः स जीवेच्छरदां शतम् ॥ २ ॥ अस्मिन्मंत्रे रतो मंत्री वशयेदखिलं जगत् ॥ नित्यं मंत्रैर्बुधः कुर्यान्मुखलालनमन्वहम् ॥ ३ ॥ अंजनं तिलकं पुष्पं धारयेन्मांत्रितं सुधीः ॥ तांबूलं मंत्रितं भक्षेन्मंत्री स स्याज्जगत्प्रियः ॥ ४ ॥ इति वज्रप्रस्तारिणीद्वादशाक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ त्रैलोक्यमोहनगौरीमंत्रप्रयोगः ॥ मंत्रमहोदधौ–त्रैलोक्यमोहने गौरीमंत्रः संकीर्त्यतेऽधुना ॥ मंत्रो यथा–ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जय विजये गौरि गांधारि त्रिभुवनवशंकरि सर्वलोकवशंकरि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा ॥ इत्येकषष्ट्यर्णो मंत्रः ॥ अस्य विधानम्–अस्य मंत्रस्य अज ऋषिः । निचृद्गायत्री छंदः । गौरी त्रैलोक्यमोहिनी देवता । ह्रीं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । ममाखिलाप्तये जपे विनियोगः ॥ ॐ अजर्षये नमः शिरसि १ । निचृद्गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २ । गौरीत्रैलोक्यमोहिनीदेवतायै नमः हृदि ३ । ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४ । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ह्रीं नमो ब्रह्मश्री

राजिते राजपजिते अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं जय विजये गौरि गांधारि तर्जनीभ्यां नमः २ । ह्रीं त्रिभुवनवशंकरि मध्यमाभ्यां नमः ३ । ह्रीं सर्वलोकवशंकरि अनामिकाभ्यां नमः ४ । ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ह्रीं सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा मूलेन व्यापकं कुर्य्यात् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ गीर्वाणसंघार्चितपादपंकजारुणप्रभा बालशशांकशेखरा ॥ रक्तांबरालेपनपुष्पयुङ्मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवास्तु वः ॥ १ ॥ इति ध्यायेत्[1] ॥ ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य 'ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः' इति पीठदेवताः संपज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ॥ तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु—ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य 'ॐ ह्रीं गौरींत्रैलोक्यमोहिनीपद्मासनाय नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्य्यात्॥ पुष्पांजलिमादाय—संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ॥ अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ॥ तद्यथा—षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च—ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ इति सर्वत्र ॥ ह्रीं जय विजये गौरि गांधारि शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । ह्रीं त्रिभुवनवशंकरि शिखायै वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ह्रीं सर्वलोकवशंकरि कवचाय हुं । कवच

१ मतांतरे—अविकलशशिराजन्मौलिराबद्धपाशांकुशरुचिरकराब्जा बंधुजीवारुणांगी ॥ अमरनिकरवंद्या त्रीक्षणा शोणलेपांशुककुसुमयुता संपदे पार्वती वः ॥ इति ध्यायेत् ॥

श्रीपा० ४ । ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ह्रीं सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य—ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पज्यपूजकयोरंतरालं प्राची । तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः । वैष्णवीश्रीपा०४ । ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपा०५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडाश्रीपा०७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ देवताः संपज्य पुष्पांजाल दद्यात् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । घृतमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः ॥

त्रैलोक्यमोहनगौरीपूजनयन्त्रम् ।



तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्य्यात् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति ॥ सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथाच—

अयुतं प्रजपेन्मंत्रं सहस्त्रं घृतसंयुतैः ॥ पायसैर्जुहुयात्पीठे प्रागुक्ते गिरिजां यजेत् ॥ इत्थमाराधिता देवी प्रयच्छेत्सुखसंपदः ॥ १ ॥